हिंदी कोर

कक्षा XI

2025-26

विद्यार्थी सहायक सामग्री

Student Support Material

केन्द्रीय विद्यालय संगठन~Kendriya Vidyalaya Sangathan

संदेश

विद्यालयी शिक्षा में शैक्षिक उत्कृष्टता प्राप्त करना एवं नवाचार द्वारा उच्च–नवीन मानक स्थापित करना केन्द्रीय विद्यालय संगठन की नियमित कार्य प्रणाली का अविभाज्य अंग है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं पी.एम. श्री विद्यालयों के निर्देशों का पालन करते हुए गतिविधि आधारित पठन-पाठन, अनुभवजन्य शिक्षण एवं कौशल विकास को समाहित कर, अपने विद्यालयों को हमने ज्ञान एवं खोज की अद्‌भुत प्रयोगशाला बना दिया है। माध्यमिक स्तर तक पहुँचकर हमारे विद्यार्थी सैद्धांतिक समझ के साथ-साथ, रचनात्मक-विश्लेषणात्मक एवं आलोचनात्मक चिंतन भी विकसित कर लेते हैं। यही कारण है कि वह बोर्ड कक्षाओं के दौरान विभिन्न प्रकार के मूल्यांकनों के लिए सहजता से तैयार रहते हैं। उनकी इस यात्रा में हमारा सतत योगदान एवं सहयोग आवश्यक है। केन्द्रीय विद्यालय संगठन के पांचों आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान द्वारा संकलित यह विद्यार्थी सहायक-सामग्री इसी दिशा में एक आवश्यक कदम है। यह सहायक-सामाग्री कक्षा 9 से 12 के विद्यार्थियों के लिए सभी महत्वपूर्ण विषयों पर तैयार की गयी है। केन्द्रीय विद्यालय संगठन की विद्यार्थी सहायक-सामग्री अपनी गुणवत्ता एवं परीक्षा संबंधी सामग्री संकलन की विशेषज्ञता के लिए जानी जाती है और शिक्षा से जुड़े विभिन्न मंचों पर इसकी सराहना होती रही है। मुझे विश्वास है कि यह सहायक सामग्री विद्यार्थियों की सहयोगी बनकर निरंतर मार्गदर्शन करते हुए उन्हें सफलता के लक्ष्य तक पहुँचाएगी।

शुभाकांक्षा सहित।

निधि पांडे
आयुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन

PATRON

Smt. Nidhi Pandey, Commissioner, KVS

CO-PATRON

Dr. P. Devakumar, Additional Commissioner (Acad.), KVS (HQ)

CO-ORDINATOR

Ms. Chandana Mandal, Joint Commissioner (Training), KVS (HQ)

COVER DESION

KVS Publication Section

EDITORS:

1. Mr. B L Morodia, Director, ZIET Gwalior
2. Ms. Menaxi Jain, Director, ZIET Mysuru
3. Ms. Shaheeda Parveen, Director, ZIET Mumbai
4. Ms. Preeti Saxena, In-charge Director, ZIET Chandigarh
5. Mr. Birbal Dhinwa, In-charge Director, ZIET Bhubaneswar

CONTENT CREATORS:

क्रम	शिक्षक का नाम	विद्यालय	विषयवस्तु
1.	सुश्री सुचित्रा सिंह	केन्द्रीय विद्यालय क्र. 2 जम्मू	अपठित गद्यांश और पद्यांश
2.	श्री रितेश कुमार	केन्द्रीय विद्यालय नगरोटा	कार्यालयी हिन्दी और अभिव्यक्ति माध्यम
3.	श्री अमरदीप सिंह	केन्द्रीय विद्यालय कठुआ	गद्य खंड
4.	श्री तरुण कुमार	केन्द्रीय विद्यालय सुंजवान	काव्य खंड
5.	श्री मोजी राम मीणा	केन्द्रीय विद्यालय क्र. 1 उधमपुर	वितान

अनुक्रमणिका

क्रम	विषय	पृष्ट संख्या
1	प्रस्तावना -छात्रोपयोगी सहायक सामग्री की उपयोगिता	4
2	पाठ्यक्रम विभाजन	5-6
3	अपठित गद्यांश	7-12
4	अपठित काव्यांश	13-17
5	अभिव्यक्ति और माध्यम (पाठ संख्या 1,2,9,10,14,15,तथा 16 पर आधारित	18-35
6	पठित काव्यांश पर आधारित 05 बहुविकल्पीय प्रश्न	36-44
7	पठित काव्यांश पर आधारित प्रश्नोत्तर	45-49
8	पठित गद्यांश पर आधारित 05 बहुविकल्पीय प्रश्न	50-53
9	पठित गद्यांश आधारित प्रश्नोत्तर	54-64
10	वितान के पाठों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर	64-68
11	आदर्श प्रश्न-पत्र	69-74
12	आदर्श प्रश्न-पत्र की अंक-योजना	75-84

छात्रोपयोगी सहायक सामग्री की उपयोगिता

किसी भी अध्ययन सहायक सामग्री की सफलता का पैमाना इस बात को माना जा सकता है कि उसमें विद्यार्थियों की शंकाओं, जिज्ञासाओं के शमन और अध्ययन करने की इच्छा को प्रेरित करने की कितनी शक्ति अंतर्निहित है। प्रस्तुत सामग्री का निर्माण करते हुए इस बात का पूरा-पूरा ध्यान रखा गया है कि पाठ्यक्रम के साथ-साथ परीक्षा के प्रश्न-पत्र के मापदंड के अनुसार विद्यार्थियों का मार्गदर्शन हो सके।

ग्यारहवीं के छात्रों को हिन्दी आधार पाठ्यक्रम से साक्षात्कार करवाते हुए उन्हें परीक्षा के प्रति निश्चिंत करने और परीक्षा में निश्चित तौर पर मनोवांछित फल प्राप्त करने के उद्देश्य से हौंसला प्रदान करना है। इसे परीक्षा प्रारूप के अनुसार बच्चों को पाठ्यवस्तु का अभ्यास करवाने के साथ-साथ उनके आत्मविश्वास को मजबूत बनाने के उद्देश्य से बनाया गया है। नए और अप्रत्याशित विषयों पर रचनात्मक लेखन, पत्र लेखन, अभिव्यक्ति एवं माध्यम एवं पाठ्य पुस्तकों के पाठों का सारांश, केंद्रीय भाव महत्त्वपूर्ण प्रश्नों के अतिरिक्त बोध और अधिगम पर आधारित सामग्री को छात्रोपयोगी बनाया गया है। इस सहायक सामग्री में विद्यार्थियों की सुविधा के लिए अभ्यास हेतु आदर्श प्रश्न पत्रों को भी अभ्यास हेतु विशेष स्थान दिया गया है।

अंत में आप सभी को यह सहायक सामग्री सौंपते हुए आशा की जाती है कि आप सभी इस सामग्री का पूर्णतः लाभ उठाएँगे तथा प्रगति पथ के पथिक बन कर अपने माता-पिता, गुरुजनों और केंद्रीय विद्यालय संगठन को गौरवान्वित करेंगे।
शुभकामनाओं सहित .....

श्री अनिल कुमार
सहायक आयुक्त
केन्द्रीय विद्यालय संगठन, जम्मू संभाग

हिंदी (आधार)
विषय कोड – 302
कक्षा 11वीं (2025 -26)
परीक्षा हेतु पाठ्यक्रम विनिर्देशन

- **प्रश्न –पत्र तीन खण्डों – खंड- क, ख और ग में होगा।**
- **खंड- क में अपठित बोध पर आधारित प्रश्न पूछे जाएँगे I सभी प्रश्नों के उत्तर देने होंगे।**
- **खंड- ख में अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्यपुस्तक के आधार पर प्रश्न पूछे जाएँगे। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए जाएँगे ।**
- **खंड- ग में आरोह भाग – 1 एवं वितान भाग – 1 पाठ्यपुस्तकों के आधार पर प्रश्न पूछे जाएँगे। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए जाएँगे ।**

भारांक–80 **निर्धारित समय – 03 घंटे**

वार्षिक परीक्षा हेतु भार विभाजन

	खंड-क (अपठित बोध)	18 अंक
1	01 अपठित गद्यांश (लगभग 250 शब्दों का) पर आधारित बोध, चिंतन, विश्लेषण पर बहुविकल्पीय प्रश्न, अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न, लघूत्तरात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे I (बहुविकल्पीय प्रश्न 01 अंक x 03 प्रश्न = 03 अंक, अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न 01 अंक x 01 प्रश्न = 1 अंक, लघूत्तरात्मक प्रश्न 02 अंक x 3 प्रश्न = 6 अंक)	10 अंक
2	01 अपठित पद्यांश (लगभग 100 शब्दों का) पर आधारित बोध, सराहना, सौंदर्य, चिंतन, विश्लेषण आदि पर बहुविकल्पीय प्रश्न, अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न, लघूत्तरात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे I (बहुविकल्पीय प्रश्न 01 अंक x 03 प्रश्न = 03 अंक, अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न 01 अंक x 01 प्रश्न = 01 अंक, लघूत्तरात्मक प्रश्न 02 अंक x 02 प्रश्न = 04 अंक)	08 अंक
	खंड- ख (अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्यपुस्तक के आधार पर) पाठ संख्या 1, 2, 9, 10, 14, 15 तथा 16 पर आधारित	22 अंक
3	दिए गए 03 अप्रत्याशित विषयों में से किसी 01 विषय पर **आधारित** लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेखन (06 अंक x 01 प्रश्न)	06 अंक
4	औपचारिक पत्र लेखन। (विकल्प सहित) (05 अंक x 01 प्रश्न)	05 अंक
5	**पाठ संख्या 1, 2, 9, 10, 14, 15 तथा 16 पर आधारित** 04 प्रश्न (विकल्प सहित) (02 अंक x 04 प्रश्न= 8 अंक) (लगभग 40 शब्दों में), (03 अंक x 01 प्रश्न = 3 अंक) (लगभग 60 शब्दों में)	11 अंक

	खंड- ग (आरोह भाग – 1 एवं वितान भाग-1 पाठ्य पुस्तकों के आधार पर)	40 अंक
6	पठित काव्यांश पर आधारित 05 बहुविकल्पी प्रश्न (01 अंक x 05 प्रश्न)	05 अंक
7	काव्य खंड पर आधारित 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर (लगभग 60 शब्दों में) (03 अंक x 02 प्रश्न)	06 अंक
8	काव्य खंड पर आधारित 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर (लगभग 40 शब्दों में) (02 अंक x 02 प्रश्न)	04 अंक
9	पठित गद्यांश पर आधारित 05 बहुविकल्पी प्रश्न (01 अंक x 05 प्रश्न)	05 अंक
10	गद्य खंड पर आधारित 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर (लगभग 60 शब्दों में) (03 अंक x 02 प्रश्न)	06 अंक
11	गद्य खंड पर आधारित 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर (लगभग 40 शब्दों में) (02 अंक x 02 प्रश्न)	04 अंक
12	वितान के पाठों पर आधारित 03 में से 02 प्रश्नों के उत्तर (लगभग 60 शब्दों में) (05 अंक x 02 प्रश्न)	10 अंक
13	**(अ) श्रवण तथा वाचन** **(ब) परियोजना कार्य**	10+10 = 20 अंक
कुल अंक		**100** अंक

निर्धारित पाठ्यपुस्तकें :

1. **आरोह, भाग–1**, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित
2. **वितान भाग–1**, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित
3. **अभिव्यक्ति और माध्यम**, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित

नोट – पाठ्यक्रम के निम्नलिखित पाठ हटा दिए गए हैं I

आरोह भाग – 1	काव्य खंड	• कबीर (पद 2) – संतो देखत जग बौराना • मीरा (पद 2) – पग घुंगरू बांधि मीरा नाची • रामनरेश त्रिपाठी – पथिक (पूरा पाठ) • सुमित्रानंदन पंत – वे आँखें (पूरा पाठ)
	गद्य खंड	• कृष्णनाथ – स्पीति में बारिश (पूरा पाठ) • सैयद हैदर रज़ा – आत्मा का ताप (पूरा पाठ)

आदर्श अपठित गद्यांश अभ्यास

1. निम्नलिखित गद्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए - (10 अंक)

सुव्यवस्थित समाज का अनुसरण करना अनुशासन कहलाता है। व्यक्ति के जीवन में अनुशासन का बहुत महत्त्व है। अनुशासन के बिना मनुष्य अपने चरित्र का निर्माण नहीं कर सकता तथा चरित्रहीन व्यक्ति सभ्य- समाज का निर्माण नहीं कर सकता। अपने व्यक्तित्व के विकास के लिए भी मनुष्य को अनुशासनबद्ध होना अति अनिवार्य है।र विद्यार्थी जीवन मनुष्य के भावी जीवन की आधारशिला होता है, अतः विद्यार्थियों के लिए अनुशासन में रह कर जीवन यापन करना अत्यंत आवश्यक है।

वर्तमान समाज में सर्वत्र अव्यवस्था का साम्राज्य फैला हुआ है। विद्यार्थी, राजनेता, सरकारी कर्मचारी, श्रमिक आदि सभी स्वयं को स्वतंत्र भारत का नागरिक मानकर मनमानी कर रहे हैं। शासन में व्याप्त अस्थिरता समाज के अनुशासन को भी प्रभावित कर रही है। यदि किसी को अनुशासन में रहने के लिए कहा जाए तो वह 'शासन का अनुसरण' करने की बात कहकर अपनी अनुशासनहीनता पर पर्दा डालने का प्रयास करता है। वास्तव में अनुशासन शब्द का अर्थ अपने पर नियंत्रण ही है। विद्यार्थी जीवन में अबोधता के कारण उन्हे भले बुरे की पहचान नहीं होती। ऐसी स्थिति में थोड़ी सी असावधानी उन्हे अनुशासनहीन बना देती है। आजकल विद्यार्थियों की पढ़ाई में रूचि नहीं है। वे आधुनिक शिक्षा पद्धति को बेकारों की सेना तैयार करने वाली नीति मान कर इसके प्रति उदासीन हो गए है तथा फैशन, सुख-सुविधापूर्ण जीवन जीने के लिए गलत रास्तों पर चलने लगे हैं। वर्तमान जीवन में व्याप्त राजनीतिक दलबंदी भी विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता को प्रोत्साहित करती है। राजनीतिक नेता अपने स्वार्थ के लिए विद्यार्थियों को भड़का देते हैं तथा विद्यार्थी वर्ग भले–बुरे की चिंता किए बिना तोड़-फोड़ में लग जाता है।
आधुनिक युग में अति व्यस्त जीवन पद्धति के कारण माता पिता अपनी संतान का पूरा ध्यान नहीं रख पाते। चार-पाँच घंटे कॉलेज में रहने वाला विद्यार्थी उन्नीस-बीस घंटे तो अपने परिवारजनों के साथ ही रहता है। पारिवारिक परिवेश का उस पर बहुत प्रभाव पड़ता है। यदि उसके माता-पिता अनुशासित जीवन नहीं जीते हैं तो उसे भी उच्छृंखल जीवन जीना पड़ता है। वे माता पिता जो अपने बच्चों पर ध्यान नहीं दे पाते उनके बच्चों में भी समय की पाबंदी और मूल्यों को लेकर संदेह बना रहता है तथा बच्चे भी शिक्षा की तरफ ध्यान नहीं दे पाते। विद्यार्थियों में अनुशासन बनाए रखने के लिए विशेष योजना चलानी चाहिए ताकि उनमें नैतिक व चारित्रिक उत्थान को बढ़ाया जा सके। इस प्रकार के प्रोत्साहनों से उन्हें अपने कर्त्तव्य का बोध कराया जा सकता है। अतः हम कह सकते है कि अनुशासन से ही विद्यार्थियों के साथ साथ राष्ट्र को ऊँचा उठाया जा सकता है। इससे उसका स्वभाव व सद्वृत्तियों को ऊँचा उठाया जा सकता है। ऐसा विद्यार्थी समाज और राष्ट्र का नाम करता है। उसमें सद्गुण और कर्मठता के गुण आते हैं। परिश्रम और कर्त्तव्य के द्वारा वह देश सेवा करता है।

बहुविकल्पीय य प्रश्न (1 X 3 = 3)

1- गद्यांश का उचित शीर्षक है ?

क सुव्यवस्थित समाज का अनुकरण
ख शासन का अनुसरण
ग जीवन में अनुशासन का महत्त्व
घ जीवन में अनुशासन

2- अनुशासन से क्या अभिप्राय है?

क स्वयं पर नियंत्रण
ख दूसरों पर नियंत्रण
ग सभी पर नियंत्रण
घ अपने से छोटों पर नियंत्रण

3-मानव जीवन में अनुशासन का क्या महत्त्व है?

क इससे जीवन में समृद्धि आती है
ख जीवन में निखार आता है
ग जीवन सुचारु रूप से चलता है
घ जीवन सुंदर बनाता है

अति लघु उत्तरीय प्रश्न (1 अंक)

4- मानव जीवन के विकास हेतु क्या आवश्यक है?

<u>लघु उत्तरीय प्रश्न</u>) **2 X 3=6**

5-वर्तमान समाज में किस प्रकार की स्थिति हैं?

6-आजकल विद्यार्थी पढ़ाई के प्रति उदासीन क्यों है?

7- आजकल माता-पिता अपनी संतान के प्रति ध्यान क्यों नहीं दे पा रहे हैं?

संक्षिप्त उत्तर संकेत

1- जीवन में अनुशासन का महत्त्व

2- स्वयं पर नियंत्रण

3- जीवन में निखार आता है

4- मनुष्य को अनुशासनबद्ध होना अति अनिवार्य है।

5- सर्वत्र अव्यवस्था का साम्राज्य फैला हुआ है।

6- बच्चों में समय की पाबंदी और मूल्यों को लेकर संदेह बना रहता है

7-अति व्यस्त जीवन पद्धति के कारण

2- निम्नलिखित गद्यांश का ध्यानपूर्वक अवलोकन कीजिए तथा प्रश्नों के सही उत्तर चुनिए:- (10 अंक)

हमने अपने को राष्ट्रों में बाँट रखा है और प्रत्येक राष्ट्र अपने को स्वतंत्र संप्रभु राज्य के रूप में देखना चाहता है। दो मनुष्य एक ही विचार रखते हैं, एक ही संस्कृति के उपासक हैं, एक को दूसरे से कोई द्वेष नहीं है, फिर भी विभिन्न राष्ट्रों के सदस्य होने के कारण उनके हित टकराते हैं, एक दूसरे से लड़ना पड़ता है, ईगो के कारण दूसरे के बाल बच्चों को भूखा मारना पड़ता है।

व्यक्ति को दास बनाना बुरा समझा जाता है, लेकिन संपूर्ण राष्ट्र को दास बनाना, संपूर्ण राष्ट्र के जीवन को अपनी इच्छा के अनुसार चलाना, समूचे राष्ट्र का शोषण करना बुरा नहीं है। बलात दूसरे के घर का प्रबंध नहीं किया जा सकता, परंतु बलात दूसरे राष्ट्र पर शासन किया जा सकता है। राष्ट्रों और राज्यों के परस्पर व्यवहार में सत्य, अहिंसा तथा सहिष्णुता का कोई स्थान नहीं है। जो मनुष्य दूसरे व्यक्ति की एक पाई दबा लेना बुरा समझता है, वह पुरुष किसी राष्ट्र के पद से दूसरे राष्ट्र का गला घोंट देना निंद्य (निंदनीय) नहीं मानता।

यह बात श्रेयस्कर नहीं। जिस प्रकार कुटुंब में व्यक्ति रहते हैं, समाज तथा राष्ट्र इसी प्रकार रहें। कुछ बातों में अपना अलग- अलग जीवन भी व्यतीत करें, परंतु सारे मानव समाज की एकता सतत् सामने रहनी चाहिए। युद्ध और कलह समाप्त होना चाहिए। जो राष्ट्र दूसरों की ओर कुदृष्टि से देखें वह राष्ट्र समुदाय से बहिष्कृत और दंडित किया जाना चाहिए। न्याय और सत्य सामूहिक आचरण के आधार पर स्थापित किए जा सकते हैं। मानव संस्कृति अविभाज्य है; कवि, कलाकार, योगी, वैज्ञानिक आदि चाहे वह किसी देश के निवासी हो, मनुष्य समाजमात्र की विभूति है-।

बहुविकल्पीय य प्रश्न(3 X 1 = 3)

1-"कुटुंब में व्यक्ति रहते हैं, समाज तथा राष्ट्र में इसी प्रकार रहें। " रेखांकित शब्द का बहुवचन क्या होगा?

क कुटुंबियों

ख कुटुम्बनो

निम्नलिखित विकल्पों में से कौन-सा सही है /हैं ?

अ क गलत है ख सही है।

ब क और ख दोनों गलत हैं।

स क और ख दोनों सही हैं।

2- दूसरे के राष्ट्र का गला घोंट देना कब निंदनीय नहीं है?

(अ) जब आप किसी राष्ट्र के तानाशाह हों।

(ब) जब आप किसी राष्ट्र के पद पर हों।

(स) जब आप किसी राष्ट्र के सेनापति हों।

(द) जब आप किसी राष्ट्र के नागरिक हों।

3-मानव संस्कृति एक और अविभाज्य है योगी, कवि, कलाकार, विज्ञानी, चाहे किसी भी देश के निवासी हों, समाज मात्र की <u>विभूति</u> है। रेखांकित शब्द का तात्पर्य है?

(अ) संपत्ति के तौर पर।

(ब) बहुसंख्यक के तौर पर।

(स) ऐश्वर्य के तौर पर।

(द) विद्वान के तौर पर।

<u>अति लघु उत्तरीय प्रश्न</u>) 1अंक

4- अविभाज्य शब्द का क्या अर्थ हैं?

<u>लघु उत्तरीय प्रश्न</u>) 2 x 3 = 6 अंक

5-युद्ध और कलह क्यों समाप्त होना चाहिए?

6-सत्य को किस आधार पर स्थापित किया जा सकता है?

-7किसी व्यक्ति में 'सहिष्णुता' क्यों होनी चाहिए?

संक्षिप्त उत्तर संकेत –

1- ब क और ख दोनों गलत हैं

2- ब जब आप किसी राष्ट्र के पद पर हों

3- अ संपत्ति

4 - जिसे बाँटा न जा सके

5- सारे मानव समाज की एकता सतत् बनी रहे

6- सामूहिक आचरण के आधार

7- मानव समाज की एकता बनी रहे

3- निम्नलिखित गद्यांश का ध्यानपूर्वक अवलोकन कर प्रश्नों के उत्तर में सही विकल्प चुनिए - (10 अंक)

परिश्रम कल्पवृक्ष है। जीवन की कोई भी अभिलाषा परिश्रम रूपी कल्पवृक्ष से पूर्ण हो सकती है। परिश्रम जीवन का आधार है, उज्ज्वल भविष्य का जनक और सफलता की कुंजी है। सृष्टि के आदि से अद्यतन काल तक विकसित सभ्यता और सर्वत्र उत्पत्ति परिश्रम का परिणाम है। आज से लगभग पचास साल पहले कौन कल्पना कर सकता था कि मनुष्य एक दिन चाँद पर कदम रखेगा या अंतरिक्ष में विचरण करेगा पर निरंतर श्रम की बदौलत मनुष्य ने उन कल्पनाओं एवं संभावनाओं को साकार कर दिखाया है। मात्र हाथ पर हाथ धरकर बैठे रहने से कदापि संभव नहीं होता। किसी देश, राष्ट्र अथवा जाति को उस देश के भौतिक संसाधन तब तक समृद्ध नहीं बना सकते जब तक कि वहाँ के निवासी उन संसाधनों का दोहन करने के लिए अथक परिश्रम नहीं करते। किसी भूभाग की मिट्टी कितनी भी उपजाऊ क्यों न हो, जब तक विधिवत परिश्रमपूर्वक उसमें जुताई, बुआई, सिंचाई, निराई- गुड़ाई नहीं होगी, अच्छी फसल प्राप्त नहीं हो सकती। किसी किसान को कृषि संबंधी अत्याधुनिक कितनी ही सुविधाएं उपलब्ध करा दीजिए, यदि उसके उपयोग में लाने के लिए समुचित श्रम नहीं होगा, उत्पादन क्षमता में वृद्धि संभव नहीं है। परिश्रम से रेगिस्तान भी अन्न उगलने लगते हैं हमारे देश की स्वतंत्रता के पश्चात हमारी प्रगति की द्रुतगति भी हमारे श्रम का ही फल है। भाखड़ा नांगल का विशाल बाँध हो या श्री हरिकोटा के रॉकेट प्रक्षेपण केंद्र, हरित क्रांति की सफलता हो या कोविड-19 की रोकथाम के लिए टीका तैयार करना, प्रत्येक सफलता हमारे श्रम का परिणाम है तथा प्रमाण भी है।

जीवन में सुख की अभिलाषा सभी को रहती है। बिना श्रम किए भौतिक साधनों को जुटाकर जो सुख प्राप्त करने के फेर में है, वह अंधकार में हैं। उसे वास्तविक और स्थायी शांति नहीं मिलती। गांधीजी तो कहते थे कि जो बिना श्रम किए भोजन ग्रहण करता है, वह चोरी का अन्न खाता है। ऐसी सफलता मन को शांति देने के बजाए उसे व्यथित करेगी। परिश्रम से दूर रहकर और सुखमय जीवन व्यतीत करने वाले विद्यार्थी को ज्ञान कैसे प्राप्त होगा? हवाई किले तो सहज ही बन जाते हैं, लेकिन वे हवा के हल्के झोंके से ढह जाते हैं । मन में मधुर कल्पनाओं के संजोने मात्र से किसी कार्य की सिद्धि नहीं होती। कार्य सिद्धि के लिए उद्यम और सतत् उद्यम आवश्यक है।

तुलसीदास ने सत्य ही कहा है-"सकल पदारथ है जग माहीं। करमहीन जग पावत नाहीं । "

अर्थात् इस दुनिया में सारी चीजें हासिल की जा सकती हैं लेकिन वे कर्महीन व्यक्ति को कभी नहीं मिलती हैं। अगर आप भविष्य में सफलता की फसल काटना चाहते हैं, तो आपको उसके लिए बीज आज ही बोने होंगे। आज बीज नहीं बोएँगे, तो भविष्य में फ़सल काटने की उम्मीद कैसे कर सकते हैं? पूरा संसार कर्म और फल के सिद्धांत पर चलता है इसलिए कर्म की तरफ आगे बढ़ना होगा। यदि सही मायनों में सफल होना चाहते हैं तो कर्म में जुट जाएँ और तब तक जुटे रहें जब तक कि सफल न हो जाएँ । अपना एक - एक मिनट अपने लक्ष्य को समर्पित कर दें-। काम में जुटने से आपको हर वस्तु मिलेगी जो आप पाना चाहते हैं सम्मान, धन, सुख या सफलता जो भी आप चाहते हों।

<u>बहुविकल्पीय य प्रश्न</u> 1)x 3= 3अंक

1- समुचित' शब्द का अर्थ है-

(क) उपर्युक्त (ख) उपयुक्त (ग) उपभोक्ता (घ) उपक्रम

2-गद्यांश में अच्छी फ़सल प्राप्त करने के लिए कहे गए कथन से स्पष्ट होता है कि-

(क) भौतिक संसाधनों का दोहन करना आवश्यक है

(ख) संसाधनों की तुलना में परिश्रम की भूमिका अधिक है

(ग) ज्ञान प्राप्त करने के लिए परिश्रम आवश्यक है

(घ) कष्ट करने से ही कृष्ण की प्राप्ति होती है

3-भारत के परिश्रम के प्रमाण क्या - क्या बताए गए हैं-?

(क) बाँध, कोविड-19 की रोकथाम का टीका, प्रक्षेपण केंद्र

(ख) कोविड-19 की रोकथाम का टीका, प्रक्षेपण केंद्र

(ग) कोविड-19 की रोकथाम का टीका, प्रक्षेपण केंद्र

(घ) हवाई पट्टियों का निर्माण, कोविड-19 की रोकथाम का टीका

<u>अति लघु उत्तरीय प्रश्न</u>) 1 अंक

4- सतत् उद्यम से क्या तात्पर्य है?

<u>लघु उत्तरीय प्रश्न</u>) 2x 6 = 3 अंक

5- कैसे व्यक्ति को अंधकार में बताया गया है?

6- किस अवस्था में प्राप्त सफलता मन को व्यथित करेगी ?

7- जीवन में सफल होने के लिए क्या करना चाहिए ?

संक्षिप्त उत्तर संकेत –

1. ख उपयुक्त
2. ख संसाधनों की तुलना में परिश्रम की भूमिका अधिक है
3. क बाँध, कोविड -19 की रोकथाम का टीका, प्रक्षेपण केंद्र
4. निरंतर परिश्रम करना
5. बिना श्रम किए भौतिक साधनों को जुटाकर जो सुख प्राप्त करने के फेर में है, वह अंधकार में हैं।
6. जो बिना परिश्रम किये सफलता प्राप्त करना चाहते हैं
7. कर्म में जुट जाएँ और तब तक जुटे रहें जब तक कि सफल न हो जाएँ।

4- **निम्नलिखित गद्यांश का ध्यानपूर्वक अवलोकन कर प्रश्नों के उत्तर में सही विकल्प चुनिए - (10 अंक)**

विज्ञान प्रकृति को जानने का महत्त्वपूर्ण साधन है। भौतिकता आज आधुनिक वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति का स्तर निर्धारित करती है। विज्ञान केवल सत्य, अर्थ और प्रकृति के बारे में उपयोग ही नहीं बल्कि प्रकृति की खोज का एक क्रम है। विज्ञान प्रकृति को जानने का एक महत्त्वपूर्ण साधन है। यह प्रकृति को जानने के विषय में हमें महत्त्वपूर्ण और विश्वसनीय ज्ञान देता है। व्यक्ति जिस बात पर विश्वास करता है वही उसका ज्ञान बन जाता है। कुछ लोगों के पास अनुचित ज्ञान होता है और वह उसी ज्ञान को सत्य मानकर उसके अनुसार काम करते हैं। वैज्ञानिकता और आलोचनात्मक विचार उस समय जरूरी होते हैं जब वह विश्वसनीय ज्ञान पर आधारित हों। वैज्ञानिक और आलोचक अक्सर तर्कसंगत विचारों का प्रयोग करते हैं। तर्क हमें उचित सोचने पर प्रेरित करते हैं। कुछ लोग तर्क संगत विचारधारा नहीं रखते क्योंकि उन्होंने कभी तर्क करना जीवन में सीखा ही नहीं होता।

प्रकृति वैज्ञानिक और कवि दोनों की ही उपास्या है। दोनों ही उससे निकटतम संबंध स्थापित करने की चेष्टा करते है, किंतु दोनों के दृष्टिकोण में अंतर है। वैज्ञानिक प्रकृति के बाल्य रूप का अवलोकन करता है और सत्य की खोज करता है, परंतु कवि बाह्य रूप पर मुग्ध होकर उससे भावों का तादात्म्य स्थापित करता है। वैज्ञानिक प्रकृति की जिस वस्तु का अवलोकन करता है, उसका सूक्ष्म निरीक्षण भी करता है। चंद्र को देखकर उसके मस्तिष्क में अनेक विचार उठते हैं उसका तापक्रम क्या है, कितने वर्षों में वह पूर्णतः शीतल हो जाएगा, ज्वार-भाटे पर उसका क्या प्रभाव होता है, किस प्रकार और किस गति से वह सौर मंडल में परिक्रमा करता है और किन तत्त्वों से उसका निर्माण हुआ है? वह अपने सूक्ष्म निरीक्षण और अनवरत चिंतन से उसको एक लोक ठहराता है और उस लोक में स्थित ज्वालामुखी पर्वतों तथा जीवनधारियों की खोज करता है। इसी प्रकार वह एक प्रफुल्लित पुष्प को देखकर उसके प्रत्येक अंग का विश्लेषण करने को तैयार हो जाता है। उसका प्रकृति-विषयक अध्ययन वस्तुगत होता है। उसकी दृष्टि में विश्लेषण और वर्ग विभाजन की प्रधानता रहती है। वह सत्य और वास्तविकता का पुजारी होता है। कवि की कविता भी प्रत्यक्षावलोकन से प्रस्फुटित होती है वह प्रकृति के साथ अपने भावों का संबंध स्थापित करता है। वह उसमें मानव चेतना का अनुभव करके उसके साथ अपनी आंतरिक भावनाओं का समन्वय करता है। वह तथ्य और भावना के संबंध पर बल देता है। उसका वस्तुवर्णन हृदय की प्रेरणा का परिणाम होता है, वैज्ञानिक की भाँति मस्तिष्क की यांत्रिक प्रक्रिया नहीं।

कवियों द्वारा प्रकृति-चित्रण का एक प्रकार ऐसा भी है जिसमें प्रकृति का मानवीकरण कर लिया जाता है अर्थात प्रकृति के तत्त्वों को मानव ही मान लिया जाता है। प्रकृति में मानवीय क्रियाओं का आरोपण किया जाता है। हिंदी में इस प्रकार का प्रकृति-चित्रण छायावादी कवियों में पाया जाता है । इस प्रकार के प्रकृति गौण -चित्रण में प्रकृति सर्वथा हो जाती है। इसमें प्राकृतिक वस्तुओं के नाम तो रहते हैं परंतु झंकृत चित्रण मानवीय भावनाओं का ही होता है। कवि लहलहाते पौधे का चित्रण न कर खुशी से झूमते हुए बच्चे का चित्रण करने लगता है

बहुविकल्पीय य प्रश्न(1 x 3 =3 अंक)

1' प्रत्यय युक्त शब्द कौनसा है-?

(क भौतिकता (ख अंग (ग विश्लेषण (घ उचित

2-'वैज्ञानिक प्रकृति के बाह्य रूप का अवलोकन करते हैं- यह कथन दर्शाता है कि वे

(क कवियों की तुलना में अधिक श्रेष्ठ हैं

(ख ज्वार-भाटे के परिणाम से बचना चाहते हैं

(ग वर्ग विभाजन के पक्षधर बने रहना चाहते हैं

(घ प्रकृति के भौतिक सौन्दर्य को देखता हैं

3-सूक्ष्म निरीक्षण और अनवरत चिंतन से तात्पर्य है-

(क सौर मंडल को एक लोक और परलोक ठहराना

(ख छोटी-छोटी सी बातों पर चिंता करना

(ग बारीकी से सोचना व निरंतर देखना

(घ बारीकी से देखना और निरंतर सोचना

अति लघु उत्तरीय प्रश्न (1 अंक)

4-कौन अनवरत चिंतन करता है?

लघु उत्तरीय प्रश्न (2 x3 = 6 अंक)

5-कवि की कविता किस से प्रस्फुटित होती है ?

6- विज्ञान प्रकृति को जानने का एक महत्त्वपूर्ण साधन क्यों है

7-प्रकृति का मानवीकरण क्या दर्शाता है ?

संक्षिप्त उत्तर संकेत –

1.क भौतिकता

2. घ प्रकृति के भौतिक सौन्दर्य को देखता हैं

3. घ बारीकी से देखना और निरंतर सोचना

4. वैज्ञानिक

5. कवि की कविता प्रत्यक्षावलोकन से प्रस्फुटित होती है

6. यह प्रकृति को जानने के विषय में हमें महत्त्वपूर्ण और विश्वसनीय ज्ञान देता है।

7. प्रकृति के तत्त्वों को मानव ही मान लिया जाता है।

5- **निम्नलिखित गद्यांश का ध्यानपूर्वक अवलोकन कर प्रश्नों के उत्तर में सही विकल्प चुनिए - (10 अंक)**

विषमता शोषण की जननी है। समाज में जितनी विषमता होगी, सामान्यतया शोषण उतना ही अधिक होगा। चूँकि हमारे देश में सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक व सांस्कृतिक असमानताएँ अधिक हैं जिसकी वजह से एक व्यक्ति एक स्थान पर शोषक तथा वही दूसरे स्थान पर शोषित होता है चूँकि जब बात उपभोक्ता संरक्षण की हो तब पहला प्रश्न यह उठता है कि उपभोक्ता किसे कहते हैं या उपभोक्ता की परिभाषा क्या है? सामान्यतः उस व्यक्ति या व्यक्ति समूह को उपभोक्ता कहा जाता है जो सीधे तौर पर किन्हीं भी वस्तुओं अथवा सेवाओं का उपयोग करते हैं। इस प्रकार सभी व्यक्ति किसी-न-किसी रूप में शोषण का शिकार अवश्य होते हैं।

हमारे देश में ऐसे अशिक्षित, सामाजिक एवं आर्थिक रूप से दुर्बल अशक्त लोगों की भीड़ है जो शहर की मलिन बस्तियों में, फुटपाथ पर, सड़क तथा रेलवे लाइन के किनारे, गंदे नालों के किनारे झोंपड़ी डालकर अथवा किसी भी अन्य तरह से अपना जीवनयापन कर रहे हैं। वे दुनिया के सबसे बड़े प्रजातांत्रिक देशों की समाजोपयोगी ऊर्ध्वमुखी योजनाओं से वंचित हैं, जिन्हें आधुनिक सफ़ेदपोशों, व्यापारियों, नौकरशाहों एवं तथाकथित बुद्धिजीवी वर्ग ने मिलकर बाँट लिया है। सही मायने में शोषण इन्हीं की देन है। उपभोक्ता शोषण का तात्पर्य केवल उत्पादकता व व्यापारियों द्वारा किए गए शोषण से ही लिया जाता है जबकि इसके क्षेत्र में वस्तुएँ एवं सेवाएँ दोनों ही सम्मिलित हैं, जिनके अंतर्गत डॉक्टर,

शिक्षक, प्रशासनिक अधिकारी, वकील सभी आते हैं। इन सबने शोषण के क्षेत्र में जो कीर्तिमान बनाए हैं वे वास्तव में गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में दर्ज कराने लायक हैं।

बहुविकल्पीय य प्रश्न (1 x 3 =3 अंक)

1-गद्यांश का समुचित शीर्षक होगा।

(क) उपभोक्तावाद (ख) उपभोक्ता शोषण (ग) भ्रष्टाचार और शोषण (घ) विषमता शोषण

2-'ऊर्ध्वमुखी योजनाओं से वंचित है'-वाक्य का आशय है?

(क) शोषण के शिकार लोग

(ख) अधिकारहीन जागरूक नहीं हैं

(ग) योजनाओं के लाभों से वंचित

(घ) योजनाओं का लाभ नहीं लेते

3-विषमता शोषण की जननी है'-क्योंकि ?

(क) विषमता के कारण शोषण का जन्म होता है।

(ख) समाज में धन, सत्ता, धर्म के आधार पर लोग बँटे हुए हैं।

(ग) समर्थ व्यक्ति दूसरे का शोषण कर करता रहता है।

(घ) हर व्यक्ति एक जगह शोषक है दूसरी जगह शोषित।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न (1 अंक)

4-उपभोक्ता शोषण की सीमाएँ कहाँ तक हैं?

लघु उत्तरीय प्रश्न (2 x 3 = 6 अंक)

5- देश की समाजोपयोगी योजनाओं से कौन-सा वर्ग वंचित रह जाता है?

6- दुर्बल अशक्त लोग कहाँ रहते हैं?

7- सामान्यतः समाज में शोषण कब बढ़ता है?

संक्षिप्त उत्तर संकेत –

1. क उपभोक्तावाद
2. ग योजनाओं के लाभों से वंचित
3. क विषमता के कारण शोषण का जन्म होता है
4. असीमित हैं
5. अशिक्षित, सामाजिक एवं आर्थिक रूप से दुर्बल अशक्त लोग
6. शहर की मलिन बस्तियों में, फुटपाथ पर, सड़क तथा रेलवे लाइन के किनारे, गंदे नालों के किनारे झोंपड़ी डालकर अथवा किसी भी अन्य तरह से अपना जीवन-यापन कर रहे हैं।

अपठित पद्यांश

1.निम्नलिखित पद्यांश का ध्यानपूर्वक अवलोकन कर प्रश्नों के उत्तर में सही विकल्प चुनिए -

अगर तुम्हारे शहर की
धुआं उगलती चिमनियाँ
घोंटती हो दम तुम्हारा,
तब, चले आना, मेरे गाँव,
जहाँ अमराई में चलती है पुरवाई .
अगर तुम्हारे शहर के
कोलाहाल ने
उड़ा दी हो
नींद तुम्हारी
तब
चले आना मेरे गाँव में
जहाँ सुनाती है लोरियाँ
खनकती पत्तियाँ
अगर
थक गए हो तुम
उम्र का बोझ ढोते-ढोते
तब
चले आना मेरे गाँव में
जहाँ
पचपन की उम्र में भी
खिलखिलाता है
बचपन उन्मुक्त

बहुविकल्पीय प्रश्न (1 x 3 =3 अंक)

1. धुएँ से बचने के लिए गाँव में क्या है?
   (क) दवाई (ख) पुरवाई (ग) महँगाई (घ) शहनाई
2. गाँव में लोरियाँ कौन सुनाता है?
   (क) माता-पिता (ख) पेड़ (ग) पत्तियाँ (घ) हवाएँ
3. पचपन की उम्र में भी गाँव के व्यक्ति में क्या झलकता है?
   (क) उन्मुक्त बचपन (ख) बुढ़ापा (ग) जवानी (घ) प्रौढावस्था

अति लघु उत्तरीय प्रश्न (1 अंक)

4. 'कोलाहल ने उड़ा दी हो नींद' का क्या आशय है?

लघु उत्तरीय प्रश्न (2 x 2 =4 अंक)

5.कवि गाँव आने की बात क्यों करता हैं?
6. "उम्र का बोझ ढोते-ढोते" पंक्ति का क्या अर्थ हैं?

संक्षिप्त उत्तर संकेत

1 (ख) पुरवाई
2 (ग) पत्तियाँ
3 (क) उन्मुक्त बचपन
4 शोर में मनुष्य को शांति नहीं मिल रही हैं
5 सुख एवं शांति हेतु
6 जीवन का बोझ उठाते उठाते

2.निम्नलिखित पद्यांश का ध्यानपूर्वक अवलोकन कर प्रश्नों के उत्तर में सही विकल्प चुनिए -

आज की शाम, जो बाजार जा रहे हैं,
उनसे मेरा अनुरोध है
एक छोटा सा अनुरोध, क्यों ना ऐसा हो कि आज शाम।
हम अपने थैले और डोलचियाँ
रख दें एक तरफ और सीधे धान की मंजरियों तक चलें।
चावल जरूरी है, जरूरी है आटा दाल नमक,
पर क्यों ना ऐसा हो कि आज शाम
हम सीधे वहीं पहुँचे, एकदम वहीं।
जहाँ चावल दाना बनने से पहले,
सुगंध की पीड़ा से छटपटा रहा हो,
उचित यही होगा कि हम शुरू में ही,
आमने-सामने बिना दुभाषिये के
सीधे उस सुगंध से बातचीत करें,
यह रक्त के लिए अच्छा है।
अच्छा है भूख के लिए नींद के लिए, कैसा रहे, बाजार ना आए बीच में।

बहुविकल्पीय प्रश्न (1 x 3 =3 अंक)

1.प्रस्तुत काव्यांश में कवि क्या अनुरोध कर रहा है?

(क) बाजार में जाने का (ख) सीधे किसान से वस्तुएँ खरीदने का
(ग) बाजार से वस्तुएँ खरीदने का (घ) बाजार के जाल में ना फँसने का

2. कवि सीधे कहाँ पहुँचने के लिए कह रहा है?

(क) दुकानों पर (ख) सड़कों पर
(ग) किसानों के खेतों पर (घ) गाँव के घरों पर

3. चावल दाना बनने से पहले किस पीड़ा से छटपटाता है?

(क) दयनीय (ख) दुर्गंध (ग) सुगंध (घ) असामाजिक

अति लघु उत्तरीय प्रश्न (1 अंक)

4. कवि के अनुसार रक्त के लिए क्या अच्छा होगा?

लघु उत्तरीय प्रश्न (2 x 2 =4 अंक)

5. बाजार ना आए बीच में' पंक्ति का क्या आशय है?
6. कवि बाजार जाने वालों से क्या अनुरोध कर रहा हैं ?

संक्षिप्त उत्तर संकेत

1. (ii) सीधे किसान से वस्तुएँ खरीदने का
2. (iii) किसानों के खेतों पर
3. (iii) सुगंध
4. बाज़ार से मिलावटी सामान न खरीदना
5. बाज़ार ना जाकर सीधे किसानो के खेत में जाए

3. निम्नलिखित पद्यांश का ध्यानपूर्वक अवलोकन कर प्रश्नों के उत्तर में सही विकल्प चुनिए -

स्वार्थ का ज़हर
जब तक आवृत रखेगा
मानवता की आकृति को
और
स्वार्थ की नींव
जब तक

जुड़ी रहेगी धन के गारे से
तब तक
असंतोष केवल
कल्पना की वस्तु होगी।
कितने ही त्याग और
धर्म के उपदेश करें
अभावों की यह रात
सूनी सी आंधी रहेगी-
सोचने से कार्य नहीं हो जाता
कल्पना से यथार्थ मेल नहीं खाता
आदर्श और धर्म को
कागज़ पर उतारने से फायदा क्या,
उत्तरदायित्व और संवेदनाहीन
इन थोथी डिग्रियों से
जीवन के दुख का रहस्य
सुलझ नहीं पाता।

बहुविकल्पीय प्रश्न (1 x 3 =3 अंक)

1 किस स्थिति में आत्मसंतोष कल्पना की वस्तु है ?

(क) स्वार्थ का ज़हर (ख) धन रूपी कीचड़
(ग) विकल्प क और ख (घ) इनमें से कोई नहीं

2 निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

I अभावों की रात से कवि का तात्पर्य मानवीय मूल्यों के अभाव से है।
II अभावों की रात से कवि का तात्पर्य नैतिक मूल्यों के अभाव से है।
III अभावों की रात से कवि का तात्पर्य धन के अभाव से है।

3 उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा /कौन -से विकल्प सही है/ हैं ?

(क) केवल I (ख) I और II
(ग) केवल III (घ) केवल II

अति लघु उत्तरीय प्रश्न (1 अंक)

4 रहस्य कब सुलझ पाता है जीवन में दुख का?

लघु उत्तरीय प्रश्न (2 x 2 =4 अंक)

5. मानवता को किसके आवरण ने ढक रखा है?
6 धन के गारे से कवि क्या अर्थ हैं ?

संक्षिप्त उत्तर संकेत –

1 .ग - विकल्प (क) और (ख)
2. ख - I और II
3 . ग- विकल्प (क) और (ख)
4. जहाँ कल्पना का मेल यथार्थ से होता है।
5. मानवता को स्वार्थ के आवरण ने ढक रखा है।
6. रुपए - पैसे का लालच

4.निम्नलिखित पद्यांश का ध्यानपूर्वक अवलोकन कर प्रश्नों के उत्तर में सही विकल्प चुनिए -

तूफ़ानों की ओर घूमा दो नाविक निज पतवार
आज सिंधु ने उगला है
लहरों का यौवन मचला है

आज हृदय में और सिंधु में
साथ उठा है ज्वार।
यह असीम निज सीमा जाने
सागर भी तो यह पहचाने
मिट्टी के पुतले मानव ने
कभी न मानी हार।
लहरों के स्वर में कुछ बोलो
इस अंधड़ में साहस तोलो
कभी कभी मिलता जीवन में-
तूफ़ानों का प्यार।
सागर की अपनी क्षमता है।
पर नाविक भी कब थकता है।
जब तक साँसों में स्पंदन है।
उसका हाथ नहीं रुकता है।
इसके बल पर कर डाले सातों सागर पार
तूफ़ानों की ओर घूमा दो नाविक निज पतवार।

बहुविकल्पीय प्रश्न (1 x 3 =3 अंक)

1. मनुष्य कब तक हार नहीं मानता है ?

(क) जब तक वह थकता नहीं है (ख) जब तक शरीर में प्राण हैं।
(ग) जब तक अपनों का साथ है। (घ) इनमें से कोई नहीं।

2. कवि ने मिट्टी के पुतले की उपमा किसे दी है ?

(क) दानव को (ख) मानव को
(ग) खिलौने को (घ) पशु को

3. कवि ने नाविक से अपनी पतवार किस तरफ घूमाने को कहा है?

(क) तूफ़ानों की ओर (ख) किनारों की ओर
(ग) बीच समुद्र में (घ) इनमें से कोई नहीं

अति लघु उत्तरीय प्रश्न (1 अंक)

4. निज शब्द का क्या अर्थ हैं ?

लघु उत्तरीय प्रश्न (2 x 2 =4 अंक)

5.कवि नाविक से क्या अनुरोध कर रहा है?

6.'कभी-कभी मिलता जीवन में तूफ़ानों को प्यार' का क्या भाव है?

संक्षिप्त उत्तर संकेत –

1 जब तक शरीर में प्राण हैं।
2 मानव को
3 तूफ़ानों की ओर
4. निज शब्द का अर्थ हैं -अपना
5. कवि नाविकों से नाव तूफ़ानों की ओर घूमाने को कहता हैं
6. जिन्दगी में मिलने वाली समस्यायों को सहजता से स्वीकार करना चाहिए

5.निम्नलिखित पद्यांश का ध्यानपूर्वक अवलोकन कर प्रश्नों के उत्तर में सही विकल्प चुनिए -

इतने ऊँचे उठो कि जितना उठा गगन है
देखो इस सारी दुनिया को एक दृष्टि से
संचित करो धारा, समता की भाव वृष्टि से
जाति भेद की, धर्म वेश की

काले गोरे, रंग द्वेष की
ज्वालाओं से जलते जग में
इतने शीतल बहो कि जितना मलय पवन है।
लो अतीत में उतना ही जितना पोषक है।
जीर्ण-शीर्ण का मोह मृत्यु का ही द्योतक है
तोड़ो बंधन, रुके न चिंतन
गति जीवन का सत्य चिरंतन
धारा के शाश्वत प्रवाह में इतने गतिमय बनो
कि जितना परिवर्तन है।

बहुविकल्पीय प्रश्न (1x3=3 अंक)

1 काव्यांश का मूल प्रतिपाद्य क्या है?

(क) आकाश के समान ऊँचा उठने की प्रेरणा देना (ख) मलय पावन के समान शीतल बनना
(ग) सभी बंधनों को तोड़ डालना (घ) परिवर्तन के समान निरंतर गतिशील बने रहना

2 नए समाज के निर्माण में नई सोच क्या होगी ?

(क) सभी को समानता की दृष्टि से देखना (ख) स्वयं को ऊँचा उठाना
(ग) दूसरों से भेदभाव करना (घ) धर्म को प्रधानता देना

3 कवि ने समानता का भाव दर्शाने के लिए किसका उदाहरण दिया है ?

(क) अतीत के समान पोषक का (ख) वर्षा के जल का
(ग) मृत्यु का द्योतक होने का (घ) पावन की शीतलता का

अति लघु उत्तरीय प्रश्न (1 अंक)

4 हमें अतीत से क्या ग्रहण करना चाहिए ?

लघु उत्तरीय प्रश्न (2 x 2 =4 अंक)

5 हमें किसके समान जीवन में आगे बढ़ते रहना चाहिए?

6 दुनिया को किस दृष्टि से देखना चाहिए ?

संक्षिप्त उत्तर संकेत –

1- क आकाश के समान ऊँचा उठने की प्रेरणा देना
2- क सभी को समानता की दृष्टि से देखना
3- ख वर्षा के जल का
4. हमें अतीत से सीख लेनी चाहिए
5. धारा के शाश्वत प्रवाह के सामान
6. दुनिया को समानता की दृष्टि से देखना चाहिए

अभिव्यक्ति और माध्यम (पाठ संख्या 1,2,9,10,14,15,तथा 16 पर आधारित)

पत्रकारिता के विविध आयाम

पत्रकारिता का संबंध सूचनाओं को इकट्ठा करना और उन सूचनाओं को पढ़ने योग्य बनाकर आम पाठकों तक पहुँचाने से है। परन्तु हर सूचना को समाचार का दर्जा नहीं दिया जा सकता है। पत्रकारिता से जुड़े व्यक्ति कुछ ही घटनाओं, समस्याओं और विचारों को समाचार के रूप में जनता के समक्ष प्रस्तुत करते हैं। यहाँ यह प्रश्न उठ सकता है कि किस घटना, समस्या या विचार को समाचार का दर्जा दे सकते हैं? किसी घटना, समस्या के समाचार बनने के लिए उसमें नवीनता, जनरुचि, निकटता, प्रभाव जैसे तत्त्वों का होना ज़रूरी होता है।

समाचारों के संपादन में तथ्यपरकता, वस्तुपरकता, निष्पक्षता और संतुलन जैसे सिद्धांतों का ध्यान रखना आवश्यक है। इन सिद्धांतों का ध्यान रखकर ही पत्रकारिता आम जनता के बीच अपनी विश्वसनीयता को स्थापित करती है। लेकिन पत्रकारिता का संबंध केवल समाचारों से ही नहीं है। उसमें संपादकीय, लेख, कार्टून और फोटो भी प्रकाशित होते हैं। पत्रकारिता के कई प्रकार हैं। उनमें खोजपरक पत्रकारिता, वॉचडॉग पत्रकारिता और एडवोकेसी पत्रकारिता प्रमुख हैं।

पत्रकारिता: विभिन्न समाचार संगठनों के लिए कार्य करने वाले पत्रकार देश-विदेश में घटने वाली घटनाओं को समाचार के रूप में प्रकाशित करके जनता के समक्ष लाते हैं। इस कार्य में प्रतिदिन संलग्न रहकर सूचनाओं को संकलित करके उन्हें समाचार के रुप में प्रस्तुत करते हैं। यह पूरी प्रक्रिया ही पत्रकारिता कहलाती है।

समाचार के तत्त्व :

समाचार के तत्त्वों में नवीनता, निकटता, प्रभाव, जनरुचि, टकराव/संघर्ष, महत्त्वपूर्ण लोग, उपयोगी जानकारियाँ, अनोखापन, पाठक वर्ग, नीतिगत ढाँचा आदि को शामिल किया जाता है।

संपादन एवं उसके सिद्धांत :

किसी सामग्री से उसकी अशुद्धियों को दूर करके उसके पढ़ने योग्य बनाने की प्रक्रिया को संपादन के रूप में जानते हैं। संपादन करते समय प्रायः तथ्यों की शुद्धता, वस्तुपरकता, निष्पक्षता, संतुलन, और स्रोत जैसे सिद्धांतों का पालन किया जाता है।

पत्रकारिता के अन्य आयाम :

समाचारपत्र पढ़ते समय प्रत्येक पाठकों की अपनी रुचि होती है। अपनी रुचि के हिसाब से वह समाचारपत्र का अपना कोना छाँटता है। पत्रकारिता में समय, विषय और घटना के हिसाब से लेखन का तरीका भी परिवर्तित किया जा सकता है। इन बदलावों के कारण ही पत्रकारिता में कई आयाम जुड़ जाते हैं, जिनमें विचार, कार्टून, संपादकीय, फोटो, टिप्पणी आदि शामिल होते हैं। इनके महत्त्व के कारण ही इन्हें समाचार पत्रों में विशिष्ट स्थान प्रदान किया जाता है।

पत्रकारिता के कुछ प्रमुख प्रकार : पत्रकारिता के प्रमुख प्रकारों में खोजपरक, विशेषीकृत, वॉचडॉग, एडवोकेसी, वैकल्पिक पत्रकारिता को शामिल किया जाता है।

प्रश्न:1 समाचार के तत्त्वों से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर: समाचार के तत्त्वों में नवीनता, निकटता, प्रभाव, जनरुचि, टकराव/संघर्ष, महत्त्वपूर्ण लोग, उपयोगी जानकारियाँ, अनोखापन, पाठक वर्ग, नीतिगत ढाँचा आदि को शामिल किया जाता है।

प्रश्न :2 समाचार लेखन में नवीनता से क्या आशय है ?

उत्तर: किसी भी घटना, विचार या समस्या के समाचार बनने के लिए यह बहुत जरूरी है कि वह नया हो। कहा भी जाता है 'न्यू' है इसलिए 'न्यूज' है। समाचार वही है जो ताजी घटना के बारे में जानकारी देता है ।

प्रश्न: 3 संपादक से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर: संपादक से तात्पर्य उस व्यक्ति से है जो समाचार-पत्र में प्रकाशित होने वाली सामग्री के चयन को नियंत्रित करता है।

प्रश्न: 4 खोजपरक पत्रकारिता क्या है ?

उत्तर: ऐसी पत्रकारिता जिसमें गहराई से छानबीन करके ऐसे तथ्यों को लाने की कोशिश की जाती है जिसे जानबूझकर दबाने या छुपाने की कोशिश की जाती है। खोजी पत्रकारिता के माध्यम से जनता से जुड़े मामलों के भ्रष्टाचार, अनियमितताओं, गड़बड़ियों को सामने लाने की कोशिश करती है। खोजी पत्रकारिता का ही एक रूप 'स्टिंग ऑपरेशन' है।

प्रश्न: 5 वॉचडॉग पत्रकारिता क्या है ?

उत्तर: लोकतंत्र में लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के रूप में मीडिया को जाना जाता है। इस मीडिया जगत का मुख्य कर्तव्य सरकार के कामकाज पर नजर रखकर उसमें हो रही गड़बड़ियों का पर्दाफ़ाश करना होता है।

रचनात्मक लेखन के कुछ उदाहरण (5 अंक)

समय नियोजन - सफलता का रहस्य

सफलता का शिखर वह स्थान है जहां हर कोई पहुँचना चाहता है जिस पर बैठ वह हर पल का आनंद लेना चाहता है लेकिन अधिकांश किंतु परंतु में खोकर रह जाते हैं। सफलता एक सपना बनकर रह जाती है। क्षेत्र चाहे कोई भी हो लेकिन वह दिग्गजों का मुकाबला नहीं कर सकता। आमतौर पर हारा हुआ व्यक्ति किस्मत को दोष देता है। परंतु क्या केवल भाग्य ही असफलता का कारण होता है? नहीं केवल भाग्य नहीं, मानव के प्रयासों का अभाव भी एक बहुत बड़ा कारण है। भरसक प्रयास तो बहुत से लोग करते हैं फिर भी आखिर असफल क्यों होते हैं ? सबसे बड़ा कारण है नियोजित प्रयासों का अभाव, जिसमें समय नियोजन बहुत बड़ी भूमिका निभाता है। यदि हम समय नियोजन कर ,नियोजित रूप से सोच विचार कर प्रयास करते हैं तो सफलता अवश्य मिलती है बल्कि यह कहना चाहिए कि नियोजित प्रयास से मेहनत कम और परिणाम अधिक गुणात्मक मिलते हैं जबकि अनियोजित प्रयास से मेहनत ज्यादा और परिणाम ना तो मात्रात्मक और ना ही गुणात्मक प्राप्त होते हैं। किसी भी सफल व्यक्ति की जीवन गाथा बताती है कि उसने ना केवल कड़ी मेहनत की बल्कि सुनियोजित रूप से मेहनत की। परिणाम हींग लगे न फिटकरी रंग चोखा आवे वाला होता है। समय नियोजन के लिए विद्यार्थियों हेतु जरूरी है कि 6 घंटे सोने का निकालकर 18 घंटे मेहनत के लिए तैयार रहें अपनी समय सारणी बनाए जिसमें सुबह जल्दी उठना यानी 3 या 4 बजे उठना सुनिश्चित करें। फिर विद्यालय जाने से पूर्व ढाई 3 घंटे पढ़कर विद्यालय जाएँ , फिर लौटकर 3 घंटे अध्ययन करें। कठिन विषय सुबह और थोड़े सरल विषय संध्या समय अध्ययन करें। पढ़ते हुए पूछने में संकोच न करें। अध्यापक से अपनी हर समस्या का समाधान लेवें। स्व-अध्ययन पर ज्यादा बल दें । वर्ष भर समय सारणी का पालन करते हुए लक्ष्य प्राप्ति की ओर बढ़े। बीच में मनोरंजन एवं स्वास्थ्य प्राप्ति हेतु समाचार पत्र पढ़ना एवं हल्का-फुल्का योग अथवा नृत्य अवश्य करें। शाम को समय पर यानी 9:00 बजे तक हर हालत में सो जाए। इससे तन और मन दोनों दुरुस्त रहेंगे और मंजिल आपके कदम चूमेगी। लक्ष्य प्राप्ति आप में आत्मविश्वास पैदा करेगी। धैर्य पूर्वक लक्ष्य प्राप्ति का आनंद लें। अगला लक्ष्य निर्धारित करें। इसे जीवन की मूल रीड की हड्डी बना ले। फिर मेहनत में नशा, एक आनंद मिलेगा और आप हमेशा आनंद के सागर में डुबकी लगाते अनुभव करेंगे। मंजिलें आप से कभी भी दूर ना हो पाएंगी।

गाँव की सुबह

भारत कृषि प्रधान देश है। यहाँ के लोगों का प्रमुख कार्य ही खेती-बाड़ी और पशुपालन रहा है। सीधी सादी गांव की जिंदगी जीने वाले लोगों की सुबह भी उतनी ही सादगी भरी होती है उनका दिन सुबह 4:00 बजे से प्रारंभ हो जाता है। लोग सुबह उठ , नहा-धो, पूजा पाठ , ईश्वर का नाम स्मरण कर दिनचर्या शुरू करते हैं, पुरुष जहाँ खेतों को जोतने , बुआई, सिंचाई , कटाई आदि काम करने निकल पड़ते हैं तो महिलाएँ घर की साफ सफाई,खाना पकाना आदि काम में लग जाती हैं। बच्चे पढ़ने के लिए दूर-दराज के विद्यालयों की ओर जाने की तैयारी करने लगते तो खेतों में दूर से उगता सूर्य जब अपनी नरम नरम किरणों से पेड़ों,फसलों को छूता हुआ अपनी स्वर्णिम आभा फैलाता आगे बढ़ता है तो लगता है मानो धरती अंगड़ाई ले रही है। वृक्षों के पत्तों के चटकने की आवाज सुनाई दे रही है। फसलें लहलहाती मानो किसानों के ममतामयी स्पर्श के लिए बेकरार हो जाती हैं। पूरा माहौल उम्मीद की एक नई किरण ,एक नई ताजगी और एक नए आनंद की अनुभूति करवाता है। निस्संदेह बहुत ही आनंदमयी एवं स्फूर्ति से भरी हुई होती है।

इम्तिहान के दिन

भारत ऋतुओं का देश है। गर्मी ,सर्दी ,बरसात आदि इसमें छह ऋतुएँ होती हैं। लेकिन एक मौसम और भी है वह है परीक्षाओं का। वही जो आजकल चल रहा है। परीक्षा यानी इम्तिहान ,एक ऐसा शब्द जिसको सुनकर अच्छे खासों के पसीने छूट जाते हैं। दिल की धड़कन बढ़ जाती है। परंतु जो विद्यार्थी वर्ष भर मेहनत करते हैं ,भली-भांति जानते हैं कि सफलता एक दिन मेहनत करने से नहीं लगातार की मेहनत से प्राप्त होती है इसलिए वे वर्ष के प्रारंभ में ही एक योजना तैयार कर लेते हैं। वर्ष के पहले दिन से पढ़ना शुरू करते हैं। फिर अध्यापक जो भी कक्षा में पढ़ाते हैं, उसे घर जाकर ध्यानपूर्वक उन्हें पढ़ते हैं। समय नियोजन के तहत बार-बार अभ्यास करते हैं। परिणाम परीक्षा आने से पूर्व ही सारा पाठ्यक्रम उन्हें अच्छे से स्मरण हो जाता है। रटने के स्थान पर वे समझकर पढ़ते हैं। निरंतर अभ्यास विषय में गहरी पैठ बना देता है, जिससे हर प्रश्न का उत्तर उनकी उँगलियों पर होता है। यही बात उन्हें अग्रणी विद्यार्थियों की श्रेणी में ला खड़ा करती है। इसी प्रकार जीवन में जो लोग धैर्यपूर्वक, सुनियोजित ढंग से जीवन व्यतीत करते हैं ,जीवन के हर इम्तिहान में सदैव प्रसन्न नजर आते हैं। प्रकृति भी सुनियोजित ढंग से चलती है तभी सृष्टि विकसित हो रही है यही संदेश यह प्रकृति भी हमें देती है इसलिए इम्तिहान जीवन का हो या कक्षा की परीक्षा सुनियोजित एवं निरंतर अभ्यास सदैव कारगर साबित होता है।

मेरे जीवन का अविस्मरणीय दिन

जिंदगी बड़ी अजीब वस्तु है। धूप-छाँव के खेल दिखाती ,कभी हँसाते , कभी रुलाते कब क्या दिखा दे, कब कौन-सी करवट ले ले ,कोई नहीं कह सकता। आमतौर पर जब तक जिंदगी समझ आती है ,तब तक वह समाप्त होने तक पहुँच जाती है। परंतु मैं इस मामले में खुशकिस्मत था कि मुझे एक ऐसे (अध्यापक) गुरु मिल गए जिन्होंने जीवन ही बदल डाला। बात उस समय की है जब मैं दसवीं कक्षा पास कर नया-नया 11वीं कक्षा में आया था। मैंने विज्ञान, वाणिज्य छोड़ कला संकाय को चुना था। मिला-जुला भाव था। ना जाने आगे क्या बनेगा। पहले दिन विभिन्न अध्यापक आए। कोई पाठ्यक्रम ,किताबों ,अभ्यास पुस्तिका ,प्रश्न पत्र आदि की चर्चा या फिर विषय संबंधी जानकारी देकर चला गया। फिर आया कालांश हिंदी का। अध्यापक ने अपना आत्म परिचय देने के साथ जीवन लक्ष्य बताने के लिए कहा। मैंने डरते डरते अफसर बनने की इच्छा जाहिर की फिर शुरू हुआ जवाब सवाल का सिलसिला। उन्होंने पूछना शुरू किया कि कौन से विभाग में और क्यों अफसर बनना चाहते हैं। मेरी तो बोलती बंद। मेरे साथ मेरा मित्र भी था। हम दोनों के हाथ ठंडे पड़ गए। परंतु अध्यापक ने हमारा हौसला बढ़ाते हुए विस्तारपूर्वक यूपीएससी की परीक्षा के बारे में बताया। मेरा और मेरे प्रिय मित्र का रुझान देख हम दोनों का मार्गदर्शन किया।। हमें समय सारणी बनाने ,समय नियोजन ,समाचार पत्र पढ़ने आदि संबंधी विस्तार पूर्वक जानकारी प्रदान की। मैंने घर जाकर अपने माता-पिता को सब कुछ बताया और फिर भी वे भी आकर अध्यापक से मिले। उन्होंने भी अध्यापक से चर्चा कर मार्गदर्शन प्राप्त किया। परिणाम स्वरूप 12वीं कक्षा में अपने रीजन में प्रथम स्थान प्राप्त कर मैंने दिल्ली विश्वविद्यालय में आगे पढ़ाई प्रारंभ की। समय-समय पर अध्यापक से दिशा- निर्देश ले उनके दिखाए रास्ते पर चलते पहले प्रयास में ही यूपीएससी की परीक्षा उत्तीर्ण की। आज जब अपने नाम की पट्टिका अपने ऑफिस के बाहर लगी देखी और उस कुर्सी पर बैठा तो सहसा आंखों से दो मोती अचानक निकल कर अध्यापक की चरण वंदना करते महसूस हुए। सही में अध्यापक देश के निर्माता होते हैं। वह तो प्रजापति है जो मिट्टी समान बाल बुद्धि को बाहर से थपेडता अंदर से सुंदर आकार प्रदान करने का प्रयास करते हैं। जो बाहर की थपेड सह गया वह समझो जीवन में कुछ बन गया। यही था मेरे जीवन का अविस्मरणीय दिन।

मौलिक कर्तव्य

अधिकार की लिप्सा मानव को अंधा बना देती है। अधिकारों की यह जंग प्राचीन काल से चली आ रही है। विश्व युद्धों का मूल कारण भी यही लिप्सा रही है। बड़े- बड़े देश ,बड़े बड़े राजा ,महाराजा विश्व विजेता हुए। पूरी दुनिया से अपने बल का, अपनी ताकत का लोहा मनवाया। लेकिन इतना सब होने पर भी वे लोगों के दिलों में राज नहीं कर पाए। कोई आदर्श नहीं छोड़ पाए अपितु भय की सत्ता स्थापित करने में जरूर सफल हुए इसके ठीक विपरीत ,जिस राजा और उसके परिवार ने कर्तव्यों की पूर्ति में एक दूसरे से आगे निकलने की कोशिश की , वह ना केवल चक्रवर्ती सम्राट बना। विश्व पर राज्य किया बल्कि कर्तव्यनिष्ठा की ऐसी मिसाल बन गया कि आज लगभग 7000 साल बाद भी लोग उसे याद करते हैं। वह ना तो हमारे केवल हमारे दिलों में राज करता है बल्कि आज भी पूजा जाता है। वह है दशरथ पुत्र मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम। आज भी लोग रामराज्य को याद करते हैं। उनके जीवन से संबंधित ग्रंथ को घर में रखना शुभ मानते हैं। उसे पूजते हैं। उसका पाठ करते हैं। राम जैसा ही पुत्र और राजा प्राप्त हो ऐसी कामना भी करते हैं। राम ने सिखाया कि अगर रामराज्य चाहते हैं तो अधिकारों के साथ-साथ अपने कर्तव्यों का भी पालन करना सीखे। हमारे भारतीय संविधान में मौलिक कर्तव्यों का विस्तार पूर्वक वर्णन है जैसे राष्ट्रीय ध्वज ,राष्ट्रीय चिह्नों का सम्मान करना। सभी धर्मों ,जातियों का सम्मान करना। सबके साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करना ,स्त्री शिक्षा पर बल देना इत्यादि। यदि हम इनका पालन करते हैं तो मानवतावाद या यूं कहें कि रामराज्य आने से कोई नहीं रोक सकता। यदि हम स्वयं ही अपने निजी स्वार्थों के कारण या धन के लोभ में देश के विघटनकारी तत्त्वों का साथ देंगे तो परिणाम (पाकिस्तान भूटान नेपाल बांग्लादेश) जैसे देश को विभिन्न अंगों में खंडित होना ही होगा। जैसे परिवार के टूटने की क्षति परिवार के सभी सदस्यों को भुगतनी पड़ती है इसी प्रकार देश के विघटन का परिणाम भी खाली विघटनकारी तत्त्वों को नहीं आम जनता को भी भुगतना पड़ता है। अपनी सुरक्षा के लिए , अपने अस्तित्व को बचाए रखने के लिए देश को सुरक्षित रखना बेहद आवश्यक है अतः आइए स्वयं भी एवं अपनों को भी मौलिक कर्तव्य के प्रति जागरूक करें क्योंकि उनका पालन करना हमारा परम कर्तव्य है।

कार्यालयी पत्र लेखन (5 अंक)

पत्र लेखन का अर्थ- पत्र लेखन एक ऐसी कला है, जिसके माध्यम से दो व्यक्ति या दो व्यापारी जो एक दूसरे से काफी दूरी पर स्थित हो, परस्पर एक दूसरे को विभिन्न कार्यों अथवा सूचनाओं के लिए पत्र लिखते हैं। पत्र लेखन का कार्य पारिवारिक जीवन से लेकर व्यापारिक जगत् तक प्रयोग में लाया जाता है। पत्र लेखन का कार्य अत्यंत प्रभावशाली होता है, क्योंकि इस साधन के द्वारा अनेकों लोगो से संपर्क स्थापित करने में भी सुविधा रहती है।

पत्र-लेखन की उपयोगिता अथवा महत्त्व –

• आजकल दूर-दूर रहने वाले सगे संबंधियों व व्यापारियों को आपस में एक दूसरे के साथ मेल-जोल रखने एवं संबंध रखने की आवश्यकता पड़ती है, इस कार्य में पत्र लेखन एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

• निजी अथवा व्यापारिक सूचनाओं को प्राप्त करने तथा भेजने के लिए पत्र व्यवहार विषय कारगर है। प्रेम, क्रोध, जिज्ञासा, प्रार्थना, आदेश, निमंत्रण आदि अनेक भावों को व्यक्त करने के लिए पत्र लेखन का सहारा लिया जाता है।
• पत्रों के माध्यम से संदेश भेजने में पत्र में लिखित सूचना पूर्व रूप से गोपनीय रखी जाती है। पत्र को भेजने वाला तथा पत्र प्राप्त करने वाले के आलावा किसी भी अन्य व्यक्ति को पत्र में लिखित संदेश पड़ने का अधिकार नहीं होता है।
• मित्र, शिक्षक, छात्र, व्यापारी, प्रबंधक, ग्राहक व अन्य समस्त सामान्य व्यक्तियों व विशेष व्यक्तियों से सूचना अथवा संदेश देने तथा लेने के लिए पत्र लेखन का प्रयोग किया जाता है।
• वर्तमान व्यावसायिक क्षेत्र में ग्राहकों को माल के प्रति संतुष्टि देने हेतु, व्यापार की ख्याति बढ़ाने हेतु, व्यवसाय का विकास करने हेतु इत्यादि अनेक कार्यों में पत्र व्यवहार का विशेष महत्त्व है।

पत्र लेखन के आवश्यक तत्त्व अथवा विशेषताएँ -

पत्र लेखन से संबंधित अनेक महत्त्व है परन्तु इन महत्त्व का लाभ तभी उठाया जा सकता है जब पत्र एक आदर्श पत्र की भांति लिखा गया हो। पत्र में सम्मिलित निम्नलिखित तत्त्वों के कारण ही पत्र को एक प्रभावशाली रूप दिया जा सकता है।

औपचारिक पत्र (Formal Letter) – सरकारी तथा व्यावसायिक कार्यों से संबंध रखने वाले पत्र औपचारिक पत्रों के अन्तर्गत आते है। इसके अतिरिक्त इन पत्रों के अन्तर्गत निम्नलिखित पत्रों को भी शामिल किया जाता है।

प्रार्थना पत्र
निमंत्रण पत्र
सरकारी पत्र
गैर सरकारी पत्र
व्यावसायिक पत्र
किसी अधिकारी को पत्र
नौकरी के लिए आवदेन हेतु
संपादक के नाम पत्र इत्यादि।

औपचारिक पत्र का प्रारूप-

1.औपचारिक पत्र लिखने की शुरुआत बाईं ओर से की जाती है। सर्वप्रथम 'सेवा में' शब्द लिखकर, पत्र पाने वाले का नाम लिखकर, पाने वाले के लिए उचित सम्बोधन का प्रयोग किया जाता है। जैसे – श्रीमान, मान्यवर, आदरणीय आदि।
2. इसके बाद पत्र पर पत्र पाने वाले का "पता/ कंपनी का नाम" लिखा जाता है।
3. तत्पश्चात पत्र जिस उद्देश्य के लिए लिखा जा रहा हो उसका "विषय" लिखा जाना आवश्यक है।
4. विषय लिखने के बाद एक बार फिर पत्र पाने वाले के लिए सम्बोधन शब्द का प्रयोग किया जाता है।
5. सम्बोधन लिखे के बाद, पत्र के मुख्य विषय का विस्तृत में वर्णन किया जाता है।
6. मुख्य विषय का अंत करते समय उत्तर की प्रतीक्षा में, सधन्यवाद, शेष कुशल आदि का प्रयोग किया जाना चाहिए।
7. इसके बाद पत्र के अंतिम भाग में "भवदीय, आपका आभारी, आपका आज्ञाकारी" इत्यादि शब्द लिखे जाने चाहिए।
8. पत्र भेजने वाले का नाम/कंपनी का नाम, पता
9. दिनांक" लिखते है।
10. अंत में पत्र लिखने वाले के हस्ताक्षर किए जाते हैं।

औपचारिक पत्र (फ़ॉर्मल लेटर)प्रारूप -1

प्रश्न -1 अखिल भारतीय साहित्य एवं संस्कृति संस्थान क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई में मोबाइल फ़ोन पर होने वाले व्यय के लिए निर्धारित सीमा बढ़ाने के लिए पत्र लिखकर प्रधान कार्यालय महानिदेशक अखिल भारतीय साहित्य एवं संस्कृति संस्थान तिलक मार्ग, नई दिल्ली-110001 को सूचित करें।

उत्तर :- अखिल भारतीय साहित्य एवं संस्कृति संस्थान क्षेत्रीय कार्यालय : मुंबई

फा.संख्या: मुंबई/का./5/2005/206 मुंबई, 15 मार्च 2005

सेवा में,

महानिदेशक

अखिल भारतीय साहित्य एवं संस्कृति संस्थान

तिलक मार्ग, नयी दिल्ली-110001

विषयः मोबाइल फ़ोन पर होने वाले व्यय के लिए निर्धारित सीमा

महोदय,

कृपया अपने परिपत्र का स्मरण करें जिसकी संख्या 24/13/प्र./2004 थी, जो 23 नवंबर, 2004 को जारी किया गया था। परिपत्र में हिदायत दी गई थी कि मोबाइल फ़ोन पर महीने में दो हज़ार से अधिक खर्च नहीं किया जाना चाहिए।

इस संबंध में निवेदन है कि मुंबई स्थित क्षेत्रीय कार्यालय की गतिविधियाँ अत्यंत व्यापक हैं। देश के तमाम फ़िल्म और टेलीविजन निर्माता मुंबई में ही हैं। इनकी वजह से विभिन्न विधाओं के कलाकार बड़ी संख्या में मुंबई में ही निवास करते हैं। साथ ही निदेशक को देश के विभिन्न नगरों में स्थित कार्यालयों एवं क्षेत्रीय कार्यालय से भी निरंतर संपर्क में रहना पड़ता है। साथ ही संस्थान की गतिविधियों के लिए प्रायोजक जुटाने के सिलसिले में देश के विभिन्न औद्योगिक संगठनों से भी लगातार बात करनी पड़ती है। ऊपर बताए तथ्यों की वजह से दो हजार रुपए मासिक की सीमा मुंबई कार्यालय के लिए कम पड़ रही है। पिछले छह महीनों से यह देखा जा रहा है कि मासिक खर्च छह हजार रुपए के आसपास आता है। अतः निवेदन है कि मुंबई कार्यालय की विशेष स्थिति को ध्यान में रखते हुए मोबाइल फोन पर मासिक खर्च की सीमा बढ़ाकर छह हजार रुपए कर दी जाए।

भवदीय

(राकेश कुमार) निदेशक

ध्यान देने योग्य बातें-

- सरकारी पत्र औपचारिक पत्र की श्रेणी में आते हैं।
- प्रायः ये पत्र एक कार्यालय, विभाग अथवा मंत्रालय से दूसरे कार्यालय, विभाग या मंत्रालय को लिखे जाते हैं।
- पत्र के शीर्ष पर कार्यालय, विभाग या मंत्रालय का नाम व पता लिखा जाता है।
- पत्र के बाईं तक फ़ाइल संख्या लिखी जाती है जिससे यह स्पष्ट हो सके कि पत्र किस विभाग द्वारा किस विषय के तहत कब लिखा जा रहा है।
- जिसे पत्र लिखा जा रहा है उसका नाम, पता आदि बाईं तरफ लिखा जाता है। कई बार अधिकारी का नाम भी दिया जाता है।
- 'सेवा में' का प्रयोग धीरे-धीरे कम हो रहा है।
- 'विषय' शीर्षक के अंतर्गत संक्षेप में यह लिखा जाता है कि पत्र किस प्रयोजन के लिए या किस संदर्भ में लिखा जा रहा है।
- विषय के बाद बाईं तरफ 'महोदय' संबोधन लिखा जाता है।
- पत्र की भाषा सरल एवं सहज होनी चाहिए। क्लिष्ट शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिए।
- अनेक बार सटीक अर्थ प्रेषित करने के लिए प्रशासनिक शब्दावली का प्रयोग करना ही उचित होता है।
- इस पत्र के बाईं ओर प्रेषक का पता और तारीख दी जाती है।
- पत्र के अंत में 'भवदीय' शब्द का प्रयोग अधोलेख के रूप में होता है।
- 'भवदीय' के नीचे पत्र भेजने वाले के हस्ताक्षर होते हैं। हस्ताक्षर के नीचे कोष्ठक में पत्र लिखने वाले का नाम मुद्रित होता है। नाम के नीचे पदनाम लिखा जाता है।

प्रश्न 2. जिलाधीश टोंक (राजस्थान) की ओर से स्वास्थ्य सचिव, राजस्थान सरकार, जयपुर को निर्धारित प्रारूप में एक कार्यालयी पत्र लिखिए जिसमें उनसे अपने क्षेत्र में फैली हुई रहस्यमय बीमारी से ग्रामीण जनता को राहत दिलवाने के लिए राजधानी के विशेष चिकित्सकों का एक दल भेजने के लिए निवेदन कीजिए।

उत्तर :

राजस्थान सरकार
कार्यालय, जिलाधीश टोंक
पत्रांक - जि./स्वा/14 - 15/175 - 76
दिनांक - 5 मई, 20_ _
सेवा में
श्रीमान् स्वास्थ्य सचिव
राजस्थान सरकार, जयपुर।
विषय - रहस्यपूर्ण बीमारी से राहत दिलवाने हेतु चिकित्सकीय सहायता के सन्दर्भ में।
महोदय,
उपर्युक्त विषयान्तर्गत सूचनार्थ निवेदन है कि टोंक जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में एक अज्ञात बीमारी से विगत 3 दिनों में 07 लोग मौत के शिकार हो गए हैं। इस बीमारी में रोगी को तीव्र ज्वर आता है और वह पेट दर्द के साथ प्राण त्याग देता है। स्थानीय चिकित्सक इस बीमारी का निदान नहीं कर पा रहे हैं।

अतः इस महामारी पर शीघ्र नियन्त्रण हेतु राजधानी से चिकित्सकों का एक दल तत्काल भिजवाने का कष्ट करें, ताकि संत्रस्त जनता को राहत प्रदान की जा सके।

सादर
भवदीय
(हस्ताक्षर)
जिलाधीश, टोंक
पृष्ठांकन सं. : जि./स्वा/14 - 15/175 - 76
दिनांक - 5 मई, 20_ _
प्रतिलिपि सूचनार्थ -
1. श्रीमान् स्वास्थ्य मन्त्री, राजस्थान सरकार
2. श्रीमान् प्रमुख सचिव, राजस्थान सरकार, जयपुर।
3. मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी, टोंक
4. कार्यालय प्रति।
(हस्ताक्षर).
जिलाधीश, टोंक

प्रश्न 3. जिला शिक्षा अधिकारी, इन्दौर की ओर से एक कार्यालयी पत्र प्रधानाचार्य, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय रामगढ़, इन्दौर को लिखिए जिसमें कक्षा 10 के कमजोर विद्यार्थियों को गणित, अंग्रेजी एवं विज्ञान विषयों के अध्यापन के लिए अतिरिक्त कक्षाओं का प्रावधान सुनिश्चित किया गया है।

उत्तर :

कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी इन्दौर (म. प्र.)
पत्रांक जिशि आइ/14 - 15/161 - 163
दिनांक - 10 - 12 - 2022
श्रीमान् प्रधानाचार्य
रा. उ. मा. वि. रामगढ़,
जिला - इन्दौर (म. प्र.)
विषय - कमजोर विद्यार्थियों के लिए अतिरिक्त कक्षाओं के सन्दर्भ में।
मान्यवर,

उपर्युक्त सन्दर्भ एवं विषयान्तर्गत उल्लेख है कि विगत तीन वर्षों से आपके विद्यालय की कक्षा X का परीक्षा परिणाम गुणात्मक एवं परिमाणात्मक दृष्टि से अपेक्षानुरूप नहीं रहा है। इस हेतु कक्षा X के कमजोर विद्यार्थियों के लिए गणित, अंग्रेजी एवं विज्ञान विषयों में अतिरिक्त कक्षाओं का प्रावधान सुनिश्चित करें। आवश्यकता होने पर सेवानिवृत्त शिक्षकों अथवा वरिष्ठ प्राध्यापकों की सेवाएँ भी ली जा सकती हैं। उक्त विषयों में अर्द्धवार्षिक परीक्षा - परिणाम के आधार पर कमजोर विद्यार्थियों की सूची तथा आदेश अनुपालन की सूचना इस कार्यालय को भिजवाएँ।

भवदीय
(हस्ताक्षर)
जिला शिक्षा अधिकारी (माध्य.)
इन्दौर
पृष्ठांकन सं. जिशि आइ/14 - 15/161 - 163
दिनांक - 10 -12-2022
प्रतिलिपि सूचनार्थ
1. श्रीमान् शिक्षा निदेशक महोदय, भोपाल।
2. श्रीमान् शिक्षा उपनिदेशक महोदय, इन्दौर।
3. कार्यालय प्रति
(हस्ताक्षर)
जिला शिक्षा अधिकारी (माध्य.)
इन्दौर

प्रश्न 4. शिक्षा निदेशक (माध्यमिक), राजस्थान, जयपुर की ओर से एक पत्र निर्धारित प्रारूप में समस्त जिला विद्यालय निरीक्षक, राजस्थान को लिखिए जिसमें माध्यमिक शिक्षा परिषद्, राजस्थान की परीक्षाओं की उत्तर पुस्तिकाओं के मूल्यांकन से सम्बन्धित कार्यों के भुगतान के बारे में निर्देश दीजिए।

उत्तर :

कार्यालय शिक्षा निदेशक (माध्य.) राजस्थान
प्रेषक
शिक्षा निदेशक (माध्य.)
राजस्थान, जयपुर।
पत्रांक : डी. ई/मा. शि. प./400 - 4961 2014 - 2015
दिनांक - 10 - 12 – 2022
सेवा में
समस्त जिला विद्यालय निरीक्षक
राजस्थान।
विषय : माध्यमिक शिक्षा परिषद् राजस्थान की सैकेण्डरी तथा सीनियर सैकेण्डरी की परीक्षाओं से सम्बन्धित कार्यों के भुगतान के सम्बन्ध में।
महोदय,
आजकल माध्यमिक शिक्षा परिषद् राजस्थान की सैकेण्डरी/सी. सैकेण्डरी परीक्षाएँ संचालित हो रही हैं। ये परीक्षाएँ 10 अप्रैल, 20_ _ को समाप्त हो जाएँगी। मूल्यांकन कार्य 18 अप्रैल, 20_ _ से प्रारम्भ होने जा रहा है। परीक्षा समाप्ति के उपरान्त परीक्षा ड्यूटी में लगे सभी शिक्षकों/कर्मचारियों के पारिश्रमिक के देयक भुगतान हेतु प्राप्त होंगे। इसी प्रकार मूल्यांकन कार्य की समाप्ति के उपरान्त मूल्यांकन कार्य में लगे परीक्षकों/कर्मचारियों के पारिश्रमिक के देयक भुगतान हेतु प्राप्त होंगे। यह आवश्यक है कि परीक्षा कार्य में संलग्न सभी शिक्षकों एवं कर्मचारियों के पारिश्रमिक का भुगतान वरीयता के आधार पर किया जाए। इस सम्बन्ध में आवश्यक धनराशि आपको सम्बन्धित मदों में परिषद् द्वारा उपलब्ध कराई जा चुकी है।

अत: आपको निर्देश दिए जाते हैं कि परीक्षा समाप्ति के एक सप्ताह के भीतर केन्द्र - व्यवस्थापकों, अतिरिक्त केन्द्र - व्यवस्थापकों कक्ष - निरीक्षकों एवं परीक्षा कार्य से जुड़े हुए अन्य सभी कर्मचारियों के समस्त देयकों को पारित कराकर उनका भुगतान करा दिया जाए। इसी प्रकार मूल्यांकन समाप्ति के पश्चात् एक सप्ताह के भीतर मूल्यांकन से जुड़े परीक्षकों व अन्य कर्मचारियों का भुगतान कराया जाना सुनिश्चित किया जाए।

भवदीय

हस्ताक्षर .....

शिक्षा निदेशक (मा.)

राजस्थान, जयपुर

प्रश्न 5. शिक्षा निदेशक, हरियाणा सरकार, अम्बाला की ओर से एक पत्र राजकीय उ. मा. विद्यालय अम्बाला को लिखिए, जिसमें हिन्दी प्रवक्ताओं के दो अतिरिक्त पदों के अनुमोदन की सूचना दी गई हो।

उत्तर :

माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, हरियाणा सरकार,

पत्रांक : ख-8/रा.वि/118-14/पी/14-15

दिनांक - 10 - 12 - 2022

प्रेषक

शिक्षा निदेशक (मा.)

हरियाणा सरकार

सेवा में,

प्राचार्य

राजकीय सी. सै. विद्यालय

अम्बाला हरियाणा

विषय : हिन्दी प्रवक्ताओं के दो अतिरिक्त पदों का अनुमोदन

महोदय,

आपके पत्रांक 130/ए.स./01 - 140 दिनांक 14.07.2022 के सन्दर्भ में मुझे यह सूचित करना है कि निदेशालय ने आपके विद्यालय में हिन्दी के दो नए प्रवक्ताओं के पदों का अनुमोदन कर दिया है। इनकी नियुक्ति हेतु आप माध्यमिक शिक्षा सेवा आयोग, हरियाणा से सम्पर्क करें। हरियाणा लोक सेवा आयोग से चयनित प्रवक्ताओं की सूची प्राप्त होने तक आप अस्थायी रूप से दैनिक वेतन पर गेस्ट फैकल्टी योजनान्तर्गत प्रवक्ताओं की नियुक्ति कर सकते हैं।

(हस्ताक्षर)

मा. शिक्षा निदेशक

अम्बाला

पृष्ठांकन सं. ख-8/हरि/वि.118-14 पी.14-15

दिनांक 10 – 12 -2022

प्रतिलिपि सूचनार्थ :

1. शिक्षा उपनिदेशक, अम्बाला।
2. जिला शिक्षा अधिकारी, अम्बाला।
3. सचिव मा. शि. सेवा आयोग, हरियाणा।

(हस्ताक्षर)

माध्यमिक शिक्षा निदेशक

डायरी लिखने की कला और कथा-पटकथा (कुल अंक 6)

कक्षा ग्यारहवीं की वार्षिक परीक्षा में इन प्रकरणों पर आधारित तीन-तीन अंक के दो प्रश्न (विकल्प सहित) पूछे जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखना होगा।

डायरी लिखने की कला

प्रश्न 1. डायरी-लेखन क्या है ? कुछ प्रसिद्ध डायरियों और डायरी लेखकों के नाम भी बताइए।

उत्तर- हमारे दैनिक जीवन में अनेक घटनाएं घटती हैं। दिन भर में हम जिन घटनाओं, विचारों और गतिविधियों से निरंतर गुज़रते हैं, उन्हें डायरी के पृष्ठों पर शब्दबद्ध कर लेना ही डायरी-लेखन है। अत्यंत निजी स्तर पर घटित घटनाओं और उससे संबंधित बौद्धिक तथा भावनात्मक प्रतिक्रियाओं का लेखा-जोखा ही डायरी कहलाता है।

प्रसिद्ध डायरियों और उनके लेखकों के नाम निम्नलिखित हैं-

(i) मोहन राकेश की डायरी।

(ii) पैरों में पंख बाँध कर-रामवृक्ष बेनीपुरी।

(iii) रूस में पच्चीस मास-राहुल सांकृत्यायन।

(iv) सुदूर दक्षिणपूर्व-सेठ गोविंददास।

(v) एक साहित्यिक की डायरी-गजानन माधव मुक्तिबोध।

(vi) हरी घाटी-डॉ० रघुवंश।

प्रश्न 2. डायरी लिखते समय किन-किन बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए ?

उत्तर- डायरी लिखते समय हमें निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए -

(i) डायरी किसी नोटबुक या पिछले साल की डायरी में लिखी जानी चाहिए। इसका कारण यह है कि यदि हम वर्तमान वर्ष की डायरी तिथि अनुसार लिखेंगे तो उसमें एक दिन के लिए दी गई जगह कम या अधिक हो सकती है। इससे हमें भावों की अभिव्यक्ति को उसी सीमा में बाँधना पड़ेगा।

(ii) डायरी लिखते समय स्वयं तय करें कि आप क्या सोचते हैं और स्वयं को क्या कहना चाहते हैं। दिन भर की घटनाओं में से मुख्य घटना अथवा गतिविधि का चयन करने के बाद ही उसे शब्दबद्ध करें।

(iii) डायरी अत्यंत निजी वस्तु है। इसे सदा यही मानकर लिखें कि उसके पाठक भी आप स्वयं हैं और लेखक भी। इससे भाषा-शैली स्वाभाविक बनी रहती है।

(iv) डायरी में भाषा की शुद्धता और शैली की विशेषता पर ध्यान नहीं देना चाहिए। मन के भावों को स्वाभाविक रूप से जिस रूप में भी प्रस्तुत किया जाए, वही डायरी की शैली होती है।

(v) डायरी समकालीन इतिहास होता है। अतः डायरी लिखते समय हमें इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए। डायरी में डायरी लेखक के भावों और तत्कालीन समाज को स्पष्ट देखा जा सकता है।

प्रश्न 3. डायरी लिखने के क्या उपयोग हैं ?

उत्तर- डायरी के निम्नलिखित उपयोग हैं –

1 . डायरी खुद को बेहतर तरीके से समझने में मदद करती है।

2 . अपने विचारों के आंतरिक दबाव से मुक्त हो सकते हैं।

3 . अपने व्यक्तित्व के विस्मृत होते पहलुओं को पुन: स्मरण कर सकते हैं।

4 . तिथि विशेष से संबंधित सूचनाओं अथवा अपनी निजी बातों को लिखकर सहेज सकते हैं।

इसके अलावा डायरी के निम्नलिखित उपयोग भी हैं –

किसी विशेष तिथि पर यदि हमें कोई विशेष कार्य करना है अथवा कहीं जाना है तो उससे संबंधित सूचना पहले से ही उस तिथि वाले पृष्ठ पर लिख दी जाती है। इससे उक्त तिथि के आने पर हमें किए जाने वाले कार्य याद आ जाते हैं। हमारे दिन-प्रतिदिन के अनुभवों को भी हम उस तिथि

के पृष्ठ पर लिख कर अपने अनुभवों को सुरक्षित रख सकते हैं। कुछ लोग अपने दैनिक आय-व्यय का विवरण, धोबी-दूध का हिसाब, बच्चों की शरारतों आदि को भी डायरी में लिखते हैं

प्रश्न 4. डायरी-लेखन खुद के साथ साक्षात्कार कैसे है ?

उत्तर-डायरी में लेखक अपने जीवन में घटित होने वाली घटनाओं, अनुभवों आदि का विवरण प्रत्येक तिथि के अनुसार लिखते रहते हैं। हम अपनी डायरी में उन बातों को भी लिख देते हैं, जिन्हें हम किसी दूसरे व्यक्ति को नहीं बता सकते। इस प्रकार हम डायरी पर लिखते समय अपनी बातें स्वयं को ही बताते हैं। इससे हमारा अपने आप से ही संवाद स्थापित हो जाता है। इससे हमें हमारी अच्छाइयों और बुराइयों का ज्ञान हो जाता है। हम स्वयं को अच्छी प्रकार से समझ पाते हैं तथा जहाँ कमियाँ हैं उन्हें दूर करने का प्रयास करते हैं। हमें जब भी आवश्यकता होती है हम डायरी के पिछले पृष्ठों को पढ़कर अपने अतीत को स्मरण कर सकते हैं। इस प्रकार डायरी-लेखन हमें अपने अंतरंग के साथ साक्षात्कार करने का अवसर प्रदान करता है।

प्रश्न 5. डायरी एक व्यक्तिगत दस्तावेज़ कैसे है ?

उत्तर-डायरी में हम अपने जीवन के कुछ विशेष क्षणों में घटित अनुभवों, विचारों, घटनाओं, मुलाकातों आदि का विवरण लिखते हैं। यदि हम इन विवरणों को उसी तिथि विशेष पर नहीं लिखते तो संभव है कि हम उस विशेष क्षण में घटित अनुभव को भूल जाएँगे और फिर कभी उसे स्मरण नहीं कर पाएंगे। डायरी में लिखित विवरण हमें भूलने से बचाते हैं। उदाहरण के लिए यदि हम किसी पर्यटन स्थल पर जाते हैं और वहाँ पर अनेक स्थलों को देखते हैं। यदि हम प्रत्येक स्थल की यात्रा का विवरण उसी दिन अपनी डायरी में लिख लेते हैं तो हम अपने अनुभव को पूर्ण रूप से सुरक्षित रख सकते हैं तथा अवसर मिलने पर इसे पढ़कर उस यात्रा का फिर से पूरा आनंद उठा सकते हैं। यदि हम यात्रा से लौट कर सारा विवरण लिखना चाहें तो संभव नहीं हो पाएगा। हम अनेक विवरण लिखना छोड़ जाएंगे। डायरी से जब हम अपने विगत को पढ़ते हैं तो यह हमारा एक व्यक्तिगत दस्तावेज़ बन जाता है।

प्रश्न 6. डायरी कैसे और किस में लिखनी चाहिए ?

उत्तर-डायरी सामान्यत: सोने से पूर्व दिनभर की गतिविधियों को स्मरण करते हुए लिखनी चाहिए। डायरी किसी नोट बुक या पुरानी डायरी में उस दिन की तिथि डाल कर लिखनी चाहिए क्योंकि कई बार नए साल की डायरी की तिथियों में दिया गया खाली पृष्ठ हमें अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए कम लगता है अथवा कभी हम दो-चार पंक्तियों में ही अपनी बात लिखना चाहते हैं। इसलिए नए साल की डायरी के पृष्ठों की तिथियों तक स्वयं को सीमित रखने के स्थान पर यदि हम किसी नोटबुक अथवा पुराने साल की डायरी में अपनी सुविधा के अनुसार तिथियाँ डालकर अपने विचारों और अनुभवों को लिपिबद्ध करेंगे तो हम स्वयं को खुले मन से अभिव्यक्त कर सकते हैं।

प्रश्न 7. डायरी-लेखन की भाषा-शैली कैसी होनी चाहिए?

उत्तर-डायरी लिखते समय किसी विशेष लेखन शैली की आवश्यकता नहीं होती । हमें सहज, व्यावहारिक तथा आडंबरहीन भाषा-शैली का प्रयोग करना चाहिए। मानव एवं साहित्यिक भाषा-शैली के प्रयोग के मोह में हम डायरी में अपनी भावनाओं को सहज रूप से व्यक्त नहीं कर सकते। डायरी में भावों को सर्वत्र सहजता से प्रकट होने का अवसर मिलना चाहिए। मन में उत्पन्न भाव अत्यंत सरलता से शब्दों में ढलते जाने चाहिए। डायरी-लेखन प्रत्येक अच्छी-बुरी बात को सहज रूप से लिखा जाता है। डायरी में आप अपनी बात जैसे चाहें और जिस ढंग से चाहें लिख सकते हैं। यही डायरी की भाषा-शैली की विशेषता है। डायरी की भाषा-शैली समस्त बंधनों से मुक्त होती है।

पटकथा लेखन

प्रश्न 1. 'पटकथा' से क्या तात्पर्य है?

उत्तर- पटकथा शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है- **'पट'** और **'कथा'**। इनमें 'पट' शब्द का अर्थ है-**परदा** और 'कथा' शब्द का अर्थ है- **कहानी**। इस प्रकार 'पटकथा' शब्द से तात्पर्य ऐसी कहानी से है जो परदे पर दिखायी जाए। परदा छोटा अथवा बड़ा कोई भी हो सकता है। कहने का भाव यह है कि जो कहानी टेलीविज़न अथवा सिनेमा में दिखाए जाने के लिए लिखी जाती है, उसे पटकथा कहा जाता है। पटकथा के आधार पर ही निर्देशक फ़िल्म अथवा धारावाहिक की शूटिंग की योजना बनाता है। अभिनेता, कैमरामैन, तकनीशियन, सहायक आदि भी पटकथा के आधार पर ही अपना-अपना कार्य करते हैं।

प्रश्नः 2. पटकथा लिखते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना ज़रूरी है और क्यों?

उत्तरः पटकथा लिखते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए।

1 . दृश्य संख्या के साथ दृश्य का घटना स्थल भी लिखना चाहिए जैसे-कमरा, बरामदा, पार्क, बस स्टैण्ड, हवाई अड्डा, सड़क आदि।

2.प्रत्येक दृश्य के साथ होने वाली घटना के समय का संकेत दिया जाना चाहिए। जैसे -सुबह, दुपहर आदि ।

3. पात्रों की गतिविधियों के संकेत भी प्रत्येक दृश्य के प्रारंभ में देने चाहिए। जैसे-रजनी चपरासी को घूर रही है, चपरासी मज़े से स्टूल पर बैठा है। साहब मेज़ पर पेपरवेट घुमा रहा है। फिर घड़ी देखता है।

4.किसी भी दृश्य का विभाजन करते समय ध्यान रखा जाए कि किन आधारों पर हम दृश्य विभाजन कर रहे हैं।

5 . प्रत्येक दृश्य के साथ होने वाली घटना की सूचना देनी चाहिए।

6 . पात्रों के संवाद बोलने के ढंग के निर्देश भी दिए जाने चाहिए; जैसे-रजनी (अपने में ही भुनभुनाते हुए)।

7 . प्रत्येक दृश्य के अंत में डिज़ॉल्व टू , फ़ेड आउट, कट टू जैसी जानकारी अवश्य देनी चाहिए। इससे निर्देशक, एडीटर आदि को बहुत सहायता मिलती है।

प्रश्न 3. पटकथा की कथा का स्रोत कहाँ से मिलता है ?

उत्तर-पटकथा की कथा का स्रोत कुछ भी हो सकता है। हमारे स्वयं के साथ घटी कोई घटना अथवा हमारे आस-पास घटी कोई घटना भी पटकथा का आधार बन सकती है। इसके अतिरिक्त अखबार में छपा कोई समाचार, हमारी कल्पना से अपनी कोई कहानी, इतिहास में वर्णित कोई व्यक्तित्व, कोई सच्चा किस्सा अथवा साहित्य की किसी प्रसिद्ध रचना पर पटकथा लिखी जा सकती है। प्रसिद्ध साहित्यिक रचनाओं को तो बहुत बार पटकथा का आधार बनाया गया है। उदाहरण के रूप में शरत्चंद्र चट्टोपाध्याय के प्रसिद्ध उपन्यास 'देवदास' पर तीन बार फ़िल्म बनाई जा चुकी है।

प्रश्न 4. पटकथा की संरचना कैसे होती है ?

उत्तर- पटकथा की संरचना नाटक की संरचना से मिलती जुलती है। फिल्म तथा दूरदर्शन की पटकथा में पात्र-चरित्र, नायक-प्रतिनायक, घटनास्थल, दृश्य, कहानी का क्रमिक विकास, द्वन्द्व , समाधान आदि सभी कुछ होता है। इसमें छोटे-छोटे दृश्य, असीमित घटनास्थल होते हैं। इसकी कथाफ़्लैशबैक अथवा फ़्लैश फ़ॉरवर्ड तकनीक से किसी भी प्रकार से प्रस्तुत की जा सकती है। फ़्लैशबैक से अतीत में हो चुकी और फ़्लैश फ़ारवर्ड से भविष्य में होने वाली घटनाओं को प्रस्तुत किया जाता है। इसमें एक ही समय में अलग-अलग स्थानों पर घटित घटनाओं को भी दिखाया जा सकता है। कथानक को विभिन्न दृश्यों में बदलते हुए अंत की ओर ले जाया जाता है।

प्रश्न 5. मंच के नाटक और फ़िल्म की पटकथा में क्या अंतर होता है ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- मंच के नाटक और फ़िल्म की पटकथा में कुछ मूलभूत अंतर होते हैं। ये अंतर निम्नलिखित हैं-

(i) नाटक के दृश्य बहुत लंबे-लंबे होते हैं जबकि फ़िल्म के दृश्य छोटे होते हैं।

(ii) नाटक में घटनास्थल प्रायः सीमित होते है जबकि फ़िल्म में इसकी कोई सीमा नहीं होती।

(iii) नाटक एक सजीव कला माध्यम है जिसमें अभिनेता अपने ही जैसे जीवंत दर्शकों के सामने अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं जबकि सिनेमा में यह पूर्व रिकॉर्डिंग छवियाँ एवं दृश्य होते हैं।

(iv) नाटक में कार्य-व्यापार, दृश्यों की संरचना और चरित्रों की संख्या सीमित रखनी होती है जबकि सिनेमा में ऐसा कोई बंधन नहीं होता।

(v) नाटक की कथा का विकास एक-रेखीय होता है, जो एक ही दिशा में आगे बढ़ता है जबकि सिनेमा में कथा का विकास कई प्रकार से होता है।

प्रश्नः 6.फ़्लैशबैक तकनीक और फ़्लैश फ़ॉरवर्ड तकनीक के दो-दो उदाहरण दीजिए। आपने कई फ़िल्में देखी होंगी। अपनी देखी किसी एक फ़िल्म को ध्यान में रखते हुए बताइए कि उनमें दृश्यों का बँटवारा किन आधारों पर किया गया।

उत्तरः फ़्लैशबैक तकनीक वह होती है जिसमें अतीत में घटी हुई किसी घटना को दिखाया जाता है। फ़्लैश फ़ॉरवर्ड वह तकनीक है जिसमें भविष्य में होनी वाली किसी घटना को पहले दिखा देते हैं। पाठ्यपुस्तक 'आरोह' की कहानी 'गलता लोहा' में मोहन जब घर से हँसुवे की धार लगवाने के लिए शिल्पकार टोले की ओर जाने लगता है तो वह फ़्लैशबैक में चला जाता है और उसे याद आ जाती है स्कूल में प्रार्थना करना। इसी कहानी में मोहन का लखनऊ पहुंचकर मुहल्ले में सब के लिए घरेलू नौकर जैसा काम करना।

'गलता लोहा' कहानी में ही मोहन को जब मास्टर त्रिलोक सिंह ने पूरे स्कूल का मॉनीटर बनाकर उस पर बहुत आशाएँ लगा रखी थीं। उस समय मोहन फ़्लैशफॉरवर्ड में जाकर सोच सकता है कि वह एक बहुत बड़ा अफ़सर बन गया है और उसके पास अनेक लोग अपना काम करवाने आये हैं। मोहन जब लखनऊ पढ़ने जाता है तो वहाँ की भीड़-भाड़ देखकर फ़्लैशफॉरवर्ड में जाकर सोचता है कि वह भी अच्छे-अच्छे कपड़े पहनकर बस में बैठकर बहुत बड़े स्कूल में पढ़ने जा रहा है। 'शोले' फ़िल्म में वीरू का टंकी पर चढ़ना, धन्नो का तांगा चलाना, गब्बर सिंह का पहाड़ियों पर अपने साथियों के साथ वार्तालाप, डाकुओं से लड़ाई आदि दृश्य घटनाओं के आधार पर बदल जाते हैं।

प्रश्न 7. वर्तमान समय में पटकथा लिखने में कंप्यूटर हमारी किस प्रकार सहायता कर सकता है ?

उत्तर- पटकथा लिखने में भी कंप्यूटर की सहायता ली जा सकती है। आजकल कंप्यूटर पर ऐसे सॉफ्टवेयर आ गए हैं जिनमें पटकथा-लेखन का प्रारूप बना बनाया होता है। यदि पटकथा-लेखन में कोई गड़बड़ी हुई है तो भी कंप्यूटर बता देता है कि कहाँ और क्या गड़बड़ी हुई है। ये सॉफ्टवेयर पटकथा में सुधार लाने के सुझाव भी पटकथा-लेखक को देते हैं। इन सुझावों को मानना या न मानना पटकथा-लेखक की इच्छा पर निर्भर करता है।

प्रश्न 8. पटकथा की मूल इकाई क्या और कैसे है ?

उत्तर-पटकथा की मूल इकाई दृश्य होता है। एक दृश्य का निर्माण एक स्थान पर एक ही समय में लगातार चल रहे कार्य व्यापार के आधार पर होता है। यदि इन में से किसी एक में भी कोई परिवर्तन होता है तो सारा दृश्य ही बदल जाता है। उदाहरण के लिए 'आरोह' के 'रजनी' पाठ में दृश्य एक लीला बेन के फ़्लैट का है। समय दोपहर का। उनका बेटा अमित स्कूल से वापस आने वाला है। दूसरा दृश्य अगले दिन का है। समय दिन का। स्थान अमित के स्कूल के हेडमास्टर का कमरा है। तीसरा दृश्य उसी दिन का है। समय शाम का। स्थान रजनी का फ़्लैट है। इस प्रकार ये तीनों दृश्य अलग-अलग स्थान के हैं इसलिए बदल गए हैं।

स्ववृत्त लेखन(बायोडेटा) लेखन और रोजगार संबंधी आवेदन पत्र (4 अंक)

प्रश्न : 1 स्ववृत्त से क्या अभिप्राय है ?

उत्तर: स्ववृत्त का अंग्रेजी अर्थ बायोडाटा होता है। जब आप किसी संस्थान में नौकरी करने हेतु जाते हैं तो अपने बारे में जानकारी एक पेज में लिख कर देते हैं, जिसमें आपकी व्यक्तिगत और शैक्षिक जानकारी होती है, यह जानकारी ही साबित यानी बायोडाटा कहलाता है। स्ववृत्त हिंदी का शब्द है इसमें 'स्व' का अर्थ खुद होता है। वृत्त का अर्थ जीवन से जुड़ी हुई आपकी व्यक्तिगत जानकारी। यह सारी जानकारी उस कंपनी को मदद करता है कि किस तरह के कैंडिडेट का वह चयन करें। इस बायोडाटा में आपकी सारी योग्यता और व्यक्तिगत विवरण (सूचना) होता है। जब हम अपने बारे में शैक्षिक, व्यवसायिक और व्यक्तिगत जानकारी लिखते हैं तो इस लेखन को स्ववृत्त लेखन कहा जाता है।

प्रश्न :2 स्ववृत्त लेखन के समय किन-किन बातों पर ध्यान देना चाहिए ?

उत्तर: अगर आप स्ववृत्त लेखन लिख रहे हैं तो आपको दो पहलुओं पर ध्यान देना है। सबसे पहले आप अपनी व्यक्तिगत सूचना देंगे जिसमें आप एक कैंडिडेट के तौर पर अपने बारे में बताएंगे। दूसरी बात यह है कि आप जिस संस्था के लिए बायोडाटा बना रहे हैं या जिस संस्था (institution) में नौकरी करना चाहते हैं, उस नियोक्ता (रिक्रूमेंट करने वाला) संस्था की आवश्यकता को ध्यान में रखकर अपने बारे में सूचना देना यानि स्ववृत्त लेखन (इंफॉर्मेशन बायोडाटा) में रखना महत्त्वपूर्ण होता है।

प्रश्न :3 स्ववृत्त लेखन का महत्त्व बताएँ।

उत्तर: आप किसी नियोक्ता (नौकरी देने वाला) को आवेदन पत्र प्रस्तुत करते हैं तो इसमें आपका बायोडाटा यानी स्ववृत्त महत्त्वपूर्ण होता है। स्ववृत्त से नियोक्ता यानी जवाब देने वाला कैंडिडेट या प्रतिनिधि के बारे में जानकारी हासिल कर पाते हैं। अगर आप अपने बारे में सुंदर और अच्छे शब्दों में खुद को व्यक्त करते हैं, और जिस पोस्ट के लिए आपने आवेदन दिया है, उसके अनुसार आप स्वयं के बारे में सकारात्मक बातें लिखते हैं तो इस तरह से स्ववृत्त-लेखन की वजह से आपको साक्षात्कार में अवसर दिया जाता है। नौकरी मिलने के मौके बढ़ जाते हैं।

प्रश्न : 4 स्ववृत्त की क्या विशेषताएँ होती हैं। बायोडाटा हिंदी में कैसे लिखे जाते हैं? इस लेखन में खास बात क्या है?

उत्तर:

- स्ववृत्त अच्छी लिखावट में लिखा होना चाहिए या कंप्यूटर से प्रिंटेड होना चाहिए।
- स्ववृत्त लेखन में व्याकरण की गलतियाँ नहीं होनी चाहिए। नहीं तो इसका नकारात्मक प्रभाव हाथ के व्यक्तित्व पड़ता है।
- आप जो सूचना दे रहे हैं, वह क्रम के अनुसार व्यवस्थित रूप से होना चाहिए ताकि नियोक्ता को आपका बायोडाटा पढ़ने में आसानी हो।
- बायोडाटा में दी गई सभी सूचनाएँ सही होनी चाहिए गलत और झूठ नहीं बताना चाहिए।
- अपनी खूबी और अच्छाइयाँ बताने में पीछे नहीं रहना चाहिए बल्कि इसे खुलकर बताना चाहिए।
- अपने स्ववृत्त लेखन में कविता वाली भाषा यानी अलंकार वाली भाषा का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे सूचना समझ में नहीं आएगी।
- स्ववृत्त लेखन की शैली सरल सुबोध,सीधी,सटीक और साफ-सुथरी होनी चाहिए।

प्रश्न : 5 स्ववृत्त लेखन का रूप और आकार स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: हिंदी बायोडाटा यानी स्ववृत्त लेखन का रूप और आकार लेखन लिखने के लिए कितनी शब्द सीमा हो यह निश्चित तो नहीं है, लेकिन स्ववृत्त लेखन बहुत लंबा नहीं होना चाहिए।

मान लीजिए आप किसी कंपनी के डायरेक्टर पद के लिए आवेदन कर रहे हैं तो पृष्ठों की संख्या 9 से 10 हो सकती है ,क्योंकि यहाँ पर योग्यता और अनुभव की बहुत आवश्यकता होगी।

लेकिन सामान्य पदों के लिए स्ववृत्त लेखन दो या तीन पेजों से अधिक बड़ा नहीं होना चाहिए।

स्ववृत्त लेखन का प्रारूप

नाम

पिता का नाम

माता का नाम

जन्मतिथि

वर्तमान पता

स्थायी पता

दूरभाष संख्या

मोबाइल संख्या

ईमेल- पता

शैक्षणिक योग्यताएँ :

क्रम संख्या परीक्षा/ डिग्री /डिप्लोमा वर्ष बोर्ड / विश्वविद्यालय विषय श्रेणी प्राप्तांक

- अन्य संबंधित योग्यताएँ-
- उपलब्धियाँ –
- गैर-शैक्षणिक गतिविधियाँ
- प्रतिष्ठित व्यक्तियों का विवरण जो उम्मीदवार की योग्यता एवं क्षमताओं से परिचित हों
- सम्मानित व्यक्तियों का विवरण जो उम्मीदवार के व्यक्तित्व और उपलब्धियों से परिचित हों

दिनांक

स्थान

हस्ताक्षर

स्ववृत्त लेखन के उदाहरण

1. उत्तर प्रदेश के शिक्षा निदेशालय मे शिक्षा अधिकारी को प्राथमिक शिक्षक पद के लिए आवेदन पत्र प्रेषित करते हुए स्ववृत्त लेखन कीजिए।

सेवा में,

शिक्षा निदेशक ,

शिक्षा निदेशालय,

उत्तर प्रदेश प्रयागराज।

विषय– प्राथमिक शिक्षक पद के लिए आवेदन।

महोदय,

उत्तर प्रदेश शिक्षा निदेशालय के वेबसाइट से ज्ञात हुआ है कि विज्ञापन संख्या 29 से के संदर्भ में प्राथमिक शिक्षक पद हेतु विज्ञापन प्रकाशित हुआ है। इस पद हेतु मैं अपना आवेदन-पत्र आपकी सेवा में प्रेषित कर रहा हूँ। इसके साथ मेरा स्ववृत्त निम्नलिखित है-

नाम - मयंक कुमार

पिता का नाम - श्री अवधेश कुमार

माता का नाम - श्रीमती लता देवी

जन्मतिथि - 17 जून, 1983

वर्तमान पता 173, अमृत कॉलोनी प्रयागराज।

स्थायी पता उपर्युक्त

दूरभाष संख्या - 258*45*55

मोबाइल संख्या - 692***58**8

ईमेल- पता mक*कnk@gmकil.ग0m

शैक्षणिक योग्यताएँ:

क्रम संख्या	परीक्षा/ डिग्री /डिप्लोमा	वर्ष	बोर्ड / विश्वविद्यालय	विषय	श्रेणी	प्राप्तांक
1.	दसवीं	1998	सी० बी० एस०ई०	अंग्रेजी, हिंदी गणित, विज्ञान सामाजिक, विज्ञान	प्रथम	95%
2.	बारहवीं	2000	सी० बी० एस०ई०	अंग्रेजी, हिंदी भूगोल, इतिहास, नागरिक शास्त्र	प्रथम	96%
3.	बी० ए०	2003	कानपुर विश्वविद्यालय	हिंदी, अंग्रेजी, राजनीति शास्त्र	प्रथम	86%
4.	बी० एड०	2004	कानपुर विश्वविद्यालय	हिंदी एवं सामाजिक विज्ञान	प्रथम	87%
5.	UP TET प्राथमिक स्तर	2011	उत्तर प्रदेश अध्यापक पात्रता परीक्षा	बाल मनोविज्ञान, हिंदी,अंग्रेजी पर्यावरण, गणित	प्रथम	85%

अन्य संबंधित योग्यताएँ -

• कंप्यूटर का व्यवहारिक ज्ञान हिंदी भाषा और अंग्रेजी भाषा में टाइपिंग, पढ़ाने हेतु प्रेजेंटेशन निर्माण, वीडियो एडिटिंग, कैमरा संचलन आदि का ज्ञान

• ऑनलाइन शिक्षण का अनुभव।

• दो वर्ष का शिक्षण अनुभव

उपलब्धियाँ -

• कविता, लेखन, वाद-विवाद प्रतियोगिता में अनेक पुरस्कार प्राप्त।

• विद्यालय की बास्केटबॉल टीम का कैप्टन

गैर शैक्षणिक गतिविधियाँ

• पर्यटन का शौक

• सामाजिक गतिविधियों में भाग लेना

सम्मानित व्यक्तियों का विवरण जो उम्मीदवार के व्यक्तित्व और उपलब्धियों से परिचित हों

1. प्रो. श्याम लाल , इलाहाबाद विश्वविद्यालय
2. श्रीमती दिव्या तनेजा , निदेशक प्रयाग विद्यापीठ

दिनांक: 22 जून 2022

स्थान : प्रयागराज हस्ताक्षर:

2. **पीजीटी (हिन्दी) के पद पर आवेदन करने के लिए स्ववृत लेखन** –

वैयक्तिक विवरण

नाम - राम लाल

पिता का नाम - श्री रामानंद

माता का नाम - श्रीमती रोहणी देवी

जन्मतिथि - 15.06.1982

वर्तमान पता - 579/8 ,प्रेम नगर , सेक्टर -14 गुरूग्राम

स्थायी पता - मकान संख्या 78 ,ग्राम /पोस्ट – अलीपुर,तहसील – कोटकासिम ,अलवर (राजस्थान) 301702

दूरभाष संख्या - 0124-284756

मोबाइल संख्या - 8888888888

ईमेल- पता - xyz0000010@gmail.com

शैक्षणिक योग्यताएँ:

क्रम संख्या	परीक्षा/ डिग्री /डिप्लोमा	वर्ष	बोर्ड / विश्वविद्यालय	विषय	श्रेणी	प्राप्तांक
1.	दसवीं	1998	सी० बी० एस०ई०	अंग्रेजी, हिंदी गणित, विज्ञान सामाजिक, विज्ञान	प्रथम	95%
2.	बारहवीं	2000	सी० बी० एस०ई०	अंग्रेजी, हिन्दी. भूगोल. इतिहास ,अंगरेजी	प्रथम	96%
3.	बी० ए०	2003	दिल्ली वि. वि.	हिंदी साहित्य , अंग्रेजी, राजनीति शास्त्र	प्रथम	86%
4.	स्नातकोत्तर	2004	दिल्ली वि. वि	हिन्दी साहित्य	प्रथम	63%
5.	बी० एड०	2005	एम डी एस वि. वि. अजमेर	हिन्दी शिक्षा मनोवि.	प्रथम	70%

अन्य संबंधित योग्यताएँ-

- कंप्यूटर में 1 साल का डिप्लोमा
- योग के क्षेत्र में 6 माह का प्रशिक्षण

उपलब्धियां–

- वाद विवाद प्रतियोगिता में कॉलेज का प्रतिनिधित्व
- इन्टर कॉलेज वॉलीबाल प्रतियोगिता में प्रथम स्थान

गैर शैक्षणिक गतिविधियां / अभिरुचियाँ

- योगाभ्यास , शास्त्रीय संगीत गायन में रूचि
- सृजनात्मक लेखन कार्य करना

सम्मानित व्यक्तियों का विवरण जो उम्मीदवार के व्यक्तित्व और उपलब्धियों से परिचित हों

1. प्रो. योगेंद्र यादव , दिल्ली विश्वविद्यालय
2. श्रीमती राखी आहूजा ,प्राचार्य ,डीपीएस दिल्ली

दिनांक

स्थान हस्ताक्षर

शब्दकोश

प्रश्न 1. "शब्दकोश" का क्या अर्थ है?

उत्तर – शब्दकोश, शब्दों का ऐसा संग्रह होता है जिसमें शब्दों की वर्तनी , व्युत्पत्ति, व्याकरण निर्देश, अर्थ, परिभाषा, प्रयोग आदि का उल्लेख किया जाता है।

प्रश्न 2. शब्दकोश को भिन्नताओं के आधार पर कितने भागों में वर्गीकृत किया गया है?

उत्तर - शब्दकोश को भिन्नताओं के आधार पर निम्नलिखित भागों में वर्गीकृत किया गया है

1.एकभाषी शब्दकोश- एकभाषी शब्दकोशों से अभिप्राय ऐसे संग्रहों से है, जिनमें लक्ष्य भाषा व स्त्रोत भाषा दोनों एक ही होते हैं, उदाहरण के लिए हिंदी-हिंदी शब्दकोश, अंग्रेजी-अंग्रेजी शब्दकोश आदि।

2.द्विभाषी शब्दकोश- ऐसे संग्रह जिनमे स्त्रोत भाषा के वर्ण-विन्यास, अर्थ, प्रयोग, पर्याय आदि लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत किए जाते हैं, जैसे – हिंदी-अंग्रेजी शब्दकोश, हिंदी – उर्दू शब्दकोश, अंग्रेजी – उर्दू शब्दकोश आदि।

3.पारिभाषिक शब्दकोश- विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त होने वाले शब्दों को पारिभाषिक शब्द कहते हैं। सामाजिक विकास की परम्परा के साथ ही भाषा जटिल होती जाती है, साथ ही उसमें नवीन संकल्पनाओं का जन्म होता है, जिसके पश्चात इन संकल्पनाओं की पारिभाषिक शब्दावली निर्मित की जाती है। इस प्रकार पारिभाषिक शब्द वे हैं जिन्हें क्षेत्र विशेष में निश्चित परिभाषा में सीमित कर दिया जाता है और वे उस क्षेत्र में ठीक उसी अर्थ में प्रयुक्त होते हैं।

4.बहुभाषी शब्दकोश- कई बार कोशों में दो से अधिक भाषाओं का प्रयोग किया जाता है। यदि किसी कोश में किसी एक विशेष भाषा के शब्दों के अर्थ अथवा व्याख्याओं को एक से अधिक भाषाओं में प्रस्तुत किया जाता है, तो उसे बहुभाषी कोश कहा जाता है जैसे – तमिल-अंग्रेजी-हिंदी शब्दकोश, हिंदी- अंग्रेजी- मलयालम शब्दकोश आदि।

प्रश्न 3. किसी शब्दकोश का प्रमुख आधार क्या होता है?

उत्तर- शब्दों का संग्रह करना किसी भाषा के शब्दकोश का प्रमुख आधार क्या होता है। यह अत्यंत जटिल और लम्बी प्रक्रिया है, क्योंकि शब्दों का चयन करते समय एक बड़ी समस्या होती है कि किन शब्दों का चयन किया जाए और किन शब्दों का नहीं।

प्रश्न 4. शब्दकोश में शब्दों का संकलन किन दो स्रोतों के आधार पर किया जाता है?

उत्तर – शब्दकोश में लिखित साहित्य व लोक व्यवहार स्रोतों के आधार पर शब्दों का संकलन किया जाता है ।

1.लिखित साहित्य – लिखित साहित्य से शब्दों के चयन का अर्थ विभिन्न बोलियों एवं भाषाओं में लिखे गए साहित्य से लिए गए शब्दों से है, जिन्हें संगृहीत करके शब्दकोश में संकलित किया जाता है, जैसे संस्कृत साहित्य, उर्दू साहित्य, तमिल साहित्य आदि।

2.लोक व्यवहार – लोक व्यवहार से अभिप्राय लोगों द्वारा परस्पर बातें करते समय प्रयोग किए जाने वाले शब्दों से हैं, जो विभिन्न लोक भाषाओं या बोलियों अथवा विभिन्न संस्कृतियों से सम्पर्क स्थापित होने के कारण निर्मित होते हैं तथा प्रयोग किए जाते हैं, जैसे हिंगलिश, इंफोटेनमेंट आदि।

प्रश्न 5. शब्दकोश के महत्त्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर- वर्तमान समय में शब्दकोश का अत्यंत महत्त्व है। इसका सबसे अधिक महत्त्व यह है कि सभी शब्द हमें एक ही कोश (पुस्तक) में मिल जाते हैं और हमें जगह-जगह नहीं भटकना पड़ता । इसके माध्यम से हम अनेक शब्दों के अर्थ, सरलता से ज्ञात हो जाते हैं। साथ ही हमें किसी भी शब्द के विषय में सम्पूर्ण जानकारी प्रदान करते हैं।

प्रश्न 6. निम्न शब्दों में से हिंदी शब्दकोश के अनुसार कौन-सा शब्द पहले आएगा ?

अंकुश, अंकित, अंगद, अंजीर

उत्तर- अंकित

प्रश्न 7. शब्दकोश के अनुसार निम्न शब्दों का सही क्रम क्या होगा?

कंकाल, ककड़ी, कक्ष,क्षय

उत्तर- कंकाल, ककड़ी, कक्ष, क्षय

प्रश्न 8. शब्दकोश के अनुसार निम्न शब्दों में से कौनसा शब्द अंत में आएगा?

शबरी, श्रेष्ठ ,षट्कोष, सपाट

उत्तर- सपाट

प्रश्न 9. हिंदी शब्दकोश में अक्षर 'क्ष' किन दो वर्णों के मध्य आता है?

उत्तर- 'क' और 'ख' के मध्य

प्रश्न 10. संयुक्ताक्षर 'क्ष' किन दो वर्णों के मेल से बना है ?

उत्तर- क् + ष

संदर्भ ग्रन्थ

प्रश्न 1 संदर्भ ग्रन्थ किसे कहते है ?

उत्तर: जिस प्रकार 'शब्दकोश' में शब्दों के अर्थ दिए जाते हैं उसी प्रकार 'संदर्भ ग्रंथों' में मानव द्वारा संचित हर प्रकार की जानकारी और सूचना का ज्ञान को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

प्रश्न 2 संदर्भ ग्रन्थ कितने प्रकार के होते हैं ? इनका सबसे विशद् रूप कौन-सा है ?

उत्तर: संदर्भ ग्रन्थ कई प्रकार के होते हैं। संदर्भ ग्रन्थ का सबसे विशद् रूप 'विश्व ज्ञान कोश' है। इसमें मानव द्वारा संचित हर प्रकार की जानकारी और सूचना का संक्षिप्त संकलन होता है।

प्रश्न 3 संदर्भ ग्रंथों को क्या कहा गया है ?

उत्तर: संदर्भ ग्रंथों को गागर में सागर के समान कहा गया हैं। जब भी किसी विषय पर तुरंत जानकारी की आवश्यकता होती है। संदर्भ ग्रन्थ हमारे काम आते हैं।

प्रश्न 4 संदर्भ ग्रंथों में जानकारियों का सिलसिलेवार संकलन किसके अनुसार होता है ?

उत्तर: संदर्भ ग्रंथों में जानकारियों का सिलसिलेवार संकलन शब्दकोश' के नियमों के अनुसार ही होता है।

प्रश्न 5 संदर्भ ग्रंथों के महत्त्वपूर्ण प्रकार लिखें।

उत्तर: साहित्य कोश, चरित्र कोश, विश्व ज्ञान कोश

पठित काव्यांश आधारित अर्थ ग्रहण सम्बन्धी बहुविकल्पीय य प्रश्नोत्तर (5अंक)

प्रश्न –1 - निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए ।

हम तौ एक एक करि जाना।
दोइ कहैं तिनहीं कौ दोजग जिन नाहिंन पहिचाना।।
एकै पवन एक ही पानी एकै जोति समाना।
एकै खाक गढ़े सब भाँड़ै एकै कोंहरा साना।।
जैसे बाढ़ी काष्ट ही काटै अगिनि न काटै कोई।
सब घटि अंतरि तूँ ही व्यापक धरै सरूपै सोई।।
माया देखि के जगत लुभांनां काहे रे नर गरबाना।
निरभै भया कछू नहिं ब्यापै कहै कबीर दिवाना।

(i) नीचे दिए गए कथन और कारण को पढ़ कर सही विकल्प का चयन करें -

कथन-(क) : बढ़ई लकड़ी को तो काट सकता है किन्तु उसमें व्याप्त अग्नि को नहीं काट सकता है।

कथन (ख) : मनुष्य की अंतरात्मा में ही परमात्मा का निवास है, जिसका रूप व्यापक है।

(क) कथन (क) और कारण (ख) दोनों सही हैं और एक दूसरे की सही व्याख्या करते हैं।
(ख) कथन (क) और कारण (ख) दोनों सही हैं किन्तु एक दूसरे की सही व्याख्या नहीं करते हैं।
(ग) कथन (क) सही है किन्तु कारण (ख) गलत है।
(घ) कथन (क) गलत है किन्तु कारण (ख) सही है।

(ii) दिए गए कथन को पढ़ कर सही कूट का चयन करें -

कथन (क) कबीर ने ईश्वर के सगुण रूप की बात कही है।

कथन (ख) कबीर ने ईश्वर के निर्गुण रूप की बात कही है।

कथन (ग) कबीर ने ईश्वर के सगुण और निर्गुण दोनों रूप की बात कही है।

क- केवल कथन (क) सही है।
ख- केवल कथन (ख) सही हैI
ग- केवल कथन (ग) सही हैI
घ- कथन (क) और कथन (ख) दोनों गलत हैं।

(iii). दोइ कहैं तिनहीं कौ दोजग– से कबीर का क्या अभिप्राय है ?

(क) कण-कण में ईश्वर व्याप्त है I
(ख) ईश्वर के दो रूप हैं।
(ग) ईश्वर के भिन्न भिन्न रूपों के मानने वालों को नरक (बुरे परिणाम) मिलेगा I
(घ) उपर्युक्त सभी I

(iv).कबीर जी के ईश्वर की एकरूपता के संबंध में दिए गए तर्क के सन्दर्भ में तालिका (क) को तालिका (ख) से मिलान कीजिए --

तालिका क	**तालिका ख**
i - लकड़ी	क- मनुष्य का शरीर
ii - कुम्हार द्वारा बर्तन का निर्माण	ख- परमात्मा द्वारा एक तत्त्व से आत्मा का निर्माण
iii- लकड़ी में व्याप्त अग्नि	ग- आत्मा की अमरता

(क) i ख , ii-ग, iii-क
(ख) i-क, ii-ख, iii-ग
(ग) i-ग, ii-क, iii-ख
(घ) i-क, ii-ग, iii-ख

(v). कबीर के अनुसार संसार लुभावना क्यों लगता है?

(क) प्रेम के कारण (ख) माया के कारण

(ग) गर्व के कारण (घ) क और ग दोनों

प्रश्न –2 निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

आओ,मिलकर बचाएँ
अपनी बस्तियों को
नंगी होने से
शहर की आबो-हवा से बचाएँ उसे
बचाएँ डूबने से
पूरी की पूरी बस्ती को
हड़िया में
अपने चेहरे पर
संथाल परगना की माटी का रंग
भाषा में झारखंडीपन

(i)-नीचे दिए गए कथन और कारण को पढ़कर सही विकल्प का चयन करें -

कथन (क) : कवयित्री आदिवासी संथाल बस्ती को शहरी अपसंस्कृति से बचाने का आह्वान करती है।

कारण (ख) : बाहरी जीवन के प्रभाव से संथाल की अपनी संस्कृति नष्ट होती जा रही है।

(क) कथन (क) और कारण (ख) दोनों सही हैं और एक दूसरे की सही व्याख्या कर रहा है।

(ख) कथन (क) और कारण (ख) दोनों सही हैं किन्तु , एक दूसरे की सही व्याख्या नहीं कर रहा है।

(ग) कथन (क) सही है किन्तु कारण (ख) गलत है।

(घ) कथन (क) गलत है किन्तु कारण (ख) सही है।

(ii) दिए गए कथन को पढ़ कर सही कूट का चयन करें -

कथन (क) हमें अपनी बस्ती को शोषण से बचाना है नहीं तो पूरी बस्ती हड्डयों के ढेर में दब जाएगी।

कथन (ख) शहरी सभ्यता ने हमारी बस्तियों का पर्यावरणीय व मानवीय शोषण किया है।

कथन (ग) भाषा में झारखंडीपन न होकर बनावटीपन का प्रभाव होना चाहिए।

क- केवल कथन (क) सही है I

ख- केवल कथन (ख) सही है I

ग- केवल कथन (ग) सही है I

घ- कथन (क) और कथन (ख) दोनों सही हैं I

(iii). बस्तियों के नंगी होने का क्या आशय है ?

(क) बस्तियाँ गरीब हैं I

(ख) बस्ती के लोग फैशन वाले कपड़े पहन रहे हैं I

(ग) बस्तियों का पर्यावरण नष्ट हो रहा है I

(घ) उपर्युक्त सभी I

(iv). 'शहर की आबो-हवा' से क्या आशय है ?

(क) शहर का पर्यावरण और संस्कृति प्रदूषित होती है I

(ख) गाँवों के लोग शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं I

(ग) शहर के लोग अच्छे नहीं होते हैं I

(घ) उपर्युक्त सभी I

(v). माटी का रंग – मुहावरे का अर्थ लिखिए

(क) मिट्टी से रंग बनाकर चेहरे पर लगाना I

(ख) मिट्टी में काम करने से रंग काला हो जाना I

(ग) स्थानीय प्रभाव और गुणों का दिखाई पड़ना I

(घ) अपनी मिट्टी से प्यार होना I

प्रश्न – 3 निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

बैठे-बिठाए पकड़े जाना - बुरा तो है
सहमी-सी चुप में जकड़े जाना - बुरा तो है
पर सबसे ख़तरनाक नहीं होता
कपट के शोर में
सही होते हुए भी दब जाना - बुरा तो है
किसी जुगनू की लौ में पढ़ना - बुरा तो है
मुट्ठियाँ भींचकर बस वक़्त निकाल लेना - बुरा तो है
सबसे ख़तरनाक नहीं होता
सबसे ख़तरनाक होता है
मुर्दा शांति से भर जाना
न होना तड़प का सब सहन कर जाना
घर से निकलना काम पर
और काम से लौटकर घर आना
सबसे ख़तरनाक होता है
हमारे सपनों का मर जाना

(i). कवि ने किस स्थिति को सबसे खतरनाक माना है ?

कथन (क) सपने देखने को

कथन (ख) सपनों के मर जाने को

कथन (ग) बैठे-बिठाए पकड़े जाने को

सही कूट का चयन करें -

क- केवल कथन (क) सही है I

ख- केवल कथन (ख) सही है I

ग- केवल कथन (ग) सही है I

घ- कथन (क) और कथन (ख) दोनों सही है I

(ii)-नीचे दिए गए कथन और कारण को पढ़ कर सही विकल्प का चयन करें –

कथन (क) : सबसे खतरनाक स्थिति वह नहीं है जब व्यक्ति जीवन के उल्लास व उमंग से मुँह मोड़कर निराशा व अवसाद से घिरकर सन्नाटे में जीने का अभ्यस्त हो जाता है।

कारण (ख) : जो व्यक्ति मूक दर्शक बनकर सब कुछ चुपचाप सहन करता जाता है, ढर्रे पर आधारित जीवन जीने लगता है।

(क) कथन (क) और कारण (ख) दोनों सही हैं और एक दूसरे की सही व्याख्या कर रहें हैं।

(ख) कथन (क) और कारण (ख) दोनों सही हैं किन्तु , एक दूसरे की सही व्याख्या नहीं कर रहे हैं।

(ग) कथन (क) सही है किन्तु कारण (ख) गलत है।

(घ) कथन (क) गलत है किन्तु कारण (ख) सही है।

(iii). तालिका (क) का तालिका (ख) से मिलान कीजिए –

तालिका 'क'	तालिका 'ख'
i- किसी जुगनू की लौ में पढ़ना	क - बुरा तो है
ii हमारे सपनों का मर जाना	ख- सहमी सी-चुप में
iii व्यक्ति का जकड़ जाना	ग- सबसे खतरनाक होता है

सही कूट का चयन करें-

क- i-ख, ii-ग, iii-क

ख- i-क, ii-ख, iii-ग

ग- i-क, ii-ग, iii-ख

घ- i-क, ii-ग, iii-ख

(iv). कविता में किसे बुरा कहा गया है?

कथन (क) बैठे-बिठाए पकड़े जाने को।

कथन (ख) सहमी-सी चुप में जकड़े जाने को।

कथन (ग) सही होते हुए भी दब जाने को।

उपर्युक्त दिए गए कथनों को पढ़ कर सही कूट का चयन करें -

क- केवल कथन (क) सही है I

ख- केवल कथन (ख) सही है I

ग- केवल कथन (ग) सही है I

घ- कथन (क) (ख) और कथन (ग) तीनों सही है I

(v) कविता की कौन-सी पंक्ति 'सपनों का मर जाना' के समान अर्थ देती है ?

(क) मुर्दा शांति से भर जाना I

(ख) मुट्ठियाँ भींचकर बस वक्त निकाल लेना I

(ग) सहमी-सी चुप में जकड़े जाना I

(घ) इनमें से कोई नहीं I

प्रश्न 4- निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

हे भूख ! मत मचल
प्यास, तड़प मत
हे नींद! मत सता
क्रोध, मचा मत उथल-पुथल
हे मोह! पाश अपने ढील
लोभ, मत ललचा
हे मद ! मत कर मदहोश
ईर्ष्या, जला मत
ओ चराचर ! मत चूक अवसर
आई हूँ संदेश लेकर चन्नमल्लिकार्जुन का

(i)-नीचे दिए गए कथन और कारण को पढ़ कर सही विकल्प का चयन करें -

कथन (क) मनुष्य द्वारा अपनी इंद्रियों को वश में करने से आराध्य (शिव) की प्राप्ति की जा सकती है।

कारण (ख) : सभी भावों व वृत्तियों को मानवीय पात्रों के समान प्रस्तुत किया गया है, अत: मानवीकरण अलंकार है।

(क) कथन (क) और कारण (ख) दोनों सही हैं और एक दूसरे की सही व्याख्या कर रहे हैं।

(ख) कथन (क) और कारण (ख) दोनों सही हैं किन्तु , एक दूसरे की सही व्याख्या नहीं कर रहे हैं।

(ग) कथन (क) सही है किन्तु कारण (ख) गलत है।

(घ) कथन (क) गलत है किन्तु कारण (ख) सही है।

(ii). तालिका (क) का तालिका (ख) से मिलान कीजिए -

तालिका क	तालिका ख
i- प्यास	क – मचलना
ii - क्रोध	ख - उथल-पुथल
iii - भूख	ग - तड़प
iv- शिव	घ - चन्नमल्लिकार्जुन

सही कूट का चयन करें-

क- i-ग, ii-ख, iii-क, iv-घ

ख- i-घ, ii-ख, iii-ग, iv-क

ग- i-क, ii-ग, iii-ख, iv-घ

घ- i-क, ii-ग, iii-ख, iv-घ

(iii). कविता में किसे बुरा कहा गया है ?

कथन (क) सांसारिक सुख-सुविधाओं को पाने की I

कथन (ख) इंद्रियों के निग्रह की

कथन (ग) सुख-चैन से जीने की

दिए गए कथन को पढ़ कर सही कूट का चयन करें -

क- केवल कथन (क) सही है I

ख- केवल कथन (ख) सही है I

ग- केवल कथन (ग) सही है I

घ- कथन (क) (ख) और (ग) तीनों सही हैं I

(iv). कविता में किसको अवसर नहीं चूकने की बात कही गई है ?

(क) चर और अचर को

(ख) समस्त जीवों को

(ग) ईश्वर के भक्तों को

(घ) मनुष्यों को

(v). ईर्ष्या का हमारे ऊपर क्या प्रभाव पड़ता है?

(क) ईर्ष्या हमें कमजोर करती है I (ख) ईर्ष्या हमें ताकतवर बनाती है I

(ग) ईर्ष्या हमें सताती है I (घ) ईर्ष्या हमें जलाती है I

प्रश्न – 5 निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

चंपा कहती है:

तुम कागद ही गोदा करते हो दिन भर

क्या यह काम बहुत अच्छा है
यह सुनकर मैं हँस देता हूँ
फिर चंपा चुप हो जाती है
उस दिन चंपा आई, मैंने कहा कि
चंपा, तुम भी पढ़ लो
हारे गाढ़े काम सरेगा
गाँधी बाबा की इच्छा है-
सब जन पढ़ना-लिखना सीखें
चंपा ने यह कहा कि
मैं तो नहीं पढ़ूँगी।

i) तालिका (क) का तालिका (ख) से मिलान कीजिए -

तालिका क	**तालिका ख**
i- दिनभर लिखना	क - महात्मा गाँधी
ii- सब पढ़े लिखें-	ख -चंपा
iii- न पढ़ने का हठ	ग - कवि

सही कूट का चयन करें-

क- i-ग, ii-ख, iii-क
ख- i-क, ii-ख, iii-ग
ग- i-क, ii-ग, iii-ख
घ- i-ग, ii-क, iii-ख

(ii)-नीचे दिए गए कथन और कारण को पढ़ कर सही विकल्प का चयन करें -

कथन (क) : गाँधी जी की इच्छा थी कि सभी आदमी पढ़ना-लिखना सीखें।

कारण (ख) : चंपा का काले अक्षरों से कोई संबंध नहीं है।

(क) कथन (क) और कारण (ख) दोनों सही हैं और एक दूसरे की सही व्याख्या कर रहे हैं।
(ख) कथन (क) और कारण (ख) दोनों सही हैं किन्तु , एक दूसरे की सही व्याख्या नहीं कर रहे हैं।
(ग) कथन (क) सही है किन्तु कारण (ख) गलत है।
(घ) कथन (क) गलत है किन्तु कारण (ख) सही है।

(iii). कविता में चंपा के विषय में कही गई बातों के सन्दर्भ में दिए गए कथनों को पढ़ें -

कथन (क) चंपा की नजर में लिखने के काम की कोई महत्ता नहीं है।
कथन (ख) चंपा महात्मा गाँधी की अच्छाई या बुराई का मापदंड पढ़ने की सीख से लेती है।
कथन (ग) चंपा पढ़ने का निश्चय करती है।
दिए गए कथन को पढ़ कर सही कूट का चयन करें -

क- केवल कथन (क) सही है I
ख- केवल कथन (ख) सही है I
ग- केवल कथन (ग) सही है I
घ- कथन (क) और (ख) सही है I

(iv). कवि को चंपा की किस बात पर हँसी आती है?

(क) कागद गोदने की बात सुनकर I

(ख) चंपा के पढ़ने से इनकार करने पर I

(ग) चंपा के भोलेपन पर I

(घ) इनमें से कोई नहीं I

(v). कवि के नाम का चयन कीजिए -

(क) भवानी प्रसाद मिश्र (ख) त्रिलोचन (ग) पाश (घ) दुष्यंत कुमार

प्रश्न – 6 निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

मेरे तो गिरिधर गोपाल, दूसरो न कोई
जा के सर मोर-मुकुट, मेरो पति सोई
छांड़ि दयी कुल की कानि, कहा करिहै कोई ?
संतन ढिग बैठि-बैठि, लोक-लाज खोयी
अंसुवन जल सींचि-सींचि, प्रेम बेलि बोयी
अब त बेलि फैलि गई,आणंद-फल होयी
दूध की मथनियाँ बड़े प्रेम से विलोयी
दधि मथि घृत काढ़ि लियो, डारि दयी छोयी
भगत देखि राजी हुयी, जगत देखि रोयी
दासि मीरां लाल गिरधर! तारो अब मोही I

(i)-नीचे दिए गए कथन और कारण को पढ़ कर सही विकल्प का चयन करें -

कथन (क) : मीराबाई ने अपने आराध्य के लिए परिवार की मर्यादा भी छोड़ दी थी।

कारण (ख) : मीराबाई के लिए गिरधर गोपाल अर्थात् कृष्ण ही सब कुछ हैं।

(क) कथन (क) और कारण (ख) दोनों सही हैं और एक दूसरे की सही व्याख्या कर रहे हैं ।

(ख) कथन (क) और कारण (ख) दोनों सही हैं किन्तु , एक दूसरे की सही व्याख्या नहीं कर रहे हैं।

(ग) कथन (क) सही है किन्तु कारण (ख) गलत है।

(घ) कथन (क) गलत है किन्तु कारण (ख) सही है।

(ii). कविता में कही गई बातों के सन्दर्भ में दिए गए कथन को पढ़ें -

कथन (क) मीराबाई ने तालाब के जल से सींच-सींचकर प्रेम की बेल बोई है।

कथन (ख) इस पर आनंद रूपी फल लगने लगे हैं।

कथन (ग) मीराबाई ने कृष्ण के प्रेम रूपी दूध को भक्ति रूपी मथानी में बड़े प्रेम से बिलोया है।

दिए गए कथन को पढ़ कर सही कूट का चयन करें -

क- केवल कथन (क) और (ग) सही है I

ख- केवल कथन (क) सही है I

ग- केवल कथन (ग) सही है I

घ- कथन (ख) और (ग) सही हैं I

(iii). मीरा किसे देखकर रोती है ?

(क) भगत (ख) सांसारिक मोह-माया में फँसे जगत को

(ग) मेवाड़ के महाराणा (घ) सेवक

(iv).मीरा अपना सर्वस्व किसे मानती है?

(क) कृष्ण (ख) शिव

(ग) मेवाड़ के राणा (घ) माता-पिता को

(v).मीराबाई ने श्रीकृष्ण को किस रूप में स्वीकार किया है?

(क) पति के रूप में

(ख) गुरु के रूप में

(ग) राजा के रूप में

(घ) मित्र के रूप में

प्रश्न – 7 निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

आज गीता पाठ करके,
दंड दो सौ साठ करके,
खूब मुगदर हिला लेकर,
मूठ उनकी मिला लेकर,
जब कि नीचे आए होंगे,
नैन जल से छाए होंगे,
हाय, पानी गिर रहा है,
घर नजर में तिर रहा है,
चार भाई चार बहिनें
भुजा भाई प्यार बहिनें
खेलते या खड़े होंगे,
नजर उनकी पड़े होंगे।
पिता जी जिनको बुढ़ापा,
एक क्षण भी नहीं व्यापा,
रो पड़े होंगे बराबर,
पाँचवें का नाम लेकर,

(i)-नीचे दिए गए कथन और कारण को पढ़कर सही विकल्प का चयन करें -

कथन (क) : कवि के पिता की आँखों में पानी आ गया।

कारण (ख) : कवि क्रांतिकारी हैं, और जेल में बंद हैं I

(क) कथन (क) और कारण (ख) दोनों सही हैं और एक दूसरे की सही व्याख्या कर रहे हैं।

(ख) कथन (क) और कारण (ख) दोनों सही हैं किन्तु , एक दूसरे की सही व्याख्या नहीं कर रहे हैं।

(ग) कथन (क) सही है किन्तु कारण (ख) गलत है।

(घ) कथन (क) गलत है किन्तु कारण (ख) सही है।

(ii). कविता में कही गई बातों के सन्दर्भ में दिए गए कथन को पढ़े-

कथन (क) कवि के पिता प्रतिदिन गीता का पाठ करते हैं I

कथन (ख) कवि के पिता सुबह-सवेरे कसरत करते हैं।

कथन (ग) कवि के पिता अत्यंत ही बूढ़े हो चुके हैं।

दिए गए कथन को पढ़ कर सही कूट का चयन करें -

(क) केवल कथन (क) और (ख) सही है I

(ख) केवल कथन (क) सही है I

(ग) केवल कथन (ग) सही है I

(घ) कथन (ख) और (ग) सही है I

(iii). पिता की आँखें भीगने का क्या कारण रहा होगा?

क- उन्हें अपने बेटे भवानी की याद आई होगी I

ख- उन्हें अपनी माँ की याद आई होगी I

ग- वे थक गए होंगे I

घ- उन्हें अपनी माँ की याद आई होगी I

(iv).कवि ने भाई-बहन के बारे में क्या बताया है?

क- उसके चार भाई और चार बहनें हैं I

ख- उसके तीन भाई हैं I

ग- उसकी पाँच बहनें हैं I

घ- उपर्युक्त सभी I

(v). पिताजी को बुढ़ापा क्यों नहीं व्यापा ?

क- वह कसरत करते थे और स्वस्थ थे I

ख -वे अस्वस्थ थे I

ग - क्योंकि वह सैर को जाते थे I

घ - उपर्युक्त सभी I

उत्तरमाला-					
प्रश्न संख्या /उप प्रश्न	**(i)**	**(ii)**	**(iii)**	**(iv)**	**(v)**
1	क	ख	ग	ख	ख
2	**क**	**घ**	**ख**	**क**	**ग**
3	**ख**	**घ**	**ग**	**घ**	**क**
4	**ख**	**क**	**ख**	**क**	**घ**
5	**घ**	**ख**	**घ**	**क**	**ख**
6	**क**	**घ**	**ख**	**क**	**क**
7	**क**	**क**	**क**	**क**	**क**

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर (काव्य-खंड आरोह भाग-1)
मीरा के पद (मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई)

कवयित्री :- मीराबाई

पद का सार :- पद में मीरा ने श्रीकृष्ण के प्रति अपनी अनन्यता व्यक्त की है तथा व्यर्थ के कार्यों में व्यस्त लोगों के प्रति दुःख प्रकट किया है। वे कहती हैं- कि मोर के मुकुट को धारण करने वाले गिरिधर कृष्ण ही उनके सर्वस्व हैं। कृष्ण भक्ति में उन्होंने अपने कुल की मर्यादा भी भुला दी है। संतों के पास बैठ-बैठ कर लोक लाज खो दी है। अपने आँसुओं के जल से सींच-सींच कर कृष्ण प्रेम रूपी बेल बोयी है। उन्हें कृष्ण का प्रेम ही माखन जैसा मूल्यवान प्रतीत होता है और शेष सांसारिकता छाँछ जैसी व्यर्थ प्रतीत होती है। वह भक्तों को देखकर प्रसन्न होती हैं और जगत को देखकर रो पड़ती हैं तथा श्रीकृष्ण से अपने उद्धार के लिए प्रार्थना करती हैं।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न-अभ्यास

प्रश्न. 1. मीरा कृष्ण की उपासना किस रूप में करती हैं? वह रूप कैसा है?

उत्तर: मीरा कृष्ण की उपासना पति के रूप में करती हैं। उनका रूप मन मोहने वाला है। वे पर्वत को धारण करने वाले हैं तथा उनके सिर पर मोर का मुकुट है। मीरा उन्हें अपना सर्वस्व मानती हैं। वे स्वयं को उनकी दासी मानती हैं।

प्रश्न. 2. भाव व शिल्प सौंदर्य स्पष्ट कीजिए –

(क) अंसुवन जल सींचि- सींचि, प्रेम-बेलि बोयी
अब त बेलि फैलि गई, आणंद-फल होयी

(ख) दूध की मथनियाँ बड़े प्रेम से विलोयी
दधि मथि घृत काढ़ि लियो, डारि दयी छोयी

उत्तर: (क) भाव सौंदर्य – प्रस्तुत पंक्तियों में मीरा यह स्पष्ट कर रही हैं कि कृष्ण से प्रेम करने का मार्ग आसान नहीं है। इस प्रेम की बेल को सींचने, विकसित करने के लिए बहुत से कष्ट उठाने पड़ते हैं। वह कहती हैं कि इस बेल को उन्होंने आँसुओं से सींचा है। अब कृष्ण-प्रेमरूपी यह लता इतनी विकसित हो चुकी है कि इस पर आनंद के फल लग रहे हैं अर्थात् वे भक्ति-भाव में प्रसन्न हैं। सांसारिक दुःख अब उनका कुछ भी नहीं बिगाड़ पाते।

शिल्प सौंदर्य – राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा में सुंदर अभिव्यक्ति है। साँगरूपक अलंकार का प्रयोग है ; जैसे- प्रेमबेलि, आणंद फल, अंसुवन जल। 'सींचि-सींचि' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है। अनुप्रास अलंकार भी है- बेलि बोयी। गेयता है।

(ख) भाव सौंदर्य – प्रस्तुत पंक्तियों में मीराबाई ने दूध की मथनियाँ का उदाहरण देकर यह समझाने का प्रयास किया है कि जिस प्रकार दही को मथने से घी ऊपर आ जाता है, अलग हो जाता है, उसी प्रकार जीवन का मंथन करने से कृष्ण-प्रेम को ही मैंने सार-तत्त्व के रूप में अपना लिया है। शेष संसार छाँछ की भाँति सारहीन है। इन में मीरा के मन का मंथन और जीवन जीने की सुंदर शैली का चित्रण किया गया है। संसार के प्रति वैराग्य भाव है।

शिल्प सौंदर्य – अन्योक्ति अलंकार है। यहाँ दही जीवन का प्रतीक है। प्रतीकात्मकता है- 'घृत' भक्ति का, 'छोयी' असार संसार का प्रतीक है। ब्रजभाषा है। गेयता है। तत्सम शब्दावली भी है।

प्रश्न. 3 मीरा जगत को देखकर रोती क्यों हैं?

उत्तर: मीरा देखती हैं कि संसार के लोग मोह-माया में लिप्त हैं। उनका जीवन व्यर्थ ही जा रहा है। सांसारिक सुख-दुःख को असार मानती हैं, जबकि संसार उन्हें ही सच मानता है। यह देखकर मीरा रोती हैं।

घर की याद – भवानी प्रसाद मिश्र

कविता का सार :-कविता में घर के मर्म का उद्घाटन है। कवि को जेल-प्रवास के दौरान घर से विस्थापन की पीड़ा सालती है। कवि के स्मृति-संसार में उसके परिजन एक-एक कर शामिल होते चले जाते हैं। घर की अवधारणा की सार्थकता एवं मार्मिक याद कविता की केंद्रीय संवेदना है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न-अभ्यास

प्रश्न 1 पानी के रात भर गिरने और प्राण-मन के घिरने में परस्पर क्या संबंध है?

उत्तर- रात-भर वर्षा होने से कवि को अपने घर की याद आ गई। उसे घर के सदस्यों के साथ हँसी-खेल करते हुए मनोरम दिन याद आ गए। परिणामस्वरूप उसके प्राणों में और मन में यादें ही यादें समा गईं।

प्रश्न 2 मायके आई बहन के लिए कवि ने घर को परिताप का घर क्यों कहा है?

उत्तर- बहन बड़ी उमंग से अपने मायके में आई होगी। उसने सोचा होगा कि पिताजी के घर जाकर अपने भाइयों-बहनों से मिलूँगी। परंतु वहाँ जाकर उसे पता चला होगा कि उसका छोटा भाई भवानी जेल में है तो उसे बहुत दुःख हुआ होगा। इस कारण उसने 'बाप के घर' को 'परिताप का घर' कहा है।

प्रश्न 3 पिता के व्यक्तित्व की किन विशेषताओं को उकेरा गया है?

उत्तर - पिताजी के व्यक्तित्व की निम्नलिखित विशेषताओं को उकेरा गया है :-

- पिताजी पूर्णत: स्वस्थ हैं। बुढ़ापे ने उन्हें कभी नहीं सताया।
- वे दौड़ लगाते तथा दंड लगाते हैं।
- वे इतने साहसी हैं कि उनके आगे मौत भी घबराती है।
- वे धार्मिक प्रवृत्ति के हैं। प्रतिदिन गीता का पाठ करते हैं।
- वे भावुक प्रवृत्ति के हैं। अपने पाँचवें पुत्र को याद करके उनकी आँखें भर आती होंगी।

प्रश्न. 4 निम्नलिखित पंक्तियों में 'बस' शब्द के प्रयोग की विशेषता बताइए –

मैं मजे में हूँ सही है,
घर नहीं हूँ बस यही है,
किंतु यह बस बड़ा बस है,
इसी बस से सब विरस है।

उत्तर: एक ही शब्द 'बस' का अनेक बार प्रयोग और अलग-अलग अर्थ में प्रयोग कर कवि ने यमक अलंकार से भी अनोखा उदाहरण प्रस्तुत किया है। सबसे पहले कवि कहता है कि मैं बिलकुल ठीक हूँ, बस अर्थात् केवल यह बात है कि घर पर आपके साथ नहीं हूँ। कवि आगे कहता है कि यह बस अर्थात् केवल अपने-आप में बड़ी बात है। वह कहना चाहता है कि घर से दूर रहना मामूली बात नहीं। पर इस बस पर वश नहीं है, यह विवशता है। इस विवशता ने सब कुछ विरस अर्थात् रसहीन कर दिया है अर्थात् मात्र घर से दूर रहना जीवन के सभी रसों को सोख रहा है। इन पंक्तियों में बस मात्र केवल, बस, वश, नियंत्रण, समापन के अर्थ में प्रयुक्त किया गया है जो एक चमत्कारपूर्ण प्रयोग है। सहज शब्दों में ऐसे प्रयोग भवानी प्रसाद मिश्र ही कर सकते हैं।

चंपा काले-काले अच्छर नहीं चीन्हती – त्रिलोचन

कविता का सार :- चपा काले-काले अच्छर नहीं चीन्हती' कविता 'धरती' संग्रह में संकलित है। यह पलायन के लोक अनुभवों को मार्मिकता से अभिव्यक्त करती है। इसमें 'अक्षरों' के लिए 'काले-काले' विशेषण का प्रयोग किया गया है जो एक ओर शिक्षा-व्यवस्था के अंतर्विरोधों को उजागर करता है तो दूसरी ओर उस दारुण यथार्थ से भी हमारा परिचय कराता है जहाँ आर्थिक मजबूरियों के चलते घर टूटते हैं। काव्य नायिका चंपा अनजाने ही उस शोषक व्यवस्था के प्रतिपक्ष में खड़ी हो जाती है जहाँ भविष्य को लेकर उसके मन में अनजान खतरा है। वह कहती है 'कलकत्ते पर बजर गिरे। " कलकत्ते पर वज्र गिरने की कामना, जीवन के खुरदरे यथार्थ के प्रति चंपा के संघर्ष और जीवन को प्रकट करती है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न-अभ्यास

प्रश्न. 1.चंपा ने ऐसा क्यों कहा कि कलकत्ता पर बजर गिरे?

उत्तर: चंपा नहीं चाहती थी कि उसका पति उसे छोड़कर कमाने के लिए कलकत्ता जाए। कलकत्ता शहर परिवारों को तोड़ने वाला है। यह प्रतीक है-शोषण का। इस शोषण से आम व्यक्ति का जीवन नष्ट हो जाता है। चंपा अपने पति से अलग नहीं होना चाहती। अत: वह कलकत्ता का विनाश चाहती है ताकि उसका परिवार नहीं टूटे।

प्रश्न. 2. चंपा को इस पर क्यों विश्वास नहीं होता कि गांधी बाबा ने पढ़ने-लिखने की बात कही होगी?

उत्तर: चंपा को पहले कवि द्वारा ही यह ज्ञान दिया गया था कि गांधी बाबा बहुत अच्छे हैं। दूसरी तरफ कवि का दिन-भर लिखते-पढ़ते रहना चंपा को अजीब-सा काम लगता है या यह भी कहा जा सकता है कि उसे बुरा लगता है, बेकार काम लगता है। इसीलिए उसे विश्वास नहीं होता कि गांधी बाबा जैसे अच्छे इंसान पढ़ने-लिखने की बात कह सकते हैं।

प्रश्न. 3. कवि ने चंपा की किन विशेषताओं का उल्लेख किया है?

उत्तर: कवि ने चंपा की निम्नलिखित विशेषताओं का उल्लेख किया है-

- वह निरक्षर है। उसे अक्षर, मात्र काले चिह्न लगते हैं।
- वह सदैव निरक्षर रहना चाहती है।
- वह शरारती स्वभाव की है। वह कवि के कागज, कलम छिपा देती है।
- वह भोली है। वह कवि को पढ़ते हुए हैरानी से देखती रहती है।
- वह स्पष्टवादिनी है। वह अपनी बात को घुमा-फिराकर नहीं कहती।
- वह विद्रोही स्वभाव की है। उसे पता है कि शिक्षित व्यक्ति अपने परिवार को छोड़कर दूसरे शहर चला जाता है। अत: वह कहती है- कलकत्ता पर आपदा आए।
- वह मेहनती है। वह प्रतिदिन दुधारू पशुओं को चराकर लाती है।
- चंपा में परिवार के साथ मिलकर रहने की भावना है। वह परिवार को तोड़ना नहीं चाहती।

प्रश्न. 4. आपके विचार में चंपा ने ऐसा क्यों कहा होगा कि मैं तो नहीं पढ़ूँगी ?

उत्तर: मेरे विचार में चंपा एक ग्रामीण लड़की है जो दिन-भर प्रकृति की गोद में पशु चराने का काम करती है। स्वभाव से नटखट है और कवि को दिन-भर बैठकर लिखते-पढ़ते देखती है। उसे यह बुरा लगता है कि दिन-भर बैठे रहो। वह सोचती होगी कि पढ़ना-लिखना स्वच्छंदता में बाधक है। दूसरे, पढ़े-लिखे लोग अपनों को छोड़कर कलकत्ता चले जाते थे, इसलिए वह पढ़ना नहीं चाहती।

गजल – दुष्यंत कुमार

गजल का सार-: गजल एक ऐसी विधा है जिसमें सभी शेर स्वयं में पूर्ण तथा स्वतंत्र होते हैं। उन्हें किसी क्रम-व्यवस्था के तहत पढ़े जाने की दरकार नहीं रहती। इसके बावजूद दो चीजें ऐसी हैं जो इन शेरों को आपस में गूँथकर एक रचना की शक्ल देती हैं-एक, रूप के स्तर पर तुक का निर्वाह और दूसरा , अंतर्वस्तु के स्तर पर मिज़ाज का निर्वाह। इस गज़ल में पहले शेर की दोनों पंक्तियों का तुक मिलता है और उसके बाद सभी शेरों की दूसरी पंक्ति में उस तुक का निर्वाह होता है। इस गजल में राजनीति और समाज में जो कुछ चल रहा है, उसे खारिज करने और विकल्प की तलाश को मान्यता देने का भाव प्रमुख बिंदु है।

कवि राजनीतिज्ञों के झूठे वायदों पर व्यंग्य करता है कि वे हर घर में चिराग(सुख-सुविधाएँ) उपलब्ध कराने का वायदा करते हैं, पंरतु यहाँ तो पूरे शहर में भी एक चिराग(सुख-सुविधा) नहीं है। कवि को पेड़ों के साये में धूप लगती है अर्थात् आश्रयदाताओं के यहाँ भी कष्ट मिलते हैं। अत: वह हमेशा के लिए इन्हें छोड़कर जाना ठीक समझता है। वह उन लोगों की जिंदगी के सफर को आसान बताता है जो परिस्थिति के अनुसार स्वयं को बदल लेते हैं। मनुष्य को खुदा न मिले तो कोई बात नहीं, उसे अपना सपना नहीं छोड़ना चाहिए। थोड़े समय के लिए ही सही हसीन सपना तो देखने को मिलता है। कुछ लोगों का विश्वास है कि पत्थर पिघल नहीं सकते। कवि आवाज के असर को देखने के लिए बेचैन है। शासक शायर की आवाज को दबाने की कोशिश करता है, क्योंकि वह उसकी सत्ता को चुनौती देता है। कवि किसी दूसरे के आश्रय में रहने के स्थान पर अपने घर में जीना चाहता है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न-अभ्यास

प्रश्न. 1. आखिरी शेर में गुलमोहर की चर्चा हुई है। क्या उसका आशय एक खास तरह के फूलदार वृक्ष से है या उसमें कोई सांकेतिक अर्थ निहित है? समझाकर लिखें।

उत्तर: गुलमोहर एक फूलदार वृक्ष है। यह शांति प्रदान करने वाला है। कवि ने इस शब्द का यहाँ विशेष अर्थ के लिए प्रयोग किया है। मनुष्य अपने घर में शांति व मानवीय गुणों से युक्त होकर रहे। यदि उसे बाहर रहना पड़े तो भी वह शांति व मानवीय गुणों को बनाए रखे। इससे समाज की व्यवस्था बनी रहेगी तथा अराजकता की स्थिति उत्पन्न नहीं होगी।

प्रश्न. 2. पहले शेर में चिराग शब्द एक बार बहुवचन में आया है और दूसरी बार एकवचन में। अर्थ एवं काव्य-सौंदर्य की दृष्टि से इसका क्या महत्त्व है?

उत्तर: जब कवि एक घर के लिए चिरागाँ (अनेक दीपक) तय था की बात करता है तो केवल योजनाओं में दिखाए गए सुनहरे ख्वाबों की ओर संकेत करता है। दूसरी पंक्ति में वह स्पष्ट करता है कि सब्जबाग दिखाने वाली इस योजना को कार्यान्वित करने के समय दशा यह है कि एक पूरे शहर के हिस्से में एक चिराग भी नहीं आया। काव्य-सौंदर्य की दृष्टि से चिरागाँ के बदले चिराग का न मिलना एक चमत्कारी प्रयोग है जो शाब्दिक कम और अर्थपूर्ण सौंदर्य अधिक बिखेर रहा है।

प्रश्न. 3. गज़ल के तीसरे शेर को गौर से पढ़ें। यहाँ दुष्यंत का इशारा किस तरह के लोगों की ओर है?

उत्तर: तीसरे शेर में कवि ने उत्साहहीन, दीन- हीन लोगों की ओर संकेत किया है जो हर स्थिति को आसानी से स्वीकार कर लेते हैं। वे अन्याय का विरोध नहीं करते। उनकी प्रतिरोध शक्ति समाप्तप्राय हो चुकी है। राजनेता व अफसरशाही जनता की इसी उदासीनता का लाभ उठाकर उसका शोषण करते रहते हैं।

प्रश्न. 4. आशय स्पष्ट करें:

तेरा निज़ाम है सिल दे जुबान शायर की,
ये एहतियात ज़रूरी है इस बहर के लिए।

उत्तर: कवि दुष्यंत ने वर्तमान शासन-व्यवस्था के चलते बुद्धिजीवी वर्ग की भयभीत विवशता पर प्रकाश डाला है। शासन अपनी कमी सुनने के लिए तैयार नहीं है। अतः वह शायरों और कवियों के मुँह सिल सकता है। कवि स्पष्ट करता है कि मुँह बंद कर लेना वह सावधानी भरा कदम है जो एक शायर द्वारा अपनी गज़ल के लिए उठाया गया है। मूक रहकर रचना को अंजाम देना शायर की विवशता और समय की माँग दोनों ही हैं ।

हे भूख! मत मचल , हे मेरे जूही के फूल जैसे ईश्वर - अक्क महादेवी

पाठ का सारांश-: यहाँ इनके दो वचन पाठ्यक्रम में लिए गए हैं। दोनों वचनों का अंग्रेजी से अनुवाद केदारनाथ सिंह ने किया है। प्रथम वचन में इंद्रियों पर नियंत्रण का संदेश दिया गया है। यह उपदेशात्मक न होकर प्रेम-भरा मनुहार है। वे चाहती हैं कि मनुष्य को अपनी भूख, प्यास, नींद आदि वृत्तियों व क्रोध, मोह, लोभ, अहम्, ईर्ष्या आदि भावों पर विजय प्राप्त करनी चाहिए। वह लोगों को समझाती हैं कि इंद्रियों को वश में करने से ही शिव की प्राप्ति संभव है। दूसरा वचन एक भक्त का ईश्वर के प्रति समर्पण है। चन्नमल्लिकार्जुन की अनन्य भक्त अक्क महादेवी उनकी अनुकंपा के लिए हर भौतिक वस्तु से अपनी झोली खाली रखना चाहती हैं। वे ऐसी नि:स्पृह स्थिति की कामना करती हैं जिससे उनका 'स्व' या अहंकार पूरी तरह से नष्ट हो जाए। वह ईश्वर को जूही के फूल के समान बताती हैं, वह कामना करती हैं कि ईश्वर उससे ऐसे काम करवाए जिनसे उसका अहंकार समाप्त हो जाए। वह उससे भीख मँगवाए , भले ही उसे भीख न मिले। वह उससे घर की मोह-माया छुड़वा दे। जब कोई उसे कुछ देना चाहे तो वह गिर जाए और उसे कोई कुत्ता छीनकर ले जाए। कवयित्री का एकमात्र लक्ष्य अपने परमात्मा की प्राप्ति है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न-अभ्यास

प्रश्न. 1.लक्ष्य प्राप्ति में इंद्रियाँ बाधक होती हैं-इसके संदर्भ में अपने तर्क दीजिए।

उत्तर:लक्ष्य प्राप्ति में इंद्रियाँ बाधक होती हैं। मनुष्य की इंद्रियों का कार्य है-स्वयं को तृप्त करना। इनकी तृप्ति के चक्कर में मनुष्य जीवन भर भटकता रहता है। इंद्रियाँ मनुष्य को भ्रमित करती हैं तथा उसे कर्महीनता की तरफ प्रेरित करती हैं। इसके लिए इंद्रियों पर नियंत्रण रखना आवश्यक है। किसी लक्ष्य को तभी प्राप्त किया जा सकता है जब मन में एकाग्रता हो तथा इंद्रियों को वश में रखकर परिश्रम किया जाए। प्रत्येक लक्ष्य में इंद्रियाँ बाधक बनती हैं, परंतु बुद्धि द्वारा उनको वश में किया जा सकता है।

प्रश्न. 2. ओ चराचर! मत चूक अवसर-इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: यह पंक्ति अक्कमहादेवी अपने प्रथम वचन में उस समय कहती हैं जब वे अपने समस्त विकारों को शांत हो जाने के लिए कह चुकी हैं। इसका आशय है कि इंद्रियों के सुख के लिए भाग-दौड़ बंद करने के पश्चात् ईश्वर प्राप्ति का मार्ग सरल हो जाता है। अतः कवयित्री चराचर (जड़-चेतन) को संबोधित कर कहती हैं कि तू इस मौके को मत खोना। विकारों की शांति के पश्चात् ईश्वर प्राप्ति का अवसर तुम्हारे हाथ में है, इसका सदुपयोग करो।

प्रश्न. 3. ईश्वर के लिए किस दृष्टांत का प्रयोग किया गया है। ईश्वर और उसके साम्य का आधार बताइए।

उत्तर: ईश्वर के लिए जूही के फूल का दृष्टांत दिया गया है। जूही का फूल कोमल, सात्विक, सुगंधित व श्वेत होता है। यह लोगों का मन मोह लेता है। वह बिना किसी भेदभाव के सबको खुशबू बाँटता है। इसी तरह ईश्वर भी सभी प्राणियों को आनंद देता है। वह कोई भेदभाव नहीं करता तथा सबका कल्याण करता है।

प्रश्न. 4. अपना घर से क्या तात्पर्य है? इसे भूलने की बात क्यों कही गई है?

उत्तर: अपना घर से तात्पर्य सांसारिक मोह-माया से है। संसार की वह चीजें जो हमें अपने-आप में उलझा लेती हैं, जिनसे हम प्रेम करते हैं वे हमारे ईश्वर प्राप्ति के मार्ग में बाधक होती हैं। यदि हम उन्हें भूल जाएँ तो ईश्वर की ओर हमारा मन पूरी एकाग्रता के साथ लगता है। इसीलिए उन्हें भूल जाने की बात कही गई है।

प्रश्न. 5. दूसरे वचन में ईश्वर से क्या कामना की गई है और क्यों?

उत्तर: दूसरे वचन में ईश्वर से सब कुछ छीन लेने की कामना की गई है। कवयित्री ईश्वर से प्रार्थना करती है कि वह उससे सभी तरह के भौतिक साधन, संबंध छीन ले। वह ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न करे कि वह भीख माँगने के लिए मजबूर हो जाए। इससे उसका अहंभाव नष्ट हो जाएगा।

दूसरे, भूख मिटाने के लिए जब वह झोली फैलाए तो उसे भीख न मिले। अगर कोई देने के लिए आगे आए तो वह भीख नीचे गिर जाए। जमीन पर गिरी भीख को भी कुत्ता झपटकर ले जाए। वस्तुत: कवयित्री ईश्वर से सांसारिक लगाव को समाप्त करने के लिए कामना करती है ताकि वह ईश्वर में ध्यान एकाग्र भाव से लगा सके।

आओ, मिलकर बचाएँ- निर्मला पुतुल

कविता का सारांश-:प्रस्तुत कविता आओ मिलकर बचाएँ में कवयित्री निर्मला पुतुल जी ने अपनी संस्कृति, अपने झारखंड की सभ्यता को बचाने का आह्वान किया है।

शहरी सभ्यता के कारण झारखंड के लोग अपने निजी संस्कृति को भूलते चले जा रहे हैं। जिस कारण कवयित्री निर्मला पुतुल जी अपने झारखंड को फिर से वापस लाने के लिए, लोगों से आग्रह करती हैं कि लोग शहरी सभ्यता की आड़ में न पलें।

झारखंड की संस्कृति में बहुत कुछ व्याप्त है और जब अपनी संस्कृति खूबसूरत हो, तो फिर शहरी संस्कृति को अपनाने की क्या जरूरत है। इन्हीं सब बातों की चर्चा इस संपूर्ण कविता में की गई है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न-अभ्यास

प्रश्न. 1. माटी का रंग प्रयोग करते हुए किस बात की ओर संकेत किया गया है?

उत्तर: कवयित्री ने 'माटी का रंग' प्रयोग करके स्थानीय विशेषताओं को उजागर करना चाहा है। संथाल परगने के लोगों में जुझारूपन, अक्खड़ता, नाच-गान, सरलता आदि विशेषताएँ जमीन से जुड़ी हैं। कवयित्री चाहती है कि आधुनिकता के चक्कर में हम अपनी संस्कृति को हीन न समझें। हमें अपनी पहचान बनाए रखनी चाहिए।

प्रश्न, 2. भाषा में झारखंडीपन से क्या अभिप्राय है?

उत्तर: झारखंडी' का अभिप्राय है- झारखंड के लोगों की स्वाभाविक बोली। कवयित्री का मानना है कि यहाँ के लोगों को अपनी क्षेत्रीय भाषा को बाहरी भाषा के प्रभाव से मुक्त रखना चाहिए। उसके विशिष्ट उच्चारण व स्वभाव को बनाए रखना चाहिए।

प्रश्न. 3. दिल के भोलेपन के साथ-साथ अक्खड़पन और जुझारूपन को भी बचाने की आवश्यकता पर क्यों बल दिया गया है?

उत्तर: दिल का भोलापन सच्चाई और ईमानदारी के लिए जरूरी है, परंतु हर समय भोलापन ठीक नहीं होता। भोलेपन का फायदा उठाने वालों के साथ अक्खड़पन दिखाना भी जरूरी है। अपनी बात को मनवाने के लिए अकड़ भी होनी चाहिए। साथ ही कर्म करने की प्रवृत्ति भी आवश्यक है। अत: कवयित्री भोलेपन, अक्खड़पन व जुझारूपन-तीनों गुणों को बचाने की आवश्यकता पर बल देती है।

प्रश्न. 4. प्रस्तुत कविता आदिवासी समाज की किन बुराइयों की ओर संकेत करती है?

उत्तर: कविता में प्रकृति के विनाश एवं विस्थापन के कठिन दौर के साथ-साथ संथाली समाज की अशिक्षा, कुरीतियों और शराब की ओर बढ़ते झुकाव को भी व्यक्त किया गया है जिसमें पूरी-पूरी बस्तियाँ डूबने जा रही हैं।

प्रश्न. 5. इस दौर में भी बचाने को बहुत कुछ बचा है-से क्या आशय है?

उत्तर: कवयित्री का कहना है कि आज के विकास के कारण भले ही मानवीय मूल्य उपेक्षित हो गए हों, प्राकृतिक संपदा नष्ट हो रही है, परंतु फिर भी बहुत कुछ ऐसा है जिसे अपने प्रयत्नों से बचा सकते हैं। लोगों का विश्वास, उनकी टूटती उम्मीदों को जीवित करना, सपनों को पूरा करना आदि ऐसे तत्त्व हैं, जिन्हें सामूहिक प्रयासों से बचाया जा सकता है।

प्रश्न. 6. निम्नलिखित पंक्तियों के काव्य-सौंदर्य को उद्घाटित कीजिए:

(क) ठंडी होती दिनचर्या में,
जीवन की गर्माहट

(ख) थोड़ा-सा विश्वास
थोड़ा-सी उम्मीद/थोड़े-से सपने

आओ, मिलकर बचाएँ

उत्तर: (क) इस पंक्ति में कवयित्री ने आदिवासी क्षेत्रों में विस्थापन की पीड़ा को व्यक्त किया है। विस्थापन से वहाँ के लोगों की दिनचर्या ठंडी पड़ गई है। हम अपने प्रयासों से उनके जीवन में उत्साह जगा सकते हैं। यह काव्य पंक्ति लाक्षणिक है। इसका अर्थ है-उत्साहहीन जीवन। 'गर्माहट' उमंग, उत्साह और क्रियाशीलता का प्रतीक है। इन प्रतीकों से अर्थ गांभीर्य आया है। शांत रस विद्यमान है। अतुकांत अभिव्यक्ति है।

(ख) इस अंश में कवयित्री अपने प्रयासों से लोगों की उम्मीदें, विश्वास व सपनों को जीवित रखना चाहती है। समाज में बढ़ते अविश्वास के कारण व्यक्ति का विकास रुक-सा गया है। वह सभी लोगों से मिलकर प्रयास करने का आह्वान करती है। उसका स्वर आशावादी है। 'थोड़ा-सा'; 'थोड़ी-सी' व 'थोड़े-से' तीनों प्रयोग एक ही अर्थ के वाहक हैं। अतः अनुप्रास अलंकार है। उर्दू (उम्मीद), संस्कृत (विश्वास) तथा तद्भव (सपने) शब्दों का मिला-जुला प्रयोग किया है। तुक, छंद और संगीत विहीन होते हुए कथ्य में आकर्षण है। खड़ी बोली है।

पठित गद्यांश (बहुविकल्पीय प्रश्न) 5 अंक

प्रश्न 1 निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

पंडित अलोपीदीन स्तंभित हो गए। गाड़ीवानों में हलचल मच गई। पंडितजी के जीवन में कदाचित यह पहला ही अवसर था कि पंडितजी को ऐसी कठोर बातें सुननी पड़ीं। बदलूसिंह आगे बढ़ा, किंतु रोब के मारे यह साहस न हुआ कि उनका हाथ पकड़ सके। पंडितजी ने धर्म को धन का ऐसा निरादर करते कभी न देखा था। विचार किया कि यह अभी उद्दंड लड़का है। माया-मोह के जाल में अभी नहीं पड़ा। अल्हड़ है, झिझकता है। बहुत दीनभाव से बोले, 'बाबू साहब, ऐसा न कीजिए, हम मिट जाएँगे। इज़्ज़त धूल में मिल जाएगी। हमारा अपमान करने से आपके हाथ क्या आएगा। हम किसी तरह आपसे बाहर थोड़े ही हैं। '

वंशीधर ने कठोर स्वर में कहा -'हम ऐसी बातें नहीं सुनना चाहते।

(क) पंडित अलोपीदीन स्तंभित क्यों हो गए ?

1. अलोपीदीन का रिश्वत देने का प्रयास व्यर्थ चला गया।
2. उसे गिरफ्तार करने का आदेश दे दिया गया।
3. यह सब उसकी उम्मीद के विपरीत था।
4. उपर्युक्त सभी

(ख) पंडित जी के अनुसार कौन किसे महत्त्व नहीं दे रहा था ?

1. वंशीधर धर्म को
2. अलोपीदीन धन को
3. धर्म धन को
4. उपर्युक्त सभी

(ग) बदलू सिंह अलोपीदीन को हिरासत में क्यों नहीं ले सका ?

1. बदलू सिंह अलोपीदीन का संबंधी था।
2. बदलू सिंह अलोपीदीन के वैभव और प्रभाव को जानता था।
3. बदलू सिंह और अलोपीदीन ने पहले ही योजना बना ली थी।
4. उपर्युक्त में से कोई भी नहीं।

(घ) किसे उद्दंड और अल्हड़ कहा गया है और क्यों ?

1. वंशीधर को , अलोपीदीन के प्रभाव और ऐश्वर्य से अनभिज्ञ होने की वजह से
2. अलोपीदीन को , वंशीधर के प्रभाव और ऐश्वर्य से अनभिज्ञ होने की वजह से।
3. बदलू सिंह को , वंशीधर के प्रभाव और ऐश्वर्य से अनभिज्ञ होने की वजह से
4. उपर्युक्त में से कोई भी नहीं।

(ङ) किस धर्म ने धन का निरादर किया ?

1. ईमानदारी ने
2. कर्तव्यपरायणता ने
3. उपर्युक्त दोनों
4. उपर्युक्त में से कोई भी नहीं।

गद्यांश उत्तर) क - 4 , ख – 3 , ग – 2 , घ – 1 , ङ – 3

प्रश्न 2 निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

मियाँ कुछ देर सोच में खोए रहे। सोचा पकवान पर रोशनी डालने को है कि नसीरुद्दीन साहिब बड़ी रुखाई से बोले-'यह हम न बतावेंगे। बस, आप इत्ता समझ लीजिए कि एक कहावत है न कि खानदानी नानबाई कुएँ में भी रोटी पका सकता है। कहावत जब भी गढ़ी गई हो, हमारे बुजुर्गों के करतब पर ही पूरी उतरती है। '

मज़ा लेने के लिए टोका-'कहावत यह सच्ची भी है कि..... । '

मियाँ ने तेरा-'और क्या झूठी है? आप ही बताइए, रोटी पकाने में झूठ का क्या काम! झूठ से रोटी पकेगी? क्या पकती देखी है कभी! रोटी जनाब पकती है आँच से, समझे!'

सिर हिलाना पड़ा – ' ठीक फ़रमाते हैं। '

क) वार्तालाप किनके मध्य हो रहा है ?

1. मियाँ नसीरुद्धीन और मियाँ कल्लन के बीच
2. मियाँ नसीरुद्धीन और मियाँ रहमत के बीच
3. मियाँ रहमत और कृष्णा सोबती के बीच
4. मियाँ नसीरुद्धीन और कृष्णा सोबती के बीच

ख) मियाँ नसीरुद्धीन किस सोच में खो गए ?

1. बादशाह सलामत की फ़रमाइश पर बनाया गया कल्पित पकवान
2. पकवान जिसे वास्तव में बनाया नहीं गया था।
3. मियाँ नसीरुद्धीन ने अपने बुजुर्गों की प्रशंसा में यूँ ही कह दिया था।
4. उपर्युक्त सभी

ग) 'खानदानी नानबाई कुएँ में भी रोटी पका सकता है' पंक्ति से क्या तात्पर्य है ?

1. अर्थात खानदानी नानबाई कठिन परिस्थितियों में भी अत्यंत स्वादिष्ट भोजन बना सकता है।
2. अर्थात खानदानी नानबाई केवल कठिन परिस्थितियों में ही स्वादिष्ट भोजन बनाता है।
3. अर्थात खानदानी नानबाई कुएँ में भोजन बनाता है।
4. अर्थात खानदानी नानबाई कुएँ के पास भोजन बना सकता है।

घ) मियाँ नसीरुद्धीन ने लेखिका को आँखें तरेरकर क्यों देखा ?

1. लेखिका उसकी बातों को ध्यानपूर्वक नहीं सुन रही थी।
2. उसे लेखिका पर विश्वास नहीं था।
3. लेखिका कहावत पर शंका प्रकट कर रही थी।
4. उपर्युक्त सभी

ङ) मियाँ नसीरुद्धीन के स्वभाव की विशेषता बताइए।

1. चिड़चिड़ा और आत्मविश्वासी
2. आत्मविश्वासी और तुनकमिजाज
3. आरामपरस्त और तुनकमिजाज
4. आत्मविश्वासी और आरामपरस्त

गद्यांश उत्तर) क – 1 , ख – 4 , ग – 1 ,घ - 3 ड़ –

प्रश्न 3 निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

इस बार बंबई उतरकर माइ लॉर्ड ! आपने जो इरादे जाहिर किए थे, जरा देखिए तो उनमें से कौन-कौन पूरे हुए? आपने कहा था कि यहाँ से जाते समय भारतवर्ष को ऐसा कर जाऊँगा कि मेरे बाद आने वाले बड़े लाटों को वर्षों तक कुछ करना न पड़ेगा, वे कितने ही वर्षों सुख की नींद सोते रहेंगे। किंतु बात उलटी हुई। आपको स्वयं इस बार बेचैनी उठानी पड़ी है और इस देश में जैसी अशांति आप फैला चले हैं, उसके मिटाने में आपके पद पर आने वालों को न जाने कब तक नींद और भूख हराम करना पड़ेगा। इस बार आपने अपना बिस्तरा गरम राख पर रखा है और भारतवासियों को गरम तवे पर पानी की बूंदों की भाँति नचाया है। आप स्वयं भी खुश न हो सके और यहाँ की प्रजा को सुखी न होने दिया, इसका लोगों के चित्त पर बड़ा ही दुख है।

(क) इस बार का क्या अर्थ है ?

1. लॉर्ड कर्जन का दूसरी बार वायसराय बनकर आना
2. नादिरशाह का भारत में आना
3. नर सुलतान का नरवरगढ में आना
4. प्रभु महाराज के छोटे भाई का आना

(ख) लॉर्ड कर्जन द्वारा क्या वायदा किया गया ?

1. भारतवासियों पर अपना दबदबा कायम रखना
2. आने वाले लाटों द्वारा सुख की नींद सोना
3. उपर्युक्त दोनों
4. उपर्युक्त में से कोई नहीं

(ग) यहाँ किस बात को उलटा कहा गया है ?

1. वायदों का पूरा न होना
2. अशांति फैल जाना
3. आने वाले वायसरायों को कड़ी मेहनत करनी पड़ी
4. उपर्युक्त सभी

(घ) बिस्तरा गरम राख पर रखने से क्या तात्पर्य है ?

1. स्वयं के लिए घोर कष्टों को आमंत्रित करना
2. गरम राख पर सोना
3. अत्यधिक गरमी में सोना
4. कष्ट देना

(ङ) भारतवासी क्यों दुखी हैं ?

1. लॉर्ड कर्जन का भारत विरोधी दृष्टिकोण 2. प्रजा को कष्ट देना

3. प्रजा का शोषण करना 4 . उपर्युक्त सभी

गद्यांश उत्तर) क – 1 , ख – 3 ,ग – 4 , घ – 1 , ड़ – 4

प्रश्न 4 निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

प्राइमरी स्कूल की सीमा लाँघते ही मोहन ने छात्रवृत्ति प्राप्त कर त्रिलोक सिंह मास्टर की भविष्यवाणी को किसी हद तक सिद्ध कर दिया तो साधारण हैसियत वाले यजमानों की पुरोहिताई करने वाले वंशीधर तिवारी का हौसला बढ़ गया और वे भी अपने पुत्र को पढ़ा-लिखाकर बड़ा आदमी बनाने का स्वप्न देखने लगे। पीढ़ियों से चले आते पैतृक धंधे ने उन्हें निराश कर दिया था। दान-दक्षिणा के बूते पर वे किसी तरह परिवार का आधा पेट भर पाते थे। मोहन पढ़-लिखकर वंश का दारिद्रय मिटा दे यह उनकी हार्दिक इच्छा थी। लेकिन इच्छा होने भर से ही सब-कुछ नहीं हो जाता। आगे की पढ़ाई के लिए जो स्कूल था वह गाँव से चार मील दूर था। दो मील की चढ़ाई के अलावा बरसात के मौसम में रास्ते में पड़ने वाली नदी की समस्या अलग थी।

क) मास्टर त्रिलोकसिंह की किस भविष्यवाणी की बात कही गई है ?

1. मोहन बहुत अच्छी पुरोहिताई करेगा और अपने पिता को आराम देगा।
2. मोहन बहुत बड़ा आदमी बनकर स्कूल का नाम रोशन करेगा।
3. मोहन मास्टर त्रिलोकसिंह के बाद विद्यालय की देखरेख करेगा
4. मोहन अपने गाँव का विकास करेगा

ख) वंशीधर तिवारी का हौंसला कैसे बढ़ गया ?

1. मास्टर की भविष्यवाणी से 2 दान-दक्षिणा प्राप्त करने से
3. मोहन के छात्रवृति प्राप्त करने से 4 खेती करने से

ग) वंशीधर तिवारी की हार्दिक इच्छा क्या थी ?

1. मोहन पढ़-लिखकर बड़ा आदमी बन जाए
2. मोहन पढ़-लिखकर परिवार की गरीबी खत्म कर दे
3. मोहन पुरोहिताई का कार्य करे
4. उपर्युक्त सभी

घ . मोहन की पढ़ाई -लिखाई में कौन-सी बाधाएँ थी ?

1. गाँव में स्कूल का न होना 2. दूसरा स्कूल चार मील दूर होना
3. बीच में नदी का आना 4. उपर्युक्त सभी

ङ कहानी और इसके लेखक का नाम बताइए।

1. जामुन का पेड़, शेखर जोशी 2. गलता लोहा , कृश्नचंदर
3. जामुन का पेड़, बालमुकुंद गुप्त 4. गलता लोहा , शेखर जोशी

प्रश्न 5 निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

देखो, तुम मुझे फिर गुस्सा दिला रहे हो रवि.... गलती करने वाला तो है ही गुनहगार, पर उसे बर्दाश्त करने वाला भी कम गुनहगार नहीं होता जैसे लीलाबेन और कांति भाई और हजारों-हज़ारों माँ-बाप। लेकिन सबसे बड़ा गुनहगार तो वह है जो चारों तरफ अन्याय, अत्याचार और तरह तरह की धाँधलियों को देखकर भी चुप बैठा रहता है, जैसे तुम। (नकल उतारते हुए) हमें क्या करना है. हमने कोई ठेका ले रखा है दुनिया का। (गुस्से और हिकारत से) माई फुट (उठकर भीतर जाने लगती हैं। (जाते-जाते मुड़कर) तुम जैसे लोगों के कारण ही तो इस देश में कुछ नहीं होता, हो भी नहीं सकता! (भीतर चली जाती है।)

क) इस गद्यांश में वक्ता और श्रोता कौन हैं ?

1. रजनी वक्ता ,अमित श्रोता
2. लीला वक्ता , रवि श्रोता
3. रजनी वक्ता , रवि श्रोता
4. अमित वक्ता , रजनी श्रोता

ख) वक्ता के अनुसार गुनहगार कौन होता है ?

1. गुनाह करने वाला
2. गुनाह सहने वाला
3. उपर्युक्त दोनों
4. उपर्युक्त में से कोई नहीं

ग) सबसे बड़ा गुनहगार किसे बताया गया है ?

1. जो अपने सामने होने वाले अन्याय को देखकर भी चुप है
2. जो अपने सामने होने वाले अत्याचार को देखकर भी चुप है
3. जो अपने सामने होने वाली धाँधलियों को देखकर भी चुप है
4. उपर्युक्त सभी

घ) वक्ता द्वारा श्रोता पर क्या आक्षेप लगाया जा रहा है ?

1. उस जैसे लोगों के कारण ही देश में सुधार नहीं हो पा रहा
2. गुनाह करने वाले लोगों की वजह से देश प्रगति नहीं कर पा रहा
3. गुनाह सहने वाले लोगों की वजह से देश प्रगति नहीं कर पा रहा
4. उपर्युक्त में से कोई नहीं

ङ) वक्ता के चरित्र की कौन-सी विशेषताएँ स्पष्ट हो रही हैं ?

1. समाज सुधारक
2. भ्रष्ट आचरण सहन न करने वाली
3. स्पष्ट वक्ता
4. उपर्युक्त सभी

आरोह भाग -1 (गद्य भाग)

क्रम सं०	अध्याय	लेखक का नाम	पृष्ठ संख्या
1.	नमक का दरोगा (कहानी)	प्रेमचंद	2-6
2.	मियां नसीरुद्दीन (रेखाचित्र)	कृष्णा सोबती	7-10
3.	अप्पू के साथ ढाई साल (संस्मरण)	सत्यजीत राय	11-13
4.	विदाई – संभाषण (व्यंग्यात्मक निबंध)	बालमुकुन्द गुप्त	14-17
5.	गलता लोहा (कहानी)	शेखर जोशी	18-21
6.	रजनी (पटकथा)	मन्नू भंडारी	22-25
7.	जामुन का पेड़ (कहानी)	कृश्न चंदर	26-28
8.	भारत माता (निबंध)	जवाहर लाल नेहरु	29-32

1. नमक का दरोगा (कहानी)

कहानी का सारांश

यहाँ दी गई कहानी नमक का दारोगा प्रथम प्रकाशन 1914 ईस्वी प्रेमचंद की बहुत चर्चित कहानी है जिसे आदर्श उन्मुख यथार्थ के एक मुकम्मल उदाहरण के रूप में देखा जा सकता है। कहानी में ही आए हुए एक मुहावरे को लें तो यह धन के ऊपर धर्म की जीत की कहानी है। धन और धर्म को हम क्रमशः शब्द वृत्ति और असद वृत्ति बुराई और अच्छाई असत्य और सत्य इत्यादि भी कह सकते हैं। कहानी में इनका प्रतिनिधित्व क्रमशः पंडित अलोपीदीन और मुंशी वंशीधर नामक पात्रों ने किया है। ईमानदार कर्मयोगी मुंशी वंशीधर को खरीदने में असफल रहने के बाद पंडित अलोपीदीन अपने धन की महिमा का उपयोग कर उन्हें नौकरी से मुअत्तल करा देते हैं लेकिन अंततः सत्य के आगे उनका सिर झुक जाता है। वह सरकारी महकमे से बर्खास्त वंशीधर को बहुत ऊँचे वेतन और भत्ते के साथ अपनी सारी जायदाद का फाइल मैनेजर नियुक्त करते हैं और गहरे अथवा अपराध बोध से भरी हुई वाणी में निवेदन करते हैं परमात्मा से यही प्रार्थना है कि वह आपको सदैव वही नदी के किनारे वाला बेमुरव्वत उदंड किंतु धर्म निष्ठा दरोगा बनाए रखें कहानी के इस अंतिम प्रसंग से पहले तक की समस्त घटनाएं प्रशासनिक और न्यायिक व्यवस्था में व्याप्त भ्रष्टाचार तथा उस भ्रष्टाचार की व्यापक सामाजिक स्वीकार्यता को अत्यंत साहसिक तरीके से हमारे सामने उजागर करती है। ईमानदार व्यक्ति के अभिमन्यु के समान यह थे और अकेले पड़ जाने की यथार्थता वीर इस कहानी की बहुत बड़ी खूबी है किंतु प्रेमचंद संदेश पर कहानी नहीं करना चाहते क्योंकि उस दौर में वे मानते थे कि ऐसा यथार्थवाद हमको निराशावादी बना देगा। मानव चरित्र पर से हमारा विश्वास उठ जाएगा हम तो चारों तरफ बुराई बुराई नजर आने लगेगी इसलिए कहानी का अंत सत्य की जीत के साथ होता है।

दो अंक वाले प्रश्न -

प्रश्न 1 - मासिक वेतन को पूर्णमासी का चाँद क्यों कहा गया है?

उत्तर - मासिक वेतन को पूर्णमासी का चाँद इसलिए कहा गया है क्योंकि यह रोज-रोज खर्च होकर घटता चला जात है। यह मिलता तो मास में एक बार है किंतु अगले दिन से घटते-घटते जल्दी ही समाप्त हो जाता है।

प्रश्न 2. न्याय और नीति सब लक्ष्मी के ही खिलौने हैं, इन्हें वह जैसे चाहती हैं, नचाती हैं। - पंक्ति का आशय प्रकट कीजिए

उत्तर- उक्त पंक्ति के माध्यम से लेखक ने भारत की न्याय-व्यवस्था पर तीखा प्रहार किया है। भारतीय न्यायालयों में न्याय और नीति धन के गुलाम हैं। इसके बल पर इन्हें कैसे भी प्रभावित किया जा सकता है। सत्यपुरुष को बेईमान और बेईमान को सज्जन पुरुष सिद्ध किया जा सकता है।

प्रश्न 3. दुनिया सोती थी, पर दुनिया की जीभ जागती थी। इस पंक्ति का भाव सपष्ट कीजिए I

उत्तर- अभी लोग रात में सोए हुए थे कि पंडित अलोपीदीन के गिरफ्तार होने की खबर कानोंकान फैल गई। लोग इस विषय में तरह – तरह की बातें करने लगे।

तीन अंक वाले प्रश्न

प्रश्न 1. कहानी का कौन-सा पात्र आपको सर्वाधिक प्रभावित करता है और क्यों?

उत्तर- कहानी का नायक वंशीधर हमें सर्वाधिक प्रभावित करता है क्योंकि वंशीधर सत्यनिष्ठ और चरित्रवान दारोगा है। उसके पिता उसे बेईमानी की सलाह देते हैं। उसके चारों ओर का समाज पूरी तरह भ्रष्ट है। फिर भी वह कीचड़ में खिले हुए कमल की तरह, अँधेरे में जले हुए दीपक की तरह बड़े गर्व और स्वाभिमान से जीता है। उसकी यही चारित्रिक दृढ़ता हमें प्रभावित करती है। वह मुकदमा हारने पर भी छाती तानकर चलता है। मिट्टी में मिला दिए जाने पर भी वह पछतावा प्रकट नहीं करता। आखिरकार पंडित अलोपीदीन भी उसकी इस दृढ़ता पर मुग्ध हो जाते हैं।

प्रश्न 2. 'नमक का दारोगा' कहानी में पंडित अलोपीदीन के व्यक्तित्व के कौन से दो पहलू (पक्ष) उभरकर आते हैं?

उत्तर-पंडित अलोपीदीन के व्यक्तित्व के दो पक्ष उभरकर सामने आते हैं-शुभ और अशुभ।

अशुभ व्यक्तित्व-कहानी के आरंभ से मध्य तक पंडित अलोपीदीन का भ्रष्ट व्यक्तित्व सामने आता है। वह गंदे तालाब की सबसे बड़ी मछली है। वह अदालत रूपी जंगल का सिंह है। उसने नीचे से ऊपर तक सभी कर्मचारियों और अधिकारियों को लोभ-लालच की कीचड़ में धँसाकर दुश्चरित्र बना दिया है। इसलिए वह रात के अँधेरे में बड़े आराम से चोरी का धंधा करता है। वह पैसे की नदी बहाकर और अधिक धन कमाता है। उसके इस भ्रष्ट रूप की प्रशंसा नहीं की जा सकती। वह वाचालता और चालाकी से अपने सारे काम करवा लेता है, परंतु समाज में उसने सम्मानित स्थान बनाया हुआ है। उसके चरित्र का यही पक्ष अशुभ है।

शुभ व्यक्तित्व-कहानी के अंत में उसका उज्ज्वल चरित्र सामने आता है। वह अपने को गिरफ्तार करने वाले वंशीधर को कुचलने-मसलने की बजाय उसका आदर करता है। उसे सम्मानपूर्वक अपनी सारी संपत्ति का स्थायी प्रबंधक नियुक्त करता है। उसकी यह गुणग्राहकता हमें प्रभावित करती है।

प्रश्न 3. 'नमक का दारोगा' कहानी के कोई दो अन्य शीर्षक बताते हुए उसके आधार को भी स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-'नमक का दारोगा' कहानी के अन्य दो शीर्षक हो, सकते हैं-

1. **सत्य की जीत** - शीर्षक कहानी के मूल उद्देश्य से जुड़ा हुआ है। वंशीधर सत्य के पथ पर चलता हुआ बहुत संघर्ष करता है। अंततः उसी की जीत होती है।

2. **ईमानदारी** - यह शीर्षक ईमानदारी के महत्त्व को रेखांकित करता है। ईमानदारी जितनी जितनी दुर्लभ होती जाती है. उतनी-उतनी मूल्यवान होती जाती है

2. मियां नसीरुद्दीन (रेखाचित्र)

सारांश

मियां नसीरुद्दीन शब्द चित्र '**हम हशमत**' नामक संग्रह से लिया गया है । इसमें खानदानी नान भाई मियां नसीरुद्दीन के व्यक्तित्व सूचियों और स्वभाव का शब्द चित्र खींचा गया है । मियां नसीरुद्दीन अपने मसीहाई अंदाज से रोटी पकाने की कला और उसमें अपने खानदानी महारत को बताते हैं । वे ऐसे इंसान का भी प्रतिनिधित्व करते हैं जो अपने पेशे को कला का दर्जा देते हैं और करके सीखने को असली हुनर मानते हैं।

दो अंक वाले प्रश्न -

प्रश्न 1. मियाँ नसीरुद्दीन की कौन-सी बातें आपको अच्छी लगीं?

उत्तर- मियाँ नसीरुद्दीन की निम्नलिखित बातें हमें अच्छी लगीं-

1. वे आत्मविश्वास से भरपूर हैं। वे जो भी बात करते हैं, पूरे विश्वास से, जोर देकर और अदाकारी के साथ करते हैं। वे पत्रकार या महिला को सामने देखकर भी घबराते या हकलाते नहीं।
2. वे अपने काम में गहरी रुचि लेते हैं। बातें करते हुए भी उनका ध्यान अपने काम पर पूरी तरह लगा रहता है।
3. वे किसी शागिर्द का शोषण नहीं करते। वे उन्हें पूरा सम्मान और वेतन देते हैं।

प्रश्न 2. बीते हुए जमाने और आज के जमाने के बारे में मियाँ नसीरुद्दीन की क्या राय है?

उत्तर- पुराने जमाने में लोगों को खाने-पकाने का बेहद शौक था। उस समय अच्छी चीजों की लोग कद्र करना जानते थे। लेकिन नए जमाने में जल्दबाजी और दिखावा अधिक है। लोगों में तसल्ली नहीं है कि वे चीज की सही कद्र कर सके। संक्षेप में, मियाँ नसीरुद्दीन के अनुसार आज के जमाने में न तो हुनर के कद्रदान हैं और न ही वैसे हुनर वाले बचे हैं।

प्रश्न 3. पाठ में मियाँ नसीरुद्दीन का शब्दचित्र लेखिका ने कैसे खींचा है?

उत्तर-पाठ में लेखिका ने मियाँ नसीरुद्दीन का शब्द-चित्र इस प्रकार खींचा है-हमने जो अंदर झाँका तो पाया, मियाँ चारपाई पर बैठे बीड़ी का मज़ा ले रहे हैं। मौसमों की मार से पका चेहरा, आँखों में काइयाँ भोलापन और पेशानी पर मँजे हुए कारीगर के तेवर।

तीन अंक वाले प्रश्न –

प्रश्न 1. मियाँ नसीरुद्दीन को नानबाइयों का मसीहा क्यों कहा गया है ?

उत्तर- मियां नसीरुद्दीन साधारण नानबाई नहीं है। वे खानदानी नानबाई है। उनके पास छप्पन प्रकार की रोटियों को बनाने का हुनर है। वे तुनकी और रूमाली जैसी महीन रोटियों बनाना जानते है। रोटी बनाने को एक कला मानते हैं I वे स्वयं को इस कला का उस्ताद कहते हैं। उनकी बातचीत का ढंग भी महान कलाकारों जैसा है इसलिए उन्हें नानबाइयों का मसीहा ठीक ही कहा गया है।

प्रश्न 2. लेखिका मियां नसीरुद्दीन के पास क्यों गई थी?

उत्तर-लेखिका मियाँ नसीरुद्दीन की कारीगरी को जानने और उसे प्रकाशित करने के उद्देश्य से उनके पास गई थी इसलिए उसने मियाँ से रोटियाँ खरीदने की बजाय उनसे कुछ प्रश्न किए। वह पत्रकार की हैसियत से नहीं गई थी।

प्रश्न 3. बादशाह के नाम का प्रसंग आते ही लेखिका की बातों में मियाँ नसीरुद्दीन की दिलचस्पी क्यों खत्म होने लगी?

उत्तर-बादशाह के नाम का प्रसंग आते ही मियाँ नसीरुद्दीन की रुचि लेखिका की बातों में इसलिए कम होने लगी क्योंकि मियाँ ने ये सब बातें परंपरा से सुनी - सुनाई थी। उसे ठीक से सब बातों और तथ्यों का ज्ञान नहीं था। न तो उसने इनके नाम और तथ्यों का महत्त्व जाना था. न उसे इनकी जरूरत पड़ी थी। इसलिए लेखिका के प्रश्न को सुनकर वह असमंजस में पड़ गया।

प्रश्न 4. मियाँ नसीरुद्दीन के चेहरे पर किसी दबे हुए अंधड़ के आसार देख यह मजमून न छेड़ने का फैसला किया –इस कथन के पहले और बाद के प्रसंग का उल्लेख करते हुए इसे स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-मियाँ नसीरुद्दीन पत्रकारों को निठल्ला समझते थे तथा स्वयं को कामकाजी आदमी समझते थे। वे लेखिका के प्रश्नों को सुनकर पुरी तरह नीरस हो चुके थे I इसलिए उन्होंने बातचीत को बीच में काटते हुए अपने कारीगर को था 'बब्बन मियाँ, भट्टी सुलगा दो तो काम से निबटें। ' उनकी बातों में रुखाई स्पष्ट रूप से आ चुकी थी। इस बीच के मन में आया कि वह उनसे उनके बेटे-बेटियों की बात पूछ ले। परंतु नसीरुद्दीन तो काम में हरज होता देखकर उखड़ चुके थे। उनके चेहरे पर भी उसका तनाव आ चुका था। इसलिए जब लेखिका ने उनसे कारीगरों के बारे में पूछा तो उन्होंने तेज आवाज में चुभता हुआ उत्तर दिया 'खाली शागिर्दों हो नहीं साहिब, गिन के मजूरी देता हूँ। दो रुपए मन आटे की मजूरी। चार रुपए मन मैदे की मजूरी। हाँ। ' लेखिका ने नसीरुद्दीन के चेहरे पर उभर आए तनाव की भीषणता को भाँप लिया था। उसे प्रतीत हो गया था बेटे-बेटियों का सवाल छेड़ा तो मियाँ जी साफ-साफ जाने के लिए कह देंगे। इसलिए इस अवसर पर वे यह सवाल को टाल गईं I

3. अप्पू के साथ ढाई साल (संस्मरण)

पाठ का सारांश

अप्पू के साथ ढाई साल नामक संस्मरण पथेर पांचाली फिल्म के अनुभवों से संबंधित है जिसका निर्माण भारतीय फिल्म के इतिहास में एक बहुत बड़ी घटना के रूप में दर्ज है। इससे फिल्म के सृजन और उसके व्याकरण से संबंधित कई बारीकियों का पता चलता है। यही नहीं जो फिल्मी दुनिया हमें अपने ग्लैमर से चौंधियाई हुई जान पड़ती है उसका एक ऐसा सच हमारे सामने आता है जिसमें साधन हीनता के बीच अपनी कला दृष्टि को साकार करने का संघर्ष भी है। इस पाठ का भाषांतर बांग्ला मूल से विलास गीते ने किया है। किसी फिल्मकार के लिए उसकी फिल्म पहली फिल्म एक अबूझ पहेली होती है। बनने या न बन पाने की अमूर्त शंकाओं के बीच फिल्म पूरी होती है तो फिल्मकार जन्म लेता है। अपनी रचना के दौरान हर फिल्मकार का अनुभव संसार इतना रोमांचकारी होता है कि अपने जीवन में बचपन की तरह हमेशा जीवंत बना रहता है। इस संसार में दाखिल होना उस बेहतरीन फिल्म से गुजरने से कम नहीं है।

दो अंक वाले प्रश्न –

प्रश्न 1. पथेर पांचाली फ़िल्म की शूटिंग का काम ढाई साल तक क्यों चला?

उत्तर-' पथेर पांचाली' फिल्म की शूटिंग का काम ढाई साल तक इसलिए चला क्योंकि- लेखक एक विज्ञापन कंपनी में नौकरी करता था। इसलिए समय कम मिल पाता था। निर्देशक के पास धन का अभाव बना रहता था और बीच-बीच में पात्रों, स्थानों आदि की समस्याएँ आ जाती थीं।

प्रश्न 2. अब अगर हम उस जगह बाकी आधे सीन की शूटिंग करते, तो पहले आधे सीन के साथ उसका मेल कैसे देता? उनमें से कंटिन्युइटी नदारद हो जाती है। इस कथन के पीछे क्या भाव है?

उत्तर-कोई भी फिल्म दृश्य हमें तभी प्रभावित करता है, जबकि वह अखंड हो। उसके अगले और बाद वाले अंश में एक निरंतरता हो। इसी से दृश्य स्वाभाविक और विश्वसनीय बनता है। यदि किसी दृश्य का पहला अंश कुछ और तथा पिछला अंश कुछ और हो तो दर्शक भ्रम की मनःस्थिति में फँस जाता है। उसे दृश्य नकली प्रतीत होने लगता है।

प्रश्न 3. फ़िल्म में श्रीनिवास की क्या भूमिका थी और उनसे जुड़े बाकी दृश्यों को उनके गुजर जाने के बाद किस प्रकार फिल्माया गया ?

उत्तर - फ़िल्म में श्रीनिवास की भूमिका मिठाई बेचने वाले की थी। उससे संबंधित कुछ दृश्य शूट करने के बाद उसको मृत्यु हो गई। तब उससे मिलते-जुलते आदमी की तलाश की गई। लेखक को उसकी जगह जो आदमी मिला, उसकी कद-काठी तो श्रीनिवास से मिलती थी किंतु चेहरा अलग था। अतः आगे के दृश्यों को फिल्माने के लिए उसकी पीठ दिखा कर काम चलाया गया।

प्रश्न 4 सत्यजित राय ने किस दृश्य को सबसे अच्छा कहा है और क्यों?

उत्तर-सत्यजित राय ने बारिश में भीगते हुए अपू और दुर्गा के दृश्य को सबसे अच्छा कहा है। कारण यह है कि इस दृश्य में दोनों सचमुच ठंड से ठिठुर रहे थे। उनके ठिठुरने में अभिनय न होकर वास्तविकता थी। इसलिए यह दृश्य बहुत सजीव बन पड़ा है।

तीन अंक वाले प्रश्न –

प्रश्न 1. किसी फ़िल्म की शूटिंग करते समय फ़िल्मकार को जिन समस्याओं का सामना करना पड़ता है, उन्हें सूचीबद्ध कीजिए।

उत्तर- किसी फ़िल्म की शूटिंग करते समय फिल्मकार को निम्नलिखित समस्याओं का सामना करना पड़ता है-

1. धन की कमी की समस्या।

2. बारिश, धूप, अँधेरा, प्रकाश आदि प्राकृतिक समस्याएँ।
3. किसी पात्र के मर जाने या उसे बदलने की समस्या।
4. पशु-पात्रों की समस्या। उन्हें दृश्य के लिए तैयार करने की समस्या।
5. स्थान से संबंधित समस्या जैसे-काशफूलों का नष्ट हो जाना या कमरे में साँप निकल आना।
6. आसपास जुटने वाले लोगों के कारण उत्पन्न समस्याएँ जैसे, सुबोध दा तथा धोबी की समस्या।
7. उपयुक्त पात्रों की तलाश की समस्या।

4. विदाई – संभाषण (व्यंग्यात्मक निबंध)

सारांश

विदाई संभाषण बालमुकुंद गुप्त की सर्वाधिक चर्चित व्यक्ति व्यंग्य कृति शिव शंभू के चिट्ठे का एक अंश है। यह पाठ वायसराय कर्जन (जो 1899 से 1904 एवं 1904 से 1905 तक दो बार वायसराय रहे) के शासन में भारतीयों की स्थिति का खुलासा करता है। कहने को उनके शासनकाल में विकास के बहुत सारे कार्य हुए नए-नए आयोग बनाए गए किंतु उन सब का उद्देश्य शासन में अंग्रेजों का वर्चस्व स्थापित करना एवं साथ ही इस देश के संसाधनों को अंग्रेजों के हित में सर्वोत्तम उपयोग करना था। कर्जन सरकारी निरंकुशता के पक्षधर थे लिहाजा प्रेस की स्वतंत्रता तक पर उन्होंने प्रतिबंध लगा दिया। अंततः काउंसिल में ना मनपसंद अंग्रेज सदस्य नियुक्त करवाने के मुद्दे पर उन्हें देश-विदेश में दोनों जगहों पर नीचा देखना पड़ा और क्षुब्ध होकर उन्होंने अपने पद से इस्तीफा दे दिया और वापस इंग्लैंड चले गए। पाठ में भारतीयों की बेबसी, दुख एवं लाचारी को व्यंग्यात्मक ढंग से प्रकट कर कर्जन की लाचारी से जोड़ने की कोशिश की गई है साथ ही यह दिखाने की कोशिश की गई है कि शासन के आततायी रूप से हर किसी किसी को कष्ट होता है चाहे वह सामान्य जनता हो या फिर लार्ड कर्जन जैसा वायसराय। यह लेख उस समय लिखा गया है जब प्रेस पर पाबंदी का दौर चल रहा था। ऐसी स्थिति में विनोद, चुलबुलापन, संजीदगी, नवीन भाषा प्रयोग एवं रवानगी के साथ ही एक साहसिक गद्य का भी नमूना है।

दो अंक वाले प्रश्न –

प्रश्न 1. शिवशंभु की दो गायों की कहानी के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है?

उत्तर-शिवशंभु की दो गायों के माध्यम से लेखक यह कहना चाहता है कि भारत के पशु हों या मनुष्य, वे अपने सगे-साथियों के साथ गहरा लगाव रखते हैं। चाहे वे आपस में लड़ते-झगड़ते भी हों, तो भी उनका परस्पर प्रेम अटूट होता है। एक-दूसरे से विदा होते समय वे दुख अनुभव करते हैं। लेखक यह भी कहना चाहता है कि विदाई का समय करुणाजनक होता है।

प्रश्न 2. कर्जन को इस्तीफा क्यों देना पड़ गया ?

उत्तर-कर्जन के इस्तीफे के दो कारण हैं :

1. बंग-भंग की योजना को मनमाने ढंग से लागू करने के कारण सारे भारतवासी उसके विरुद्ध उठ खड़े हुए। इससे कर्जन की जड़ें हिल गई। वह इंग्लैंड वापस जाने के बहाने खोजने लगा।
2. कर्जन ने इंग्लैंड में एक फौजी अफसर को अपनी इच्छा से नियुक्त कराना चाहा। उसकी सिफारिश को अनसुना कर दिया गया। इससे क्षुब्ध होकर उसने इस्तीफ़ा देने की पेशकश कर दी।

प्रश्न 3 'विदाई-संभाषण' तत्कालीन साहसिक लेखन का नमूना है। सिद्ध कीजिए।

उत्तर- विदाई-संभाषण व्यंग्यात्मक, विनोदपूर्ण, चुलबुला, ताजगीवाला गद्य है। यह गद्य आततायी को पीड़ा की चुभन का अहसास कराता है। इससे यह नहीं लगता कि कर्ज़न ने प्रेस पर पाबंदी लगाई थी। इसमें इतने व्यंग्य प्रहार हैं कि कठोर-से-कठोर शासक भी घायल हुए बिना नहीं रह सकता। इसे साहसिक लेखन के साथ-साथ आदर्श भी कहा जा सकता है।

प्रश्न 4. आपके और यहाँ के निवासियों के बीच कोई तीसरी शक्ति भी है-यहाँ तीसरी शक्ति किसे कहा गया है?

उत्तर-यहाँ 'ईश्वर' को तीसरी शक्ति कहा गया है। लेखक के अनुसार, न तो लॉर्ड कर्जन की शक्ति सर्वोपरि है, न भारतीय जनता की इच्छा। इन दोनों से भी ऊपर है-ईश्वर की शक्ति, जिसके संकेत पर संसार के सब कार्य चलते हैं।

तीन अंक वाले प्रश्न –

प्रश्न 1. आठ करोड़ प्रजा के गिड़गिड़ाकर विच्छेद न करने की प्रार्थना पर आपने जरा भी ध्यान नहीं दिया-यहाँ किस ऐतिहासिक घटना की ओर संकेत किया गया है?

उत्तर-भारत में बंग-भंग अर्थात् बंगाल-विभाजन की घटना ऐतिहासिक महत्त्व की है। लॉर्ड कर्जन ने भारत में नित-प्रति होने वाली क्रांतिकारी घटनाओं का समाधान करने के लिए एक कूटनीतिक योजना बनाई। इसके अंतर्गत उसने बंगाल क्षेत्र का विभाजन करने की योजना बनाई। भारत की जनता कर्जन के कलुषित इरादों को समझ गई। अतः बंगाल की आठ करोड़ जनता ये तो बंग-भंग का पुरजोर विरोध किया ही, पूरा भारत इसके विरुद्ध खड़ा हो गया। इस घटना ने स्वतंत्रता आंदोलन की चिंगारी को और अधिक भड़का दिया।

प्रश्न 2 बिचारिए तो, क्या शान आपकी इस देश में थी और अब क्या हो गई! कितने ऊँचे होकर आप कितने नीचे गिरे - इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-लॉर्ड कर्जन को भारत में जैसा मान-सम्मान और जैसी शान-शौकत भोगने को मिली, वैसी किसी भी अन्य शासक को नहीं मिली होगी। दिल्ली दरबार में उसकी कुर्सी सोने की थी। उसका हाथी जुलूस में सबसे आगे और ऊँचा चलता था। उसे सम्राट् एडवर्ड के भाई से भी अधिक सम्मान मिला। उसके एक इशारे पर देश के धनी-मानी लोग और राजा-महाराजा हाथ बाँधे खड़े रहते थे। उसने अपने संकेत भर से बड़े-बड़े राजाओं को मिट्टी में मिला दिया और नाचीज़ों को आसमान तक ऊँचा उठा दिया। कहाँ तो उसकी ऐसी ऊँची आन-बान थी और कहाँ, ऐसी हालत हो गई कि एक अदना-सा फौजी-अफसर भी उसकी सिफारिश पर नहीं रखा गया, उलटे उसी का इस्तीफा स्वीकार कर लिया गया।

लेखक यह कहना चाहता है कि इस परिवर्तन के पीछे लॉर्ड कर्जन का जिद्दी स्वभाव है। वह घमंड में भूला हुआ था। इसी घमंड ने उसकी यह दुर्गति कर दी।

प्रश्न 3 लॉर्ड कर्जन की इच्छा क्या थी? उसका क्या कुपरिणाम हुआ?

उत्तर-लॉर्ड कर्जन की इच्छा यह थी कि वह भारतवर्ष में पनपने वाले सारे वैर-विरोध को शांत कर दे। इस तरह यहाँ ब्रिटिश साम्राज्य की जड़ें बहुत गहरी बना दे। इसके लिए उसने बंग-भंग की योजना बनाई ताकि वहाँ उत्पन्न होने व राजनीतिक विरोध फिर से सिर न उठाए। कर्जन की इस इच्छा का परिणाम एकदम विपरीत हुआ। बंगाल के लोग बंग-भंग की योजना से शांत होने की वजह क्षुब्ध हो उठे। चारों ओर अशांति फैल गई। स्वतंत्रता का आंदोलन आग की तरह भड़क उठा।

5. गलता लोहा (कहानी)

सारांश

गलता लोहा शेखर जोशी की कहानी कला का एक प्रतिनिधि नमूना है। समाज के जातिगत विभाजन पर कई कोणों से टिप्पणी करने वाली या कहानी इस बात का उदाहरण है कि शेखर जोशी के लेखन में अर्थ की गहराई का दिखावा और बड़बोला पर जितना भी कम है वास्तविकता में वास्तविक अर्थ गाम्भीर्य उतना ही अधिक। लेखक की किसी मुखर टिप्पणी के बगैर ही पूरे पाठ से गुजरते हुए हम यह देख पाते हैं कि एक मेधावी किंतु निर्धन ब्राह्मण युवक मोहन किन परिस्थितियों के चलते उस मनोदशा तक पहुँचता है कि उसके लिए जाति अभिमान बेमानी हो जाता है। सामाजिक विधि निषेध को ताक पर रखकर वह धनराम लोहार के आफ़र पर बैठता ही नहीं उसके काम में भी अपनी कुशलता भी दिखाता है। मोहन का व्यक्तित्व जातिगत आधार पर निर्मित झूठे भाईचारे की जगह मेहनतकशों के सच्चे भाईचारे की प्रस्तावना प्रस्तुत करता प्रतीत होता है मानों लोहा गल कर एक नया रूप, नया आकार ले रहा हो।

दो अंक वाले प्रश्न -

प्रश्न 1. मोहन ने पुरोहिती का धंधा क्यों नहीं अपनाया ?

उत्तर-इस कहानी में मोहन की इच्छा अनिच्छा प्रकट नहीं की गई है। परंतु उसके घर की स्थितियाँ इस बात का संकेत हैं कि पुरोहिती-कर्म से उसका गुजारा नहीं हो सकता था। उसके पिता ने इस कर्म के बल पर जैसे-तैसे ही पेट पाला इसलिए उसे इस व्यवसाय में कोई रुचि नहीं थी।

प्रश्न 2 . मास्टर त्रिलोक सिंह मोहन पर क्यों मुग्ध थे?

उत्तर- मास्टर त्रिलोक सिंह मोहन की प्रतिभा और उसकी उच्च पारिवारिक पृष्ठभूमि के कारण उस पर मुग्ध थे। उन्हें मोहन को निम्नलिखित बातें पसंद थीं-

1. मोहन मेधावी छात्र था। उसकी बुद्धि प्रखर थी।
2. वह अच्छा गायक भी था।
3. वह पुरोहिती खानदान का ब्राह्मण बालक था।

तीन अंक वाले प्रश्न –

प्रश्न 1 धनराम मोहन को अपना प्रतिद्वंद्वी क्यों नहीं समझता था?

उत्तर- धनराम के मन में नीची जाति के होने की बात बचपन से बिठा दी गई थी। दूसरे, मोहन कक्षा में सबसे होशियार था। इस कारण मास्टर जी ने उसे कक्षा का मॉनीटर बना दिया था। तीसरे, मास्टर जी कहते थे कि एक दिन मोहन बड़ा आदमी बनकर स्कूल और उनका नाम रोशन करेगा। उसे भी मोहन से बहुत आशाएँ थीं। इन सभी कारणों से वह मोहन को अपना प्रतिद्वंद्वी नहीं समझता था।

प्रश्न 2 धनराम को मोहन के इस व्यवहार पर आश्चर्य होता है और क्यों?

उत्तर- मोहन ब्राह्मण जाति का था। उस गाँव में ब्राह्मण स्वयं को श्रेष्ठ समझते थे तथा शिल्पकारों के साथ उठते-बैठते नहीं थे। यदि उन्हें बैठने के लिए कह दिया जाता तो भी उनकी मार्यादा भंग होती थी। धनराम की दुकान पर काम खत्म होने के बाद भी मोहन देर तक बैठा रहा। यह देखकर धनराम हैरान हो गया। वह और अधिक हैरान तब हुआ जब मोहन ने उसके हाथ से हथौड़ा लेकर लोहे पर नपी-तुली चोट मारने लगा और धौंकनी फूँकते हुए भट्ठी में गरम किया और ठोक पीठकर उसे गोल रूप दे रहा था।

प्रश्न 3 मास्टर त्रिलोक सिंह के किस कथन को लेखक ने ज़बान के चाबुक कहा है और क्यों?

उत्तर- एक दिन धनराम को तेरह का पहाड़ा नहीं आया तो आदत के अनुसार मास्टर जी ने संटी मँगवाई और धनराम से सारा दिन पहाड़ा याद करके छुट्टी के समय सुनाने को कहा। जब छुट्टी के समय तक उसे पहाड़ा याद न हो सका तो मास्टर जी ने उसे मारा नहीं वरन् कहा कि "तेरे दिमाग में तो लोहा भरा है रे! विद्या का ताप कहाँ लगेगा इसमें ?" यही वह कथन था जिसे पाठ में लेखक ने जबान के चाबुक कहा है, क्योंकि धनराम एक लोहार का बेटा था और मास्टर जी का यह कथन उसे मार से भी अधिक चुभ गया। जैसा कि कहा भी जाता है 'मार का घाव भर जाता है, पर कड़वी जबान का नहीं भरता'। यही धनराम के साथ हुआ और निराशा के कारण वह अपनी पढ़ाई आगे जारी नहीं रख सका।

प्रश्न 4 वंशीधर को धनराम के शब्द क्यों कचोटते रहे?

उत्तर- वंशीधर को अपने पुत्र से बड़ी आशाएँ थी। वे उसके अफसर बनकर आने के सपने देखते थे। एक दिन धनराम ने उनसे मोहन के बारे में पूछा तो उन्होंने घास का एक तिनका तोड़कर दाँत खोदते हुए बताया कि उसकी सक्रेटेरियट में नियुक्ति हो गई है। शीघ्र ही वह बड़े पद पर पहुँच जाएगा। धनराम ने उन्हें कहा कि मोहन लला बचपन से ही बड़े बुद्धिमान थे। ये शब्द वंशीधर को कचोटते रहे, क्योंकि उन्हें मोहन की वास्तविक स्थिति का पता चल चुका था। लोगों से प्रशंसा सुनकर उन्हें दु:ख होता था।

प्रश्न 5 गाँव और शहर, दोनों जगहों पर चलने वाले मोहन के जीवन-संघर्ष में क्या फ़र्क है? चर्चा करें और लिखें।

उत्तर- गाँव में मोहन अपने लिए संघर्ष कर रहा था। दूसरे गाँव की पाठशाला में जाने के लिए प्रतिदिन नदी पार करना, मन लगाकर पढ़ना, हर अध्यापक के मन में अपनी जगह बनाना–ये सारे संघर्ष वह अपना भविष्य बनाने और अपने माता-पिता के सपने पूरे करने के लिए कर रहा था। लखनऊ शहर में जाकर रमेश के घर में आलू लाना, दही लाना, धोबी को कपड़े देकर आना-ये सब काम वह रमेश के परिवार के लिए कर रहा था। इससे उसका अपना भविष्य धूमिल हो गया और माता-पिता के सपने टूट गए। गाँव का होनहार बालक शहर में घरेलू नौकर बनकर रह गया था। इसी प्रकार के तर्क लिखकर सहपाठियों के साथ चर्चा का आयोजन किया जा सकता है।

6. रजनी (पटकथा)

सारांश

यहाँ मन्नू भंडारी जी द्वारा लिखित एक पटकथा पढ़ने जा रहे हैं। पटकथा यानी जो स्क्रीन के लिए लिखी गई वह कथा रजत पट का स्क्रीन के लिए भी हो सकती है। पाठ में रजनी धारावाहिक की एक कड़ी दी जा रही है। रजनी पिछली सदी के नौवें दशक में एक बहुचर्चित टीवी धारावाहिक रहा है। यह वह समय था जब हम लोग और दुनिया जैसे सॉप ओपेरा दूरदर्शन का भविष्य का निर्माण कर रहे थे। बासु चटर्जी के निर्देशन में बने इस धारावाहिक की हर कड़ी अपने में स्वतंत्र और मुकम्मल और उन्हें आपस में गूँथने वाली पात्र रजनी हर कड़ी में जुझारू और इंसाफ पसंद स्त्री पात्र, किसी न किसी सामाजिक, राजनीतिक समस्या से जूझते हुए व्यवस्था की समस्या की ओर ध्यान खींचता है।

दो अंक वाले प्रश्न

प्रश्न 1 गलती करने वाला तो है ही गुनहगार, पर उसे बर्दाश्त करने वाला भी कम गुनहगार नहीं होता-इस संवाद के संदर्भ में आप सबसे ज्यादा किसे और क्यों गुनहगार मानते हैं?

उत्तर-मेरी दृष्टि में दोषी दोनों हैं-ट्यूशन के लिए जबरदस्ती करने वाला अध्यापक भी और उस जबरदस्ती को सहने वाला व्यक्ति भी। जबरदस्ती सहन करने वाला व्यक्ति कुछ अधिक दोषी है क्योंकि वह अन्याय का विरोध करने की शक्ति नहीं जुटा पाता। वह अन्यायी को अन्याय करने की छूट देता है। इससे अन्यायी का साहस बढ़ता है।

प्रश्न 2. स्त्री के चरित्र की बनी बनाई धारणा से रजनी का चेहरा किन मायनों में अलग है?

उत्तर-रजनी का चेहरा स्त्री के चरित्र की धारणा से बिल्कुल भिन्न है। भारतीय स्त्री शक्तिहीन, सहनशील और कोमल मानी जाती है। वह संघर्षों से दूर रहना चाहती है। इस नाटक की नायिका रजनी संघर्षशील, असहनशील, जुझारू और शक्तिमती है। वह अपने सामने होता हुआ अन्याय नहीं देख सकती। वह तुरंत दोषी व्यक्ति के विरुद्ध संघर्ष छेड़ देती है और देखते-ही-देखते जन-आंदोलन खड़ा कर देती है।

प्रश्न 3. 'रजनी' के चरित्र की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर-'रजनी' इस पाठ की नायिका है। उसके चरित्र का सबसे बड़ा गुण है-संघर्षशीलता। वह अन्याय के विरुद्ध मोर्चा खड़ा करने में कुशल है। वह निर्भय, बेबाक तथा आत्मविश्वास से भरपूर महिला है। वह सत्य के लिए किसी से भी टकराने की शक्ति रखती है। उसमें लोगों को एकत्र करने तथा उन्हें अपनी बातों से प्रभावित करने की अद्भुत शक्ति है। वह सच्चे अर्थों में नायिका है।

तीन अंक वाले प्रश्न

प्रश्न 1 वार्षिक परीक्षाओं की कॉपियाँ न दिखाने के पीछे क्या तर्क है? क्या आप उससे सहमत हैं?

उत्तर-हैडमास्टर महोदय वार्षिक परीक्षाओं की कॉपियाँ न दिखाने के पीछे केवल यही तर्क देते हैं कि ऐसा करने से छात्रों तथा उनके अभिभावकों की भीड़ लग जाएगी। उन्हें निपटाना एक जंजाल हो जाएगा।

मैं हैडमास्टर के इस तर्क से सहमत नहीं हूँ। एक जंजाल से बचने के लिए किसी के भविष्य को चौपट तो नहीं किया जा सकता । इस नियम से भ्रष्ट अध्यापकों की चाँदी हो जाएगी । वे मनमानी करेंगे तथा कॉपियाँ जाँचने में लापरवाही बरतेंगे। इससे योग्य छात्रों का भविष्य चौपट हो जाएगा। इस नियम से भ्रष्ट अध्यापकों पर कोई नियंत्रण नहीं रहेगा।

प्रश्न 2. ट्यूशन पढ़ाने वाले पाठक जी किस युक्ति से अमित को ट्यूशन पढ़ने के लिए बाध्य करते हैं?

उत्तर - पाठक जी अमित को ट्यूशन पढ़ने के लिए निम्नलिखित युक्तियों से बाध्य करते हैं-

1. वे अमित को डराते हैं कि वार्षिक परीक्षा में पूरे अंक लेने के लिए ट्यूशन आवश्यक हैं।
2. वे उसे धमकी भी देते हैं कि ट्यूशन के बिना 'रह जाओगे। '
3. वे ट्यूशन पढ़ने वाले अन्य लड़कों के नाम लेकर उसे प्रेरित करते हैं।

प्रश्न 3. रजनी धारावाहिक की इस कड़ी की मुख्य समस्या क्या है? क्या होता अगर-

(क) अमित का पर्चा सचमुच खराब होता।

(ख) संपादक रजनी का साथ न देता।

उत्तर- रजनी धारावाहिक की इस कड़ी की मुख्य समस्या शिक्षा का व्यवसायीकरण है। स्कूल के अध्यापक बच्चों को ज़बरदस्ती ट्यूशन पढ़ने के लिए विवश करते हैं तथा ट्यूशन न लेने पर वे उनको कम अंक देते हैं।

(क) यदि अमित का पर्चा खराब होता तो यह समस्या सामने नहीं आती और न ही रजनी इसे आंदोलन का रूप दे पाती। बच्चों और अभिभावकों को ट्यूशन के शोषण से पीड़ित होना पड़ता।

(ख) यदि संपादक रजनी का साथ न देता तो यह समस्या सीमित लोगों के बीच ही रह जाती। कम संख्या का बोर्ड पर कोई असर नहीं होता। आंदोलन पूरी ताकत से नहीं चल पाता और सफलता संदिग्ध रहती।

प्रश्न :1 प्रश्न 4 'रजनी' पाठ का प्रतिपाद्य बताइए।

उत्तर -यह पाठ शिक्षा के व्यवसायीकरण, ट्यूशन के रैकेट, अधिकारियों की उदासीनता तथा आम जनता द्वारा अन्याय का विरोध आदि के बारे में बताता है। यह हमें अन्याय का विरोध करने की प्रेरणा देता है। यह पाठ सिखाता है कि यदि अन्याय को नहीं रोका गया तो वह बढ़ता जाएगा। अन्याय का विरोध समाज को साथ लेकर हो सकता है, क्योंकि आम आदमी की सहभागिता के बिना सामाजिक, प्रशासनिक व राजनैतिक व्यवस्था में सकारात्मक परिवर्तन संभव नहीं है।

7.जामुन का पेड़ (कहानी)

सारांश

जामुन का पेड़ कृश्न चंदर की एक प्रसिद्ध हास्य व्यंग्य कथा है। हास्य व्यंग्य के लिए चीजों को अनुपात से ज्यादा-फैलाकर दिखलाने की परिपाटी पुरानी है और यह कहानी भी उसका अनुपालन करती है। इसलिए यहाँ घटनाएं अतिशयोक्तिपूर्ण और अविश्वसनीय जान पड़े तो कोई हैरत की बात नहीं। विश्वसनीयता ऐसी रचनाओं के मूल्यांकन की कसौटी नहीं हो सकती। प्रस्तुत पाठ में हँसते -हँसते ही हमारे भीतर इस बात की समझ पैदा होती है कि कार्यालय तौर कितना तरीकों में पाया जाने वाला विस्तार कितना निरर्थक और पदानुक्रम- निरर्थक है। बात यहीं तक नहीं रहती, इस व्यवस्था के संवेदनशून्य और अमानवीय होने का पक्ष भी हमारे सामने आता है।

दो अंक वाले प्रश्न –

प्रश्न 1 माली को दबे हुए आदमी से सहानुभूति होने का क्या कारण था?
उत्तर - माली का काम लॉन में लगे पेड़-पौधों की देखभाल करना था। रात की आँधी में सचिवालय के लॉन में खड़ा पेड़ गिर गया तथा उसके नीचे एक आदमी दब गया। माली ने विभाग को इसकी सूचना देदी जब तक पेड़ नहीं हटता, तब तक माली की ड्यूटी उसकी देखभाल की थी। इसलिए उसे पेड़ के नीचे दबे व्यक्ति से सहानुभूति हो गई। वह जल्द से जल्द इस समस्या से भी छुटकारा पाना चाहता है।
प्रश्न 2 जामुन का पेड़ गिरा देखकर क्लर्क ने क्या प्रतिक्रिया की?
उत्तर- लॉन में जामुन का पेड़ गिर गया। उसे देखकर क्लर्क को दुख हुआ, क्योंकि अब उसे उसके मीठे फल खाने को नहीं मिलेंगे। उसे पेड़ के नीचे दबे व्यक्ति की कोई चिंता नहीं थी।
प्रश्न 3 माली ने दबे हुए आदमी को बाहर निकालने के लिए क्या शर्त लगाई?
उत्तर -माली सरकारी कर्मचारी था। अगर वह स्वयं उस व्यक्ति को निकालने का निर्णय लेता तो ऊपर के अधिकारी उसे परेशान करते। अत : उसने अपनी परेशानी को देखते हुए सुपरिंटेंडेंट साहब से इजाजत लेने की बात कही। उसने कहा कि अगर सुपरिंटेंडेंट साहब हुक्म दें तो अभी पंद्रह-बीस माली, चपरासी और क्लर्क लगाकर पेड़ के नीचे से दबे हुए आदमी को निकाला जा सकता है।
प्रश्न 4 हॉर्टीकल्चर विभाग का जवाब व्यंग्यपूर्ण क्यों था?
उत्तर -हॉर्टीकल्चर विभाग के सचिव ने जवाब दिया कि उनका विभाग 'पेड़ लगाओ' अभियान जोर शोर से चला रहा है इस अभियान में किसी भी अधिकारी को पेड़ काटने की बात नहीं सोचनी चाहिए। जामुन फलदार पेड़ है। अत: सरकार फलों की अधिक चिंता रहती है, व्यक्ति की जान की नहीं।

तीन अंक वाले प्रश्न

प्रश्न :1'जामुन का पेड़' पाठ का प्रतिपाद्य बताइए।

उत्तर -जामुन का पेड़ कृश्नचंदर की प्रसिद्ध हास्य-व्यंग्य कथा है। हास्य-व्यंग्य के लिए चीजों को अनुपात से ज्यादा फैला-फुलाकर दिखलाने की परिपाटी पुरानी है और यह कहानी भी उसका अनुपालन करती है। इसलिए इसकी घटनाएँ अतिशयोक्ति और अविश्वसनीय लगने लगती हैं। विश्वसनीयता ऐसी रचनाओं के मूल्यांकन की कसौटी नहीं हो सकती। यह पाठ यह स्पष्ट करता है कि कार्यालयी तौर-तरीकों में पाया जाने वाला विस्तार कितना निरर्थक और पदानुक्रम कितना हास्यस्पद है। यह व्यवस्था के संवेदनशून्य व अमानवीयता के रूप को भी बताता है।

प्रश्न 2. यह कहना कहाँ तक युक्तिसंगत है कि इस कहानी में हास्य के साथ-साथ करुणा की भी अंतर्धारा है। अपने उत्तर के पक्ष में तर्क दीजिए।

उत्तर- यह कहना बिल्कुल सही है कि यह कहानी हास्य के साथ-साथ करुणा की भी अंतर्धारा है। व्यक्ति पेड़ के नीचे दबा हुआ है। चारों तरफ भीड़ जमा है। वे जामुन के पेड़ तथा रसीले जामुनों की चर्चा कर रहे हैं, परंतु दबे व्यक्ति को बचाने का प्रयास नहीं होता। बल्कि , अधिकारियों तथा विभागों की फूहड़ हरकतें हास्य के साथ करुणा को जाग्रत करती हैं। फाइल चलती रहती है। माली ही दया करके उसे खाना खिला देता है। कुछ लोग आदमी को काटकर उसे प्लास्टिक सर्जरी से जोड़ने की बात कहते हैं। यह संवेदनहीनता का चरम रूप है। कल्चर विभाग का सचिव उसे अकादमी का सदस्य बना देता है, उससे मिठाई माँगता है, परंतु उसे बचाने का प्रयास नहीं करता। देशों के संबंध के नाम पर आम आदमी की बलि चढ़ाई जा सकती है। ये सभी घटनाएँ करुणा की गहनता को व्यक्त करती हैं।

प्रश्न 3. दबा हुआ आदमी एक कवि है, यह बात कैसे पता चली और इस जानकारी का फाइल की यात्रा पर क्या असर पड़ा?

उत्तर- सेक्रेटेरियट के लॉन में खड़ा जामुन का पेड़ रात की आँधी में गिर गया। इसके नीचे एक आदमी दब गया। उसे बचाने के लिए एक सरकारी फाइल बनी। वह एक विभाग से दूसरे विभाग में जाने लगी। माली ने उस आदमी को हौंसला देते हुए उसे खिचड़ी खिलाई और कहा कि उसका मामला ऊपर तक पहुँच गया है। तब उस व्यक्ति ने आह भरते हुए गालिब का शेर कहा-

"ये तो माना कि तगाफुल न करोगे लेकिन
खाक हो जाएँगे हम तुमको खबर होने तक!"

माली उसे पूछता है कि क्या आप शायर हैं? उसने 'हाँ' में सिर हिलाया। फिर माली ने यह बात क्लकों को बताई। इस प्रकार यह बात सारे शहर में फैल गई। सेक्रेटेरियट में शहर-भर के कवि व शायर इकट्ठे हो गए। फाइल कल्चर डिपार्टमेंट को भेजी गई। वहाँ का सचिव उस व्यक्ति का इंटरव्यू लेने आया और उसे अकादमी का सदस्य बना दिया किंतु यह कहकर कि पेड़ से नीचे से निकालने का काम उसके विभाग का नहीं है वह फाइल वन विभाग को भेज या देता है। इससे पेड़ हटाने या काटने की अनुमति मिलने का रास्ता और लंबा हो गया है।

8. भारत माता (निबंध)

सारांश

जवाहरलाल नेहरू ने 'भारत माता' नामक पाठ में भारत की धरती, संस्कृति और यहाँ के लोगों को 'भारत माता' की संज्ञा दी है। पाठ का सार इस प्रकार है-किसानों से वार्ता-जवाहरलाल नेहरू जब भी एक जलसे से दूसरे जलसे में जाते थे तो वे श्रोताओं से 'भारत माता' की चर्चा किया करते थे। विशेष रूप से वे किसानों से अपने देश और आजादी की चर्चा अवश्य किया करते थे। वे उन्हें बताते थे कि कैसे उत्तर से दक्षिण तथा पूर्व से पश्चिम तक पूरा देश एक है और उनकी समस्याएँ भी एक-सी हैं। वे उन्हें खैबर दरें से लेकर कन्याकुमारी तक का हाल बताते थे और कहते

थे कि देश के सभी किसान उनसे एक-से सवाल करते हैं। गरीबी, कर्ज, पूँजीपतियों का शोषण, जमीदार, महाजन, कड़े लगान, सूद, पुलिस के अत्याचार और विदेशी शासन-ये ही उनकी समस्याएँ थीं। नेहरू जी ने कोशिश की कि भारतवासी पूरे हिंदुस्तान के बारे में सोचें तथा विदेशी शासन से छुटकारा पाएँ।

विदेशी शासन की चर्चा-जवाहरलाल नहेरू अपनी बातचीत में चीन, स्पेन, अबीसिनिया, यूरोप, मिस्र और पश्चिमी एशिया में होने वाले संघर्षों का भी वर्णन किया करते थे। वे उन्हें रूस में हो रहे परिवर्तनों तथा अमरीका की उन्नति के बारे में भी बताते थे। किसानों को विदेशों के बारे में समझाना आसान नहीं था। परंतु यह काम कठिन भी नहीं लगा। कारण यह था कि किसानों ने पुराने महाकाव्यों तथा पुराणों की कथा कहानियाँ पक्ष रखे थे। कुछों ने तीर्थ-यात्राएँ की हुई थीं। इस बहाने वे देश के चारों धामों की यात्रा कर चुके थे। कुछ सिपाहियों ने बड़ी-बड़ी लड़ाइयों में हिस्सा लिया था। कुछ लोग 1930 में आई आर्थिक मंदी के कारण दूसरे देशों को जानते थे।

'भारत माता की जय' के नारे पर प्रश्न कभी-कभी नेहरू जी का स्वागत 'भारत माता की जय' के नारे से होता था। तब वे किसानों से भारत माता के बारे में पूछते थे। प्रायः इस बारे में उन्हें जानकारी नहीं होती थी। एक हट्टे-कट्टे जाट किसान ने उन्हें बताया कि भारत माता का अर्थ है भारत की धरती। तब नेहरू उनसे पूछते थे कि कौन-सी धरती? उनके गाँव की धरती, जिले, सूबे या पूरे देश की धरती। इस प्रश्न पर किसान फिर हैरान रह जाते थे।

भारत माता की व्याख्या-नेहरू जो उन्हें बताते थे कि हिंदुस्तान वह सब तो है ही जो वे सोचते हैं। वह उससे भी कहीं अधिक है। यहाँ के नदी, पहाड़, जंगल, खेत और करोड़ों भारतीय मिलकर 'भारत माता' कहलाते हैं। भारत माता की जय का मतलब है-इन सबकी जय। जब वे स्वयं को भी भारत माता का अंग समझते थे तो उनकी आँखों में चमक आ जाती थी।

दो अंक वाले प्रश्न –

प्रश्न 1. नेहरू जी भारत के सभी किसानों से कौन-सा प्रश्न बार-बार करते थे?

उत्तर- नेहरू जी भारत के सभी किसानों से निम्नलिखित प्रश्न बार-बार करते थे-

(क) वे 'भारत माता की जय' से क्या समझते हैं? (ख) यह भारत माता कौन है?

(ग) वह धरती कौन-सी है जिसे वे भारत माता कहते हैं-गाँव की, जिले की, सूबे की या पूरे हिंदुस्तान की?

प्रश्न 2. दुनिया के बारे में किसानों को बताना नेहरू जी के लिए क्यों आसान था?

उत्तर- नेहरू जी के लिए किसानों को दुनिया के बारे में बताना आसान था। इसके निम्नलिखित कारण हैं –

- महाकाव्यों व पुराणों की कथा-कहानियों से किसान पहले से परिचित थे।
- तीर्थयात्राओं के कारण देश के चारों कोनों पर है।

- कुछ सिपाहियों ने प्रथम विश्वयुद्ध में भाग लिया था।
- कुछ लोग विदेशों में नौकरियाँ करते थे।
- 1930 की आर्थिक मंदी के कारण दूसरे मुल्कों के बारे में जानकारी थी।

प्रश्न 3. किसान सामान्यत: भारत माता का क्या अर्थ लेते थे?

उत्तर- किसान सामान्यत: 'भारत माता' का अर्थ-धरती से लेते थे। नेहरू जी ने उन्हें समझाया कि उनके गाँव, जिले, नदियाँ, पहाड़, जंगल, खेत, करोड़ों भारतीय सभी भारत माता हैं।

प्रश्न 4. भारत माता के प्रति नेहरू जी की क्या अवधारणा थी?

उत्तर- नेहरू जी की अवधारणा थी कि हिंदुस्तान वह सब कुछ है जिसे उन्होंने समझ रखा है, लेकिन वह इससे भी बहुत ज्यादा है। देश का हर हिस्सा- नदी, पहाड़, खेत आदि सभी इसमें शामिल हैं। दरअसल भारत में रहने वाले करोड़ों लोग हैं, 'भारत माता की जय' का अर्थ है-करोड़ों भारतवासियों की जय। इस धारणा का अर्थ है-देशवासियों से ही देश बनता है।

प्रश्न 5. आजादी से पूर्व किसानों को किन समस्याओं का सामना करना पड़ता था?

उत्तर- आजादी से पूर्व किसानों को निम्नलिखित समस्याओं का सामना करना पड़ता था- गरीबी, कर्जदारी, पूँजीपतियों के शिकजे में फैंसे रहना, जमींदारों और महाजनों के कर्ज के जाल में फैंसकर तड़पना, लगान की कठोरता से वसूली, पुलिस के अत्याचार, अधिक ब्याज देना तथा विदेशी शासन के अत्याचार।

प्रश्न 6. लोगों की आँखों में कब चमक आ जाती थी?

उत्तर- नेहरू जी लोगों को बताते थे कि तुम ही भारत माता के अंश हो। एक तरह से तुम ही भारत माता हो। यह बात जब उनकी समझ में आ जाती थी तो उनकी आँखों में चमक आ जाती थी। उन्हें लगता था मानो उन्होंने कोई खोज कर ली हो।

तीन अंक वाले प्रश्न -

प्रश्न 1 आपकी दृष्टि में भारत माता और हिंदुस्तान की क्या संकल्पना है? बताइए।

उत्तर- मेरी दृष्टि में भारत माता या हिंदुस्तान वह देश है जो विभिन्न भौगोलिक सीमाओं से आबद्ध है। उत्तर में हिमालय इसका मस्तक है जो प्रहरी के समान इसकी रात-दिन रक्षा करता है तो दक्षिण में सागर इसके चरणों को पखारता है। अनेक नदियाँ, पहाड़, जंगल, खेत, पशु-पक्षी इसकी शोभा में वृद्धि करते हैं। इस देश का हर निवासी इसका अंश है। इन सबको मिलाकर बना हुआ देश भारत है।

प्रश्न 2. भारत माता' पाठ का प्रतिपाद्य बताइए।

उत्तर- 'भारत माता' अध्याय हिंदुस्तान की कहानी का पाँचवाँ अध्याय है। इसमें नेहरू ने बताया है कि किस तरह देश के कोने-कोने में आयोजित जलसों में जाकर वे आम लोगों को बताते थे कि अनेक हिस्सों में बँटा होने के बाद भी हिंदुस्तान एक है। इस अपार फैलाव के बीच एकता के क्या आधार हैं और क्यों भारत एक देश है, जिसके सभी हिस्सों की नियति एक ही तरीके से बनती-बिगड़ती है। उन्होंने भारत माता शब्द पर भी विचार किया तथा यह निष्कर्ष निकाला कि भारत माता की जय का मतलब है यहाँ के करोड़ों-करोड़ लोगों की जय।

प्रश्न 3. लेखक गाँवों व शहरों में अपने भाषणों में क्या अंतर रखते थे?

उत्तर- लेखक देश भर में भ्रमण कर जगह-जगह भाषण देते थे। शहरों में उनके भाषणों का विषय अलग होता था। शहरी लोग शिक्षित व समझदार होते थे। उनकी समस्याएँ भी भिन्न प्रकार की होती थीं। वहाँ नेहरू जी विकास या स्वतंत्रता संबंधी बातें करते थे। गाँव में लोग अनपढ़ या कम पढ़े-लिखे होते थे। उनका दायरा भी सीमित होता था तथा वे संकीर्ण मानसिकता के थे। देहातों में नेहरू विदेशों की चर्चा करते थे। उन्हें यह समझाते थे कि वे देश का ही एक हिस्सा है। वे देश की एकता पर बल देते थे।

वितान पुस्तक के पाठों पर आधारित प्रश्नोत्तर

पाठ 1 – भारतीय गायिकाओं में बेजोड़ - लता मंगेशकर - कुमार गन्धर्व

सारांश:

यह लेख प्रसिद्ध शास्त्रीय गायक कुमार गंधर्व द्वारा लिखा गया है। इसमें उन्होंने लता मंगेशकर की गायकी की विशेषताओं को एक संगीतकार की दृष्टि से देखा है। वे बताते हैं कि लता मंगेशकर की आवाज में ऐसी मधुरता, स्पष्टता और आत्मीयता है जो श्रोता को बाँध लेती है। वे मानते हैं कि लता जी की आवाज एक शुद्ध 'सुर' है और उनकी गायकी में 'भाव' की अद्वितीय गहराई है।

लेखक यह भी कहते हैं कि लता का गायन केवल एक गीत नहीं, बल्कि एक कलात्मक अनुभव होता है - जिसमें शब्द, राग, भाव और शुद्धता का सुंदर सामंजस्य होता है। उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि लता मंगेशकर की आवाज में कुछ ऐसा अनूठा है जो एक संगीत साधक के लिए भी रहस्य की तरह है।

मूल भाव:

इस पाठ का मूल भाव यह है कि लता मंगेशकर केवल एक गायिका नहीं, बल्कि भारतीय संगीत की एक जीवंत परंपरा हैं। कुमार गंधर्व ने इस लेख में एक कलाकार की नजर से दूसरे महान कलाकार के प्रति सम्मान और श्रद्धा प्रकट की है। यह पाठ गायकी की ऊँचाइयों, सुर की शुद्धता और आत्मीयता के महत्त्व को दर्शाता है।

महत्वपूर्ण प्रश्न-उत्तर:

प्रश्न 1. कुमार गंधर्व के अनुसार लता मंगेशकर की गायकी की सबसे बड़ी विशेषता क्या है?

उत्तर:कुमार गंधर्व के अनुसार, लता मंगेशकर की गायकी की सबसे बड़ी विशेषता है उनकी आवाज की शुद्धता और भावों की प्रामाणिकता। उनकी आवाज में शब्दों की स्पष्टता, भावों की सच्चाई और रचनात्मकता का अनुपम मेल है।

प्रश्न 2. लेखक लता मंगेशकर की आवाज को 'सुर की साक्षात मूर्ति' क्यों कहते हैं?

उत्तर:क्योंकि लता मंगेशकर की आवाज में सुर की शुद्धता और संगीत की आत्मा होती है। उनकी गायकी में भाव और रचना का ऐसा संतुलन है जो श्रोताओं को आध्यात्मिक अनुभूति देता है। इसी कारण लेखक उन्हें सुर की साक्षात् मूर्ति कहते हैं।

प्रश्न 3. लेखक ने लता मंगेशकर के उच्चारण की कौन-सी विशेषता बताई है?

उत्तर:लेखक के अनुसार, लता मंगेशकर के उच्चारण में शब्दों की पूरी शुद्धता, स्पष्टता और भावानुकूलता होती है। वह शब्दों को केवल बोलती नहीं, बल्कि उन्हें आत्मा से प्रस्तुत करती हैं, जिससे गीत का अर्थ और भावना और अधिक प्रभावशाली हो जाते हैं।

प्रश्न 4. लता मंगेशकर की गायकी से लेखक को किस प्रकार की प्रेरणा मिली?

उत्तर: लेखक को लता मंगेशकर की गायकी से यह प्रेरणा मिली कि सुर और भाव का सही तालमेल ही संगीत को महान बनाता है। साथ ही, उन्होंने यह भी सीखा कि कलाकार को अपने आप को पीछे रखकर रचना और भाव को प्रमुखता देनी चाहिए।

प्रश्न 5: लेखक ने लता मंगेशकर की गायकी को सुर की साक्षात मूर्ति क्यों कहा है? स्पष्ट करें।

उत्तर:लेखक कुमार गंधर्व स्वयं एक प्रतिष्ठित शास्त्रीय गायक रहे हैं, इसलिए उन्होंने लता मंगेशकर की गायकी को गहराई से समझा और सराहा। वे कहते हैं कि लता की आवाज में केवल मधुरता नहीं, बल्कि उसमें सुर की दिव्यता और आत्मा की पवित्रता है।

वे गीत को पूरी निष्ठा, समझ और भावना के साथ गाती हैं। उनकी आवाज में शुद्धता, स्पष्टता और कोमलता है। उनका हर स्वर शब्दों के अर्थ और भावना को उजागर करता है।

लेखक मानते हैं कि लता केवल गीत नहीं गातीं, वे कविता की आत्मा को स्वर देती हैं। यही कारण है कि उन्होंने लता को 'सुर की साक्षात मूर्ति' कहा है।

प्रश्न 6: लता मंगेशकर की गायकी में भावनात्मकता और कलात्मकता का सुंदर समन्वय किस प्रकार देखने को मिलता है?

उत्तर: लता मंगेशकर की गायकी में भाव और कला का अद्भुत संतुलन है। वे गीत को केवल राग और सुर में नहीं बाँधती , बल्कि गीत के भाव को आत्मसात् करके गाती हैं।

उनका उच्चारण शुद्ध और स्पष्ट होता है, जिससे श्रोता गीत के शब्दों को भली-भांति समझ पाता है। वे गीत की स्थिति, पात्र, भाव और कविता के अर्थ को ध्यान में रखकर गायन करती हैं।

उनकी यही विशेषता उन्हें अन्य गायिकाओं से अलग और श्रेष्ठ बनाती है। उनका गायन शास्त्रीय संगीत की गंभीरता और लोकप्रिय संगीत की सरलता -दोनों का सुंदर संगम है।

प्रश्न 7: पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि लता मंगेशकर की सफलता के पीछे उनके व्यक्तित्व की कौन-कौन-सी विशेषताएँ रही हैं?

उत्तर:लता मंगेशकर की सफलता केवल उनकी गायन प्रतिभा के कारण नहीं, बल्कि उनके संयमित, समर्पित और विनम्र व्यक्तित्व का भी परिणाम है। वे हमेशा संगीत के प्रति गंभीर रही हैं और कभी भी दिखावे या व्यर्थ की लोकप्रियता के पीछे नहीं भागीं।

उनका अनुशासन, मेहनत, और कलाप्रेम उनकी सफलता की नींव है।
उन्होंने कभी गीतों को केवल व्यवसाय के रूप में नहीं लिया, बल्कि हर गीत को एक भावात्मक और कलात्मक अनुभव के रूप में प्रस्तुत किया।
उनकी यही दृष्टि और साधना उन्हें 'भारतीय गायिकाओं में बेजोड़' बनाती है।
प्रश्न 8: आपको लता की गायकी में कौन-सी विशेषताएँ नजर आती हैं? उदाहरण सहित बताइए।
उत्तर: सुरीलापन – लता के गायन में सुरीलापन है। उनके स्वर में अद्भुत मिठास, तन्मयता, मस्ती, लोच आदि हैं।
निर्मल स्वर - लता के स्वरों में निर्मलता है। लता का जीवन की ओर देखने का जो दृष्टिकोण है।
कोमलता -लता के स्वरों में कोमलता व मुग्धता है।
नादमय उच्चारण – यह लता के गायन की अन्य विशेषता है।
शास्त्रीय शुद्धता - लता के गीतों में शास्त्रीय शुद्धता है।
हमें लता की गायकी में उपर्युक्त सभी विशेषताएँ नजर आती हैं। उन्होंने भक्ति, देशप्रेम, शृंगार , विरह आदि हर भाव के गीत गाए हैं।
प्रश्न 9: लेखक ने पाठ में गानपन का उल्लेख किया है। पाठ के संदर्भ में स्पष्ट करते हुए बताएँ कि आपके विचार में इसे प्राप्त करने के लिए किस प्रकार के अभ्यास की आवश्यकता है?
उत्तर:'गानपन' का शाब्दिक अर्थ है - वह गायकी जो एक आम इंसान को भी भाव-विभोर कर दें। गीत को गाने में मन की गहराइयों से भाव पिरोए जाएँ, यही उनका प्रयास रहता है।
लता जी की लोकप्रियता का मुख्य कारण यही गानपन है।
यह गुण अपनी गायकी में लाने के लिए गायक को भरपूर रियाज़ करना चाहिए।
स्वरों का जितना स्पष्ट व निर्मल उच्चारण होगा, संगीत उतना ही मधुर होगा।
रसों के अनुसार उनकी लयात्मकता भी होनी चाहिए।

पाठ 2 - राजस्थान की रजत बूंदें – अनुपम मिश्र

सारांश:

यह पाठ जल-संरक्षण पर आधारित है और इसमें लेखक ने राजस्थान के लोगों की जल-प्रबंधन कला को बड़े सुंदर और प्रेरणादायक ढंग से प्रस्तुत किया है।
राजस्थान में जहाँ वर्षा कम होती है, वहाँ के लोगों ने पीढ़ी दर पीढ़ी अपने जीवन अनुभव और तकनीक से ऐसे तालाब, बावड़ियाँ, जोहड़, कुंड आदि बनाएं जो वर्षा जल को संजोते थे।
लेखक बताते हैं कि वहाँ पानी को 'बूँद-बूँद' सहेजने की परंपरा है। यह पाठ न केवल जल संरक्षण के वैज्ञानिक पक्ष को उजागर करता है, बल्कि समाज के सामूहिक श्रम, दूरदृष्टि और पर्यावरणीय संतुलन की भावना को भी रेखांकित करता है।

मूल भाव:

इस पाठ का मूल भाव जल संरक्षण की पारंपरिक भारतीय समझ और स्थानीय ज्ञान की महत्ता को उजागर करना है। लेखक यह संदेश देते हैं कि प्रकृति के साथ संतुलन बनाकर, स्थानीय संसाधनों का सदुपयोग कर और सामूहिक प्रयासों के माध्यम से जल जैसे अमूल्य संसाधन को संरक्षित किया जा सकता है।

महत्वपूर्ण प्रश्न-उत्तर:

प्रश्न 1. 'राजस्थान की रजत बूँदें' शीर्षक का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
उत्तर:'रजत' का अर्थ होता है 'चाँदी' और 'बूँदें' का अर्थ जल की बूँदें है। लेखक ने जल को चाँदी जैसी अमूल्य और कीमती वस्तु माना है। राजस्थान जैसे सूखे प्रदेश में पानी की हर बूँद जीवनदायिनी होती है, इसलिए लेखक ने वर्षाजल को 'रजत बूँदें' कहा है।
प्रश्न 2. लेखक ने पारंपरिक जल संरचनाओं की किन-किन विशेषताओं का उल्लेख किया है?
उत्तर: लेखक ने इन विशेषताओं का उल्लेख किया है:
वे स्थानीय भौगोलिक परिस्थितियों के अनुसार बनाई जाती थीं।
वे स्थायी और टिकाऊ होती थीं।
समाज में सामूहिक श्रम और सहभागिता से उनका निर्माण और रखरखाव होता था।
वे केवल जल-संग्रह की नहीं, बल्कि सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का भी केंद्र होती थीं।
प्रश्न 3. राजस्थान के लोग वर्षा जल को संजोने के लिए कौन-कौन सी विधियाँ अपनाते थे?
उत्तर:राजस्थान के लोग वर्षा जल को संजोने के लिए तालाब, बावड़ियाँ, कुंड, जोहड़, नाड़ी, तड़ाग, तलैया आदि का निर्माण करते थे।
ये सभी जल-स्रोत विशेष डिजाइन और गणना से बनाए जाते थे ताकि वर्षा की एक-एक बूँद संरक्षित की जा सके।

प्रश्न 4. लेखक पारंपरिक जल-संरक्षण प्रणाली को आधुनिक तरीकों से बेहतर क्यों मानते हैं?
उत्तर: क्योंकि पारंपरिक जल-संरक्षण प्रणाली –
स्थानीय पर्यावरण और जन-जीवन के अनुरूप थी।
उसमें प्राकृतिक संसाधनों का दोहन नहीं, संरक्षण होता था।
यह प्रणाली सस्ती, स्थायी और सामुदायिक भागीदारी पर आधारित थी।
इसके विपरीत आधुनिक प्रणाली मंहगी, यंत्रों पर आधारित और अस्थायी है, जिसमें समाज की भागीदारी बहुत कम होती है।
प्रश्न 5: लेखक ने राजस्थान के जल-संरक्षण के पारंपरिक तरीकों को किस प्रकार अनुकरणीय बताया है?
उत्तर:लेखक अनुपम मिश्र ने राजस्थान की पारंपरिक जल-संरक्षण प्रणाली को न केवल प्रशंसनीय बल्कि वर्तमान समय के लिए आदर्श और अनुकरणीय बताया है। राजस्थान, जो भारत का एक शुष्क प्रदेश है, वहाँ वर्षा बहुत कम होती है, फिर भी वहाँ के लोगों ने जल के संरक्षण की अत्यंत प्रभावशाली तकनीकें विकसित कीं।
लेखक बताते हैं कि वहाँ के लोग तालाब, बावड़ियाँ, कुंड, जोहड़, नाड़ी, तड़ाग आदि जल-संचयन की संरचनाएँ बनाते थे। इनका निर्माण पूरी वैज्ञानिक समझ, अनुभव और स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार होता था। सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि ये सब काम सामूहिक श्रम द्वारा होता था । जिससे समाज में सहयोग, एकता और जिम्मेदारी का भाव भी पनपता था।
लेखक मानते हैं कि ये प्रणालियाँ स्थायी, सस्ती और पर्यावरण-सम्मत थीं। आज जब जल संकट एक बड़ी समस्या बन चुकी है, ऐसे समय में राजस्थान की यह परंपरा एक बड़ी प्रेरणा बन सकती है।
प्रश्न 6: 'राजस्थान की रजत बूँदें' पाठ किस प्रकार वर्तमान समाज को जल-संरक्षण का संदेश देता है?
उत्तर:'राजस्थान की रजत बूँदें' पाठ वर्तमान समाज को यह सिखाता है कि जल जैसे अमूल्य संसाधन का सदुपयोग और संरक्षण कैसे किया जाए। लेखक ने बताया है कि कम वर्षा वाले क्षेत्रों में भी यदि सही तकनीक और सामाजिक सहयोग हो, तो जल संकट को रोका जा सकता है।
वर्तमान समय में हम अत्यधिक भू-जल दोहन, जल प्रदूषण और पानी की बर्बादी कर रहे हैं। लेखक ने चेतावनी दी है कि अगर हम पुराने जल-संरक्षण के उपायों को न अपनाएँगे, तो भविष्य में हमें भारी संकट का सामना करना पड़ेगा।
यह पाठ हमें प्रकृति के साथ संतुलन, स्थानीय ज्ञान की महत्ता और सामूहिक भागीदारी का महत्व समझाता है। यह केवल भूतकाल का वर्णन नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए एक संदेश और समाधान है।
प्रश्न 7: राजस्थान की जल-संरक्षण प्रणालियाँ सामाजिक जीवन से किस प्रकार जुड़ी थीं?
उत्तर:राजस्थान की पारंपरिक जल-संरक्षण प्रणालियाँ केवल जल संचयन तक सीमित नहीं थीं, बल्कि वे समाज के सांस्कृतिक, धार्मिक और सामुदायिक जीवन का भी अभिन्न अंग थीं।
तालाब और बावड़ियाँ गाँव के केंद्र बिंदु होते थे, जहाँ लोग एकत्र होते, मेलों और धार्मिक आयोजनों का आयोजन होता। कई जलस्रोत धार्मिक मान्यताओं से जुड़े होते, जिससे लोगों में उनके संरक्षण की भावना स्वाभाविक रूप से विकसित होती।
इसके अतिरिक्त, इन संरचनाओं का निर्माण और देखभाल सामूहिक रूप से की जाती थी, जिससे समाज में सहयोग, सहभागिता और उत्तरदायित्व की भावना उत्पन्न होती थी। इस प्रकार, जल-संरक्षण वहाँ केवल तकनीकी नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक परंपरा का हिस्सा था।
प्रश्न 8: राजस्थान में कुंई किसे कहते हैं? इसकी गहराई और व्यास तथा सामान्य कुओं की गहराई और व्यास में क्या अंतर होता है?
उत्तर:नमी को पानी के रूप में बदलने के लिए चार-पाँच हाथ के व्यास की जगह को तीस से साठ हाथ की गहराई तक खोदा जाता है।
खुदाई के साथ-साथ चिनाई भी की जाती है।
इस चिनाई के बाद खड़िया की पट्टी पर रिस-रिस कर पानी एकत्र हो जाता है।
इसी तंग गहरी जगह को कुंई कहा जाता है। यह कुएँ का स्त्रीलिंग रूप है।
यह कुएँ से केवल व्यास में छोटी होती है, परंतु गहराई में लगभग समान होती है।
आम कुएँ का व्यास पंद्रह से बीस हाथ का होता है, परंतु कुंई का व्यास चार या पाँच हाथ होता है।
प्रश्न 9: कुंई निर्माण से संबंधित निम्न शब्दों के बारे में लिखिए -पालरपानी, पातालपानी, रेजाणीपानी।
उत्तर:पालरपानी- यह पानी का वह रूप है जो सीधे बरसात से मिलता है। यह धरातल पर बहता है।
इसे नदी, तालाब आदि में रोका जाता है।
पातालपानी- जो पानी भूमि में जाकर भू-जल में मिल जाता है, उसे पाताल पानी कहते हैं।
इसे कुओं, पंपों, ट्यूबवेलों आदि के द्वारा निकाला जाता है।
रेजाणीपानी- यह पानी धरातल से नीचे उतरता है, परंतु पाताल में नहीं मिलता है।
यह पालरपानी और पातालपानी के बीच का है।

प्रश्न 10: निजी होते हुए भी सार्वजनिक क्षेत्र में कुंइयों पर ग्राम समाज का अंकुश लगा रहता है। लेखक ने ऐसा क्यों कहा होगा?
उत्तर: अपनी-अपनी व्यक्तिगत कुंई बना लेना और मनमाने ढंग से उसका प्रयोग करना समाज के अंकुश से परे हो जाएगा।
अतः सार्वजनिक स्थान पर बनी व्यक्तिगत कुंई पर और उसके प्रयोग पर समाज का अंकुश रहता है।
यदि वहाँ हरेक व्यक्ति ज्यादा कुंई बनाएगा तो क्षेत्र की नमी बँट जाएगी जिससे कुंई की पानी एकत्र करने की क्षमता पर फर्क पड़ेगा।

पाठ 3 – आलो आंधारि- बेबी हालदार

सारांश

यह पाठ लेखिका बेबी हालदार की आत्मकथा 'आलो आँधारि' से लिया गया है। इसमें उन्होंने अपने जीवन के संघर्षपूर्ण अनुभवों को बहुत ही मार्मिक और सच्चे स्वर में प्रस्तुत किया है।
बेबी हालदार का जन्म एक गरीब परिवार में हुआ था। माँ उन्हें छोड़कर चली गई और पिता ने जल्दी शादी कर दी। बचपन में ही उनका बाल विवाह हो गया और कम उम्र में ही उन्हें घरेलू हिंसा, उपेक्षा, और शोषण का सामना करना पड़ा। पति द्वारा सताए जाने के बाद वे अपने बच्चों को लेकर दिल्ली आ गईं और घरेलू नौकरानी का काम करने लगीं। एक दिन उनके नियोक्ता (प्रसिद्ध लेखक प्रकाश पंडित) को उनकी लिखावट पसंद आई और उन्होंने उन्हें लिखने के लिए प्रेरित किया। यहीं से बेबी का जीवन बदल गया और उन्होंने अपनी आत्मकथा लिखनी शुरू की।

मूल भाव:

इस पाठ का मूल भाव यह है कि संघर्षों से जूझते हुए भी अगर इंसान में आत्मबल हो, तो वह अपने जीवन को बदल सकता है। बेबी हालदार ने विपरीत परिस्थितियों में भी हार नहीं मानी। उन्होंने अपने जीवन की सच्चाइयों को स्वीकार किया, उनसे सीखा और उन्हें अपने लेखन का माध्यम बनाया। यह पाठ नारी-सशक्तिकरण, स्वाभिमान, और असमानता के विरुद्ध संघर्ष का जीवंत उदाहरण है।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न-उत्तर:

प्रश्न 1: आलो आँधारि पाठ का शीर्षक उपयुक्त क्यों है?
उत्तर: 'आलो आँधारि' बंगला शब्द है, जिसका अर्थ होता है – 'प्रकाश और अंधकार'। लेखिका के जीवन में बचपन से अंधकार (कष्ट, गरीबी, उत्पीड़न) रहा, लेकिन बाद में उन्हें प्रकाश (स्वावलंबन, पहचान, लेखन की दुनिया) भी मिला।
यह शीर्षक उनके जीवन की दुविधा, संघर्ष और अंततः उभार को सही रूप में दर्शाता है, इसलिए यह अत्यंत उपयुक्त है।
प्रश्न 2: बेबी हालदार के जीवन में बदलाव कैसे आया?
उत्तर: बेबी हालदार दिल्ली में घरेलू कामगार के रूप में काम कर रही थीं। उनके नियोक्ता प्रकाश पंडित, जो स्वयं एक लेखक थे, ने उनकी लिखावट और विचारों को पहचान कर उन्हें लेखन के लिए प्रेरित किया।
यहीं से उन्होंने अपने जीवन की सच्चाइयाँ कागज़ पर उतारनी शुरू कीं और उनकी आत्मकथा 'आलो आँधारि' ने उन्हें एक लेखिका के रूप में पहचान दिलाई। इसी लेखन ने उनके जीवन की दिशा बदल दी।
प्रश्न 3: लेखिका ने अपने बचपन को 'अंधकार' क्यों कहा है?
उत्तर: लेखिका का बचपन अत्यंत दुःखद और संघर्षपूर्ण था। उनकी माँ उन्हें छोड़कर चली गई थीं, पिता ने जल्दी शादी कर दी, और उन्हें प्यार, देखभाल या शिक्षा कुछ भी नहीं मिली।
बाल विवाह, घरेलू हिंसा और उपेक्षा ने उनके बचपन को 'अंधकारमय' बना दिया था। इसी कारण उन्होंने अपने बचपन को 'अंधकार' कहा है।
प्रश्न 4: इस आत्मकथा से हमें क्या सीख मिलती है?
उत्तर: इस आत्मकथा से हमें यह सीख मिलती है कि परिस्थितियाँ चाहे जितनी भी कठिन क्यों न हों, अगर मन में हिम्मत, स्वाभिमान, और आत्मबल हो, तो कोई भी व्यक्ति अपने जीवन को बदल सकता है।
यह पाठ विशेष रूप से महिलाओं के लिए प्रेरणादायक है कि वे अपने हक और अस्तित्व के लिए खड़ी हो सकती हैं।
प्रश्न 5: आलो आँधारि पाठ लेखिका के जीवन की किन प्रमुख घटनाओं को उजागर करता है?
उत्तर: "आलो आँधारि" पाठ लेखिका बेबी हालदार की आत्मकथा का अंश है, जिसमें उन्होंने अपने संघर्षपूर्ण जीवन, बाल विवाह, घरेलू हिंसा, और आर्थिक तंगी जैसी स्थितियों का यथार्थ चित्रण किया है।
बेबी का बचपन बहुत ही दुखद था। उनकी माँ उन्हें छोड़कर चली गईं और पिता ने जल्दबाज़ी में उनका विवाह कर दिया। कम उम्र में ही उन्हें एक ऐसे पति के साथ रहना पड़ा जो हिंसक था और उन्हें शारीरिक तथा मानसिक रूप से प्रताड़ित करता था। शादी के बाद उन्होंने लगातार यातनाएँ सहीं, लेकिन बच्चों के लिए सब कुछ सहती रहीं।

एक दिन उन्होंने अत्याचारों से तंग आकर अपने बच्चों को साथ लिया और दिल्ली आ गईं। यहाँ उन्होंने घरेलू कामकाज शुरू किया। सौभाग्य से उन्हें एक ऐसे घर में काम मिला जहाँ साहित्यिक माहौल था। उनके मालिक प्रकाश पंडित ने उनके भीतर के लेखक को पहचाना और उन्हें लिखने के लिए प्रेरित किया। इस प्रोत्साहन से उन्होंने अपनी आत्मकथा लिखी, जिसने उन्हें एक लेखिका की पहचान दिलाई।

यह पाठ उनके जीवन की दर्दभरी लेकिन प्रेरणादायक यात्रा को दर्शाता है।

प्रश्न 6: आलो आँधारि पाठ नारी सशक्तिकरण का जीवंत उदाहरण कैसे है?

उत्तर: यह पाठ नारी सशक्तिकरण का उत्कृष्ट उदाहरण इसलिए है क्योंकि इसमें एक साधारण घरेलू महिला द्वारा अपने आत्मसम्मान की रक्षा, स्वावलंबन की खोज और अपने अस्तित्व को पहचानने की प्रेरक कहानी है।

बेबी हालदार ने जीवन की कठोरतम परिस्थितियों को झेला—बाल विवाह, घरेलू हिंसा, गरीबी, अपमान। लेकिन उन्होंने कभी हार नहीं मानी। जब उन्हें मौका मिला, उन्होंने खुद को अभिव्यक्त किया और अपने अनुभवों को आत्मकथा के रूप में लिखा। इससे न केवल उन्होंने अपनी पहचान बनाई, बल्कि समाज में भी एक उदाहरण प्रस्तुत किया कि, एक महिला किसी भी स्थिति से निकल सकती है यदि उसमें साहस और आत्मबल हो।

इस तरह यह पाठ महिलाओं को यह सिखाता है कि वे दमन, अन्याय और शोषण के खिलाफ आवाज़ उठा सकती हैं और एक सम्मानजनक जीवन जी सकती हैं।

प्रश्न 7: आलो आँधारि पाठ का शीर्षक पाठ की विषयवस्तु के लिए कितना सार्थक है?

उत्तर: 'आलो आँधारि' का अर्थ है – प्रकाश और अंधकार। यह शीर्षक लेखिका के जीवन के दो पक्षों का प्रतीक है।

1. ' आँधारि' (अंधकार): उनके बचपन का दुःखद समय – माँ का चले जाना, बाल विवाह, पति की प्रताड़ना, गरीबी, अपमान।

2. 'आलो' (प्रकाश): जब उन्हें एक लेखक के रूप में पहचाना गया, उन्होंने आत्मकथा लिखी, सम्मान मिला और उन्होंने नया जीवन आरंभ किया।

यह शीर्षक न केवल उनके व्यक्तिगत जीवन की यात्रा को दर्शाता है, बल्कि यह भी बताता है कि हर अंधकार के बाद उजाला आता है। इसलिए यह शीर्षक अत्यंत सार्थक और प्रभावशाली है।

प्रश्न 8: घरेलू नौकरों को और किन- किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है?

उत्तर:

- इन लोगों को आर्थिक सुरक्षा नहीं मिलती।
- इन्हें गंदे व सस्ते मकान किराए पर मिलते हैं क्योंकि ये अधिक किराया नहीं दे सकते।
- इनका शारीरिक शोषण भी किया जाता है।
- इनके काम के घंटे भी अधिक होते हैं।

प्रश्न 9: तुम दूसरी आशापूर्णा देवी बन सकती हो- जेठू का यह कथन रचना संसार के किस सत्य को उद्घाटित करता है?

उत्तर: तुम दूसरी आशापूर्णा देवी बन सकती हो' –

जेठू का यह कथन बेबी को यही बात समझाने के लिए था कि तुम भी आशापूर्णा देवी जैसे जीवन में आगे बढ़ सकती हो। आशापूर्णा देवी भी सारा काम-काज निबटाकर रात-रात भर चोरी-चोरी लिखती थी, जब लोग सो जाते थे। जब सारी झुग्गी बस्ती सो जाती तो वह लेखन कार्य करती रहती थी। अपने लेखन के माध्यम से बाद में आशापूर्णा देवी ने अपना नाम कमाया। उसी प्रकार बेबी हालदार भी अपने लेखन के माध्यम से जीवन में नई पहचान बना सकती है।

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, जम्मू संभाग

आदर्श प्रश्न पत्र (2025-26)

कक्षा – ग्यारहवीं

विषय - हिंदी (आधार) विषय कोड - (302)

निर्धारित समय: 03 घंटे **अधिकतम अंक : 80**

सामान्य निर्देश:

- ❖ यह प्रश्न-पत्र तीन खण्डों में विभाजित है।
- ❖ खंड - क में अपठित बोध पर आधारित प्रश्न पूछे गए हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
- ❖ खंड- ख में पाठ्यपुस्तक अभिव्यक्ति और माध्यम से प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।
- ❖ खंड - ग में पाठ्यपुस्तक आरोह तथा वितान से प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।
- ❖ तीनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है, यथासंभव तीनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर क्रमशः लिखिए।

<table>
<tr><td>प्रश्न</td><td>खंड-क (अपठित बोध)</td><td>अंक
18</td></tr>
<tr><td>1.</td><td>निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-</td><td>(10)</td></tr>
<tr><td></td><td>नवाचार (Innovation) वह शक्ति है जो समाज, उद्योग और अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने का कार्य करती है। यह केवल नई खोजों या तकनीकों तक सीमित नहीं है, बल्कि किसी मौजूदा प्रक्रिया, उत्पाद या सेवा में ऐसा सुधार करना है जिससे वह अधिक प्रभावी और उपयोगी बन सके। 21वीं सदी में नवाचार केवल प्रतिस्पर्धा का साधन नहीं, बल्कि जीवंतता और सतत विकास की अनिवार्य शर्त बन चुका है।

आज के युग में डिजिटल नवाचार ने हर क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन किए हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), ब्लॉकचेन, इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT) और बायोटेक्नोलॉजी जैसे क्षेत्रों में हो रहे नवाचारों ने स्वास्थ्य, शिक्षा, व्यापार और संचार को अधिक कुशल और सुलभ बना दिया है। उदाहरण के लिए, टेलीमेडिसिन और रोबोटिक सर्जरी ने चिकित्सा सेवाओं को दूरस्थ क्षेत्रों तक पहुँचाया है, जबकि ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफॉर्म ने शिक्षा को वैश्विक स्तर पर विस्तारित किया है।

नवाचार केवल तकनीकी परिवर्तन नहीं लाता, बल्कि यह समाज की सोच और जीवनशैली में भी बदलाव करता है। स्टार्टअप संस्कृति, हरित ऊर्जा समाधान, स्मार्ट सिटीज और डिजिटल भुगतान प्रणालियाँ नवाचार के उदाहरण हैं जो सामाजिक-आर्थिक प्रगति को बढ़ावा देते हैं। सरकारें और कंपनियाँ अब अनुसंधान एवं विकास (R&D) में अधिक निवेश कर रही हैं ताकि वैश्विक प्रतिस्पर्धा में अग्रणी बना जा सके।

नवाचार भविष्य का निर्माण करता है। यह जिज्ञासा, रचनात्मकता और समाधान खोजने की प्रक्रिया है जो मानवता को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने में सहायक है। एक नवाचारी सोच ही किसी राष्ट्र को सशक्त और आत्मनिर्भर बना सकती है।</td><td></td></tr>
<tr><td>क</td><td>स्टार्टअप संस्कृति, हरित ऊर्जा समाधान और स्मार्ट सिटीज किसका उदाहरण हैं?
अ- केवल वैज्ञानिक अनुसंधान ब- तकनीकी बाधाएँ
स- सामाजिक-आर्थिक नवाचार द- पारंपरिक व्यापार मॉडल</td><td>1</td></tr>
<tr><td>ख</td><td>कॉलम A में दिए गए कथनों के अनुसार कॉलम B से सही मिलान कीजिए:
<table><tr><td>स्तंभ A (नवाचार के क्षेत्र)</td><td>स्तंभ B (संबंधित नवाचार)</td></tr><tr><td>1. स्वास्थ्य</td><td>(A) ब्लॉकचेन और डिजिटल भुगतान प्रणाली</td></tr></table></td><td>1</td></tr>
</table>

	2. संचार	**(B) हरित ऊर्जा समाधान और स्मार्ट सिटीज**
	3. व्यापार	**(C) रोबोटिक सर्जरी और टेलीमेडिसिन**
	4. शिक्षा	**(D) 5G नेटवर्क और इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT)**
	5. पर्यावरण	**(E) ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफॉर्म और VR तकनीक**
	विकल्प- अ - 1-(C) 2-(D) 3-(A) 4-(B) 5-(E) ब - 1-(C) 2-(D) 3-(B) 4-(A) 5-(E) स - 1-(C) 2-(E) 3-(A) 4-(B) 5-(D) द- 1-(C) 2-(D) 3-(A) 4-(E) 5-(B)	
ग	**प्रश्नों में दिए गए दोनों कथन-कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर सही उत्तर का चयन करें:** **कथन -** पारंपरिक सोच और वित्तीय बाधाएँ नवाचार को धीमा कर सकती हैं। **कारण-** नवाचार के लिए केवल वैज्ञानिक अनुसंधान आवश्यक होता है, सामाजिक समर्थन की कोई आवश्यकता नहीं होती। अ- कथन सही है, लेकिन कारण गलत है। ब- कथन गलत है, लेकिन कारण सही है। स- कथन और कारण दोनों सही हैं, और कारण कथन की सही व्याख्या करता है। द - कथन और कारण दोनों सही हैं, लेकिन कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता।	1
घ	नवाचार (Innovation) का मुख्य उद्देश्य क्या है?	1
ड.	कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और ब्लॉकचेन किस प्रकार नवाचार को बढ़ावा देते हैं?	2
च	क्या सभी नवाचार समाज के लिए लाभकारी होते हैं? अथवा इसके नकारात्मक प्रभाव भी होते हैं? स्पष्ट कीजिए-	2
छ	नवाचार को बढ़ावा देने के लिए कौन-कौन क्या-क्या योगदान दे रहे हैं?	2
2	**दिए गए पद्यांश पर आधारित पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-**	**(08)**
	अलसाई भोर में गुलाब मुस्काते, ओस की बूँदों में मोती झिलमिलाते। सुरमई अम्बर पर किरणें बिखरतीं, शीतल पवन संग सुगंधियाँ निखरतीं। सरिता की लहरें मधुर गीत गातीं, कलकल प्रवाह में ध्वनि मधुर छुपातीं। नील नभ में उड़ते विहग मृदुल गान, झूमते तरु भी करें नव अभिनन्दन। वन के सघन छाँव में छुपे अनुराग, कुंजों में महकते रजनीगंधा के फाग। मधुकर गुनगुनाते सुमन की गोद में, बसंत छेड़ता मधुर राग मोद में। चंद्र किरणें गिरें शांत झीलों पे जब, मधुर स्वप्न जैसे उतरते हों तब। सुधा-सा छलकता चकोरों का प्यार, रजनी में घुलती चाँदनी अपार।	

	कुदरत का हर रंग अनुपम, निराला, हर दृश्य है जैसे कवि का उजाला। प्रकृति की यह छवि, यह कोमलता, सौंदर्य का गीत है, मधुरिम सरलता।	
क	'"अलसाई भोर में गुलाब मुस्काते" पंक्ति का क्या तात्पर्य है? अ- गुलाब थके हुए हैं ब- सुबह के समय गुलाब खिले हुए प्रतीत होते हैं स- गुलाब रात में ही खिलते हैं द- भोर में गुलाब झड़ जाते हैं।	1
ख	"सरिता की लहरें मधुर गीत गातीं" – इस पंक्ति में किस अलंकार का प्रयोग हुआ है? अ- रूपक ब- उपमा स- अनुप्रास द- मानवीकरण	1
ग	कॉलम A में दिए गए कथनों को कॉलम B में दिए गए कारणों से मिलाएं: कॉलम A / कॉलम B 1. गुलाब की मुस्कान — (a) कवि का उजाला 2. चंद्र किरणें — (b) बसंत ऋतु का संगीत 3. मधुकर का गान — (c) भोर का सौंदर्य 4. सुरमई अम्बर — (d) बिखरी किरणों से चमकता है 5. प्रकृति का हर दृश्य — (e) झीलों पर सुधा-सा प्रकाश **विकल्प-** अ - 1 - (d) 2 - (e) 3 - (b) 4 - (a) 5 - (c) ब - 1- (c) 2 - (e) 3 - (b) 4 - (d) 5 - (a) स - 1 - (a) 2 - (b) 3 - (e) 4 - (d) 5 - (c) द- 1 -(a) 2 - (e) 3 - (b) 4 - (d) 5 - (c)	1
घ	"हर दृश्य है जैसे कवि का उजाला" – इस पंक्ति का गूढ़ अर्थ क्या है?	1
ड.	इस कविता में प्रकृति का चित्रण केवल बाहरी सौंदर्य तक सीमित है, या इसमें कोई दार्शनिकता भी छिपी है?	2
च	कवि ने प्रकृति के सौंदर्य को किन-किन तत्त्वों से सजाया है?	2
प्रश्न सं.	**खंड-ख (अभिव्यक्ति और माध्यम पुस्तक पर आधारित प्रश्न)**	**अंक (22)**
3.	निम्नलिखित में से **किसी एक** विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए- क) मनमोहक दृश्य का जादू ख) मोबाइल बिन लागे सब सून' ग) परिश्रम का मीठा अहसास	**6**
4.	आपका क्षेत्र दिनोंदिन दुराचार और ठगी का शिकार होता जा रहा है और प्रशासन कुंभकर्णी नींद में सोया है। जिला उपायुक्त का आकर्षित करवाते हुए किसी प्रतिष्ठित समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए। **अथवा** अपने मौहल्ले में वर्षा के कारण जल भराव से उत्पन्न हुई मौसमी बीमारियों की ओर ध्यान आकृष्ट करवाते हुए नगर-पालिका के स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखिए।	**5**
5 अ	निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर **किन्हीं चार** प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए-	**4X2=8**
क	संचार के क्या-क्या कार्य हैं उदाहरण के साथ समझाइए ?	2
ख	किसी घटना, विचार या समस्या के समाचार बनने हेतु कौन-कौन से तत्त्व महत्वपूर्ण होते हैं ? लिखिए।	2
ग	डायरी एक व्यक्तिगत दस्तावेज़ है, कैसे ?	2
घ	कार्यसूची की आवश्यकता कब और कहाँ होती है ?	2
ड.	उम्मीदवारों के चयन में स्ववृत्त की क्या भूमिका होती है ?	2

<table>
<tr><td>5 ब</td><td>निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किसी एक प्रश्न के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए-</td><td>1X3</td></tr>
<tr><td></td><td>पटकथा के प्रमुख अंग कितने और कौन-कौन से होते हैं?
अथवा
निम्नलिखित शब्दों को शब्दकोश के अनुसार क्रम में लिखिए – इच्छित, इक्षु, अनंग, अंग, अंत अकर्म</td><td></td></tr>
<tr><td>प्रश्न सं.</td><td>खंड-ग (पाठ्यपुस्तक आरोह तथा वितान पर आधारित प्रश्न)</td><td>अंक (40)</td></tr>
<tr><td>6</td><td>निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए-</td><td>5x1=5</td></tr>
<tr><td></td><td>मेरे तो गिरिधर गोपाल, दूसरो न कोई
जा के सिर मोर-मुकुट, मेरो पति सोई
छांडि दयी कुल की कानि, कहा करिहै कोई?
संतन ढिग बैठी-बैठी, लोक-लाज खोयी
अंसुवन जल सींचि-सींचि, प्रेम बेलि बोयी
अब त बेलि फैलि गई,आणंद-फल होयी</td><td></td></tr>
<tr><td>क</td><td>‘छांडि दयी कुल की कानि’ में कानि शब्द का अर्थ है?
(अ) शिक्षा (ब) सुख-सुविधा (स) धन-संपत्ति (द) मर्यादा</td><td>1</td></tr>
<tr><td>ख</td><td>“अब त बेलि फैलि गई, आणंद-फल होयी" पंक्ति में किसकी प्राप्ति का संकेत है?
(अ) सांसारिक सुख की प्राप्ति (ब) आध्यात्मिक प्रेम के फलित होने की स्थिति
(स) धन और संपत्ति का विस्तार (द) सांसारिक पद और प्रतिष्ठा की प्राप्ति</td><td>1</td></tr>
<tr><td>ग</td><td>नीचे दिए गए कॉलम A (कथन) को सही कॉलम B (अर्थ) से मिलाइए।
<table>
<tr><th>कॉलम A (कथन)</th><th>कॉलम B (अर्थ)</th></tr>
<tr><td>1. "जा के सिर मोर-मुकुट, मेरो पति सोई"</td><td>a. भक्त को सांसारिक कुल-मर्यादा का भय नहीं रहा</td></tr>
<tr><td>2. "संतन ढिग बैठी-बैठी, लोक-लाज खोयी"</td><td>b. भक्त ने प्रेम रूपी बेल को अपने आँसुओं से सींचा</td></tr>
<tr><td>3. "अंसुवन जल सींचि-सींचि, प्रेम बेलि बोयी"</td><td>c. भक्त श्रीकृष्ण को ही अपना पति मानती है</td></tr>
<tr><td>4. “छांडि दयी कुल की कानि, कहा करिहै कोई”</td><td>d. भक्त केवल श्रीकृष्ण को अपना सर्वस्व मानती है</td></tr>
<tr><td>5. "मेरे तो गिरिधर गोपाल, दूसरो न कोई"</td><td>e. भक्त ने समाज की परवाह छोड़ दी।</td></tr>
</table>
विकल्प-
(अ)- 1-(c) 2-(e) 3-(b) 4-(a) 5-(d) (ब)- 1-(c) 2-(e) 3-(b) 4-(d) 5-(a)
(स)- 1-(c) 2-(b) 3-(e) 4-(d) 5-(a) (द)- 1-(c) 2-(a) 3-(b) 4-(d) 5-(e)</td><td>1</td></tr>
<tr><td>घ</td><td>नीचे दिए गए कथन और उनके संभावित कारण का सही मिलान करें।
कथन: "अब त बेलि फैलि गई, आनंद-फल होयी"
कारण:
(अ) भक्त को अब भक्ति से कोई लगाव नहीं रहा।
(ब) भक्त सांसारिक सुख भोगने के लिए तत्पर है।
(स) भक्ति की परिपक्वता के परिणामस्वरूप आध्यात्मिक सुख प्राप्त हो रहा है।
(द) भक्त को अपनी भक्ति से दुख हो रहा है।</td><td>1</td></tr>
<tr><td>ड.</td><td>उपर्युक्त पद्यांश में “आणंद-फल होयी” इस पंक्ति में किस अलंकार का प्रयोग किया गया है ?
(अ) रूपक (ब) उपमा (स) उत्प्रेक्षा (द) मानवीकरण</td><td>1</td></tr>
<tr><td>7</td><td>निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए-</td><td>2X3=6</td></tr>
<tr><td>क</td><td>सबसे खतरनाक कविता में कवि की मूल स्थापना क्या है?</td><td>3</td></tr>
</table>

<table>
<tr><td>ख</td><td>अक्क महादेवी के अनुसार लक्ष्य प्राप्ति में इंद्रियां बाधक होती हैं - इसके संदर्भ में अपने तर्क दीजिए।</td><td>3</td></tr>
<tr><td>ग</td><td>आओ मिलकर बचाएं कविता के मूल भाव को आत्मसात् करते हुए बताइए कि आप अपने गाँव या शहर को किन-किन बुराइयों से बचाना चाहेंगे ?</td><td>3</td></tr>
<tr><td>8</td><td>निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए-</td><td>2X2=4</td></tr>
<tr><td>क</td><td>“यहाँ दरख्तों के साये में धूप लगती है” पंक्ति में दुष्यंत कुमार किस व्यंग्यार्थ को प्रतिपादित करना चाहता है?</td><td>2</td></tr>
<tr><td>ख</td><td>आपके विचार में चंपा ने ऐसा क्यों कहा होगा कि मैं तो नहीं पढ़ूंगी ?</td><td>2</td></tr>
<tr><td>ग</td><td>“जैसे बाढ़ी काष्ठ ही काटै अगिनी न काटे कोई | सब घटि अंतरि तूं ही व्यापक धरै सरूपै सोई ||” इसके आधार पर कबीर की दृष्टि में ईश्वर का स्वरूप स्पष्ट कीजिए |</td><td>2</td></tr>
<tr><td>9</td><td>निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए -</td><td>5x1=5</td></tr>
<tr><td></td><td>हँसुवे को लेकर वह घर से इस उद्देश्य से निकला था कि अपने खेतों के किनारे उग आई काँटेदार झाड़ियों को काट-छाँटकर साफ़ कर आएगा। बूढ़े वंशीधर जी के बूते का अब यह सब काम नहीं रहा। यही क्या, जन्म भर जिस पुरोहिताई के बूते पर उन्होंने घर-संसार चलाया था, वह भी अब वैसे कहाँ कर पाते हैं! यजमान लोग उनकी निष्ठा और संयम के कारण ही उन पर श्रद्धा रखते हैं लेकिन बुढ़ापे का जर्जर शरीर अब उतना कठिन श्रम और व्रत-उपवास नहीं झेल पाता।</td><td></td></tr>
<tr><td>क</td><td>बूढ़े वंशीधर जी के बारे में यह कथन कैसा है, "अब वह नहीं कर पाते"?
अ- उनका शारीरिक रूप से दुर्बल होने का संकेत है ब- उनके कार्य में असफल होने का संकेत है
स- यह उनकी मानसिक कमजोरी को दर्शाता है। द- यह उनके आलस्य को दर्शाता है।</td><td>1</td></tr>
<tr><td>ख</td><td>निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए।
कथन:- बूढ़े वंशीधर जी का शरीर अब उतना कठिन श्रम और व्रत-उपवास सहन नहीं कर पाता।
कारण:- बुढ़ापे के कारण उनकी शारीरिक क्षमता में कमी आ गई है।
अ. वंशीधर जी का शरीर पहले से ज्यादा स्वस्थ हो गया है।
ब. बुढ़ापे के कारण वंशीधर जी की शारीरिक क्षमता घट गई है।
स. वंशीधर जी अब अपने शरीर का ध्यान नहीं रखते।
द. वंशीधर जी ने श्रम करना छोड़ दिया है।</td><td>1</td></tr>
<tr><td>ग</td><td>गद्यांश में 'हँसुवे' का प्रयोग किस संदर्भ में किया गया है?
अ- एक प्रकार का पुराना शस्त्र ब- व्यक्ति की शारीरिक क्षमता का प्रतीक
स- एक उपकरण के रूप में जो कार्य में आता है द- घर में उपयोग होने वाला सामान्य सामान</td><td>1</td></tr>
<tr><td>घ</td><td>नीचे दिए गए कथन (कॉलम A) और उनके सही अर्थ या प्रतीकात्मक व्याख्या (कॉलम B) को मिलाएं।
<table>
<tr><th>कॉलम A (कथन)</th><th>(कॉलम B) प्रतीकात्मक व्याख्या</th></tr>
<tr><td>1. हँसुवा</td><td>(a) उत्तम आचार-व्यवहार एवं नैतिक गुण</td></tr>
<tr><td>2. बूढ़ा शरीर</td><td>(b) जीवन की आध्यात्मिक और सामाजिक जिम्मेदारी</td></tr>
<tr><td>3. पुरोहिताई का कार्य</td><td>(c) एक श्रम-साधक उपकरण</td></tr>
<tr><td>4. निष्ठा और संयम</td><td>(d) आत्म-प्रतिबद्धता</td></tr>
<tr><td>5. सम्मान और श्रद्धा</td><td>(e) शारीरिक सीमा</td></tr>
</table>
विकल्प-
(अ)- 1-(c) 2-(e) 3-(b) 4-(a) 5-(d) (ब)- 1-(c) 2-(e) 3-(b) 4-(d) 5-(a)
(स)- 1-(c) 2-(b) 3-(e) 4-(d) 5-(a) (द)- 1-(c) 2-(a) 3-(b) 4-(d) 5-(e)</td><td>1</td></tr>
<tr><td>ड.</td><td>गद्यांश में बूढ़े वंशीधर जी का मुख्य संघर्ष क्या है?
अ- परिवार की ज़िम्मेदारी निभाना ब- अपने खेतों की देखभाल करना
स- अपने बुढ़ापे के साथ शारीरिक श्रम करना द- पुरोहिताई का काम करना</td><td>1</td></tr>
</table>

10	निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर **किन्हीं दो** प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए-	**2X3=6**
क	यह कहना कहां तक युक्तिसंगत है कि 'जामुन का पेड़' कहानी में हास्य के साथ-साथ करुणा की भी अंतर्धारा है। अपने उत्तर के पक्ष में तर्क दें।	3
ख	'विदाई संभाषण में लेखक ने किसके प्रति अपना व्यंग्य व्यक्त किया है? यहाँ दो गायो की कथा के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है?	3
ग	'नमक का दारोग़ा' कहानी के आधार पर सामाजिक यथार्थ के बारे में अपने विचार तर्कयुक्त शब्दों में व्यक्त कीजिए।	3
11	निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर **किन्हीं दो** प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए-	**2X2=4**
क	स्त्री के चरित्र की बनी बनाई धारणा से रजनी का चेहरा किन मायनों में अलग है? अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए	2
ख	फिल्म के दौरान बारिश के दृश्य को फिल्माने में लेखक को किस प्रकार की कठिनाई का सामना करना पड़ा? अप्पू के साथ ढाई साल पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए|	2
ग	किसान सामान्यत: भारत माता का क्या अर्थ लेते थे और नेहरु जी की भारत माता के प्रति क्या धारणा थी ?	2
12	निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर **किन्हीं दो** प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में दीजिए-	**2x5=10**
क	लता ने करुण रस के गानों के साथ न्याय नहीं किया है ,जबकि शृंगारपरक गाने वे बड़ी उत्कटता से गाती हैं –इस कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं ? उदाहरण देकर समझाइए|	5
ख	राजस्थान में कुई किसे कहते हैं ? इनकी गहराई और व्यास तथा सामान्य कुओं की गहराई और व्यास में क्या अंतर है? विस्तार से स्पष्ट कीजिए		5
ग	आलो आँधारि' पाठ में समाज की किन-किन समस्याओं को उठाया गया है? तर्कसंगत व्याख्या कीजिए	5

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, जम्मू संभाग

आदर्श प्रश्नपत्र (2025-26)

कक्षा – ग्यारहवीं विषय - हिंदी

अंक-योजना

निर्धारित समय: 03 घंटे **अधिकतम अंक : 80 अंक**

सामान्य निर्देश:

- अंक योजना में दिए गए उत्तर कहीं-कहीं विस्तार से इसीलिए दिए गए हैं ताकि छात्र द्वारा लिखे गए उत्तर में इनमे से कतिपय आवश्यक अंश होने पर उसे यथोचित अंक प्रदान किया जा सके |
- दिए गए उत्तर संकेत मात्र हैं, अतः छात्र द्वारा लिखित उत्तर की भाषा में रचनात्मकता एवं स्वाभाविकता का पुट होने पर उदारतापूर्वक प्रोत्साहन किया जाना चाहिए |
- मूल्यांकन के दौरान छात्र के बोध, प्रयास और अभ्यास का समुचित ध्यान रखा जाना चाहिए|
- पत्र, रचनात्मक लेख आदि में निर्धारित मानदंडों एवं प्रारूप को पूर्ण महत्व देना चाहिए|

<table>
<tr><th>प्र.</th><th>खंड-क (अपठित बोध) अंक (18)</th><th></th></tr>
<tr><td>1.</td><td>निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-</td><td>(10)</td></tr>
<tr><td>क</td><td>स्टार्टअप संस्कृति, हरित ऊर्जा समाधान और स्मार्ट सिटीज किसका उदाहरण हैं?
उत्तर: (C) सामाजिक-आर्थिक नवाचार</td><td>1</td></tr>
<tr><td>ख</td><td>कॉलम A में दिए गए कथनों के अनुसार कॉलम B से सही मिलान कीजिए:
<table>
<tr><td>स्तंभ A (नवाचार के क्षेत्र)</td><td>स्तंभ B (संबंधित नवाचार)</td></tr>
<tr><td>1. स्वास्थ्य</td><td>(A) ब्लॉकचेन और डिजिटल भुगतान प्रणाली</td></tr>
<tr><td>2. संचार</td><td>(B) हरित ऊर्जा समाधान और स्मार्ट सिटीज</td></tr>
<tr><td>3. व्यापार</td><td>(C) रोबोटिक सर्जरी और टेलीमेडिसिन</td></tr>
<tr><td>4. शिक्षा</td><td>(D) 5G नेटवर्क और इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT)</td></tr>
<tr><td>5. पर्यावरण</td><td>(E) ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफॉर्म और VR तकनीक</td></tr>
</table>
उत्तर: द- 1 - (C) 2 - (D) 3 - (A) 4 - (E) 5 - (B)</td><td>1</td></tr>
<tr><td>ग</td><td>प्रश्नों में दिए गए दोनों कथन-कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर सही उत्तर का चयन करें:
कथन - पारंपरिक सोच और वित्तीय बाधाएँ नवाचार को धीमा कर सकती हैं।
कारण- नवाचार के लिए केवल वैज्ञानिक अनुसंधान आवश्यक होता है, सामाजिक समर्थन की कोई आवश्यकता नहीं होती।
उत्तर: अ- कथन सही है, लेकिन कारण गलत है।</td><td>1</td></tr>
<tr><td>घ</td><td>नवाचार (Innovation) का मुख्य उद्देश्य क्या है?
उत्तर: - मौजूदा प्रक्रियाओं, उत्पादों या सेवाओं को अधिक प्रभावी बनाना</td><td>1</td></tr>
<tr><td>ड.</td><td>कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और ब्लॉकचेन किस प्रकार नवाचार को बढ़ावा देते हैं?
उत्तर: कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) डेटा विश्लेषण, स्वचालन और निर्णय-निर्माण को सशक्त बनाती है, जबकि ब्लॉकचेन डेटा सुरक्षा और पारदर्शिता को सुनिश्चित करता है, जिससे व्यापार, वित्त और स्वास्थ्य क्षेत्रों में नवाचार को बढ़ावा मिलता है।</td><td>2</td></tr>
<tr><td>च</td><td>क्या सभी नवाचार समाज के लिए लाभकारी होते हैं? अथवा इसके नकारात्मक प्रभाव भी होते हैं? स्पष्ट कीजिए-
उत्तर:- नवाचार आमतौर पर समाज की उन्नति और सुविधा के लिए होता है, लेकिन यह हमेशा लाभकारी ही हो, ऐसा आवश्यक नहीं है। कुछ नवाचारों के सकारात्मक प्रभावों के साथ-साथ नकारात्मक प्रभाव भी होते हैं, जो समाज, पर्यावरण और व्यक्तिगत जीवन को प्रभावित कर सकते हैं।</td><td>2</td></tr>
</table>

	नवाचार के नकारात्मक प्रभाव- रोजगार पर प्रभाव, गोपनीयता और डेटा सुरक्षा की समस्या, सामाजिक असमानता, पर्यावरणीय क्षति, नैतिक एवं सामाजिक प्रभाव आदि	
छ	नवाचार को बढ़ावा देने के लिए कौन-कौन क्या-क्या योगदान दे रहे हैं? **उत्तर:- सरकारें** नवाचार को बढ़ावा देने के लिए स्टार्टअप योजनाएँ, नीति निर्माण और बुनियादी ढाँचे का विकास कर रही हैं। अनुसंधान एवं विकास (R&D) के लिए वित्तीय सहायता और अनुदान प्रदान कर रही हैं। विज्ञान और प्रौद्योगिकी में निवेश कर रही हैं और डिजिटल भारत जैसी योजनाएँ चला रही हैं। **कंपनियाँ एवं उद्योग** तकनीकी नवाचारों में निवेश कर उत्पादन और सेवाओं की गुणवत्ता सुधार रही हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), ब्लॉकचेन और ऑटोमेशन जैसी आधुनिक तकनीकों को अपना रही हैं। **सामाजिक संगठन और समुदाय -**नवाचार को सामाजिक विकास से जोड़ रहे हैं, जैसे हरित ऊर्जा समाधान और स्मार्ट सिटीज। समाज में नवाचारी सोच को बढ़ावा देने के लिए जागरूकता अभियान चला रहे हैं।	2
2	**दिए गए पद्यांश पर आधारित पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-**	**(08)**
क	'"अलसाई भोर में गुलाब मुस्काते" पंक्ति का क्या तात्पर्य है? **उत्तर: (B) सुबह के समय गुलाब खिले हुए प्रतीत होते हैं**	1
ख	"सरिता की लहरें मधुर गीत गातीं" – इस पंक्ति में किस अलंकार का प्रयोग हुआ है? **उत्तर: (D) मानवीकरण**	1
ग	कॉलम A में दिए गए कथनों को कॉलम B में दिए गए कारणों से मिलाएं: कॉलम A / कॉलम B 1. गुलाब की मुस्कान — (a) कवि का उजाला 2. चंद्र किरणें — (b) बसंत ऋतु का संगीत 3. मधुकर का गान — (c) भोर का सौंदर्य 4. सुरमई अम्बर — (d) बिखरी किरणों से चमकता है 5. प्रकृति का हर दृश्य — (e) झीलों पर सुधा-सा प्रकाश **उत्तर- ब - 1- (c) 2 - (e) 3 - (b) 4 - (d) 5 - (a)**	1
घ	"हर दृश्य है जैसे कवि का उजाला" – इस पंक्ति का गूढ़ अर्थ क्या है? **उत्तर: इस पंक्ति का अर्थ है कि प्रकृति के हर दृश्य में कवि को अपनी प्रेरणा, सृजन और आनंद का स्रोत दिखाई देता है।**	1
ड.	इस कविता में प्रकृति का चित्रण केवल बाहरी सौंदर्य तक सीमित है, या इसमें कोई दार्शनिकता भी छिपी है? **उत्तर: यह कविता केवल बाहरी सौंदर्य तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें एक गहरी दार्शनिकता छिपी है। प्रकृति हमें शांति, आनंद, प्रेम और नवजीवन का संदेश देती है।**	2
च	कवि ने प्रकृति के सौंदर्य को किन-किन तत्वों से सजाया है? **उत्तर: कवि ने प्रकृति के सौंदर्य को भोर, फूल, ओस, नदी, चाँदनी, झील, मधुकर, बसंत और सुरमई आकाश जैसे तत्वों से सजाया है।**	2
प्र.	**खंड-ख (अभिव्यक्ति और माध्यम पुस्तक पर आधारित प्रश्न) अंक (22)**	
3.	निम्नलिखित में से **किसी एक** विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए- क) मनमोहक दृश्य का जादू ख) मोबाइल बिन लागे सब सून' ग) परिश्रम का मीठा अहसास **प्रारम्भ- 01 अंक विस्तार -03 अंक भाषा - 02 अंक**	**6**
4.	आपका क्षेत्र दिनोंदिन दुराचार और ठगी का शिकार होता जा रहा है और प्रशासन कुंभकर्णी नींद में सोया है। जिला उपायुक्त का आकर्षित करवाते हुए किसी प्रतिष्ठित समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए। **अथवा** अपने मौहल्ले में वर्षा के कारण जल भराव से उत्पन्न हुई मौसमी बीमारियों की ओर ध्यान आकृष्ट करवाते हुए नगर-पालिका के स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखिए।	**5**

5 अ	निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर **किन्हीं चार** प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए- **4X2=8**	
क	संचार के क्या-क्या कार्य हैं उदाहरण के साथ समझाइए ? **उत्तर-** संचार का उद्देश्य और कार्य व्यक्ति, समूह, या संस्थाओं के बीच सूचना का आदान-प्रदान करना होता है। संचार का मुख्य कार्य यह है कि वह विचारों, जानकारी, भावनाओं और विचारधाराओं को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाए, ताकि लोग आपस में जुड़ सकें और एक-दूसरे को समझ सकें। संचार के प्रमुख कार्य निम्नलिखित हैं: **1. सूचना का आदान, 2. भावनाओं का साझा करना, 3. समस्या का समाधान, 4. सामाजिक संबंधों का निर्माण, 5. संदेश की स्पष्टता और समझ, 6. प्रेरणा देना, 7. शिक्षा और ज्ञान का प्रसार, 8. विवाद समाधान 9. प्रेरणा और जागरूकता**	2
ख	किसी घटना, विचार या समस्या के समाचार बनने हेतु कौन-कौन से तत्त्व महत्वपूर्ण होते हैं ? लिखिए | **उत्तर-** किसी घटना, विचार या समस्या के समाचार बनने के लिए निम्नलिखित तत्त्व महत्वपूर्ण होते हैं: 1. **महत्व 2. नवीनता 3. प्रभाव 4. दिलचस्पी और आकर्षण 5. संघर्ष 6. समीपता 7. प्रसिद्धि 8. संभावना 9. साक्ष्य|** घटना, विचार या समस्या के बारे में तथ्य और प्रमाण होना जरूरी होता है, ताकि वह विश्वसनीय और सटीक समाचार बन सके। प्रमाण और तथ्यों के बिना कोई भी समाचार अधूरा हो सकता है।	2
ग	डायरी एक व्यक्तिगत दस्तावेज़ है, कैसे ? **उत्तर-** डायरी एक व्यक्तिगत दस्तावेज़ है क्योंकि यह व्यक्ति के निजी विचारों, भावनाओं, अनुभवों, और घटनाओं का संग्रह होती है। यह किसी अन्य व्यक्ति से साझा किए बिना खुद के लिए लिखी जाती है।	2
घ	कार्यसूची की आवश्यकता कब और कहाँ होती है ? **उत्तर-** कार्यसूची (Agenda) एक दस्तावेज़ है, जो किसी बैठक या सम्मेलन में चर्चा किए जाने वाले विषयों और कार्यों का क्रमबद्ध विवरण प्रदान करता है। कार्यसूची की आवश्यकता सरकारी अथवा गैरसरकारी बैठकों में, समारोहों और आयोजनों में, कॉन्फ्रेंस और सेमिनार आदि में होती है|	2
ड.	उम्मीदवारों के चयन में स्ववृत्त की क्या भूमिका होती है ? **उत्तर-** स्ववृत्त उम्मीदवार के चयन प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह दस्तावेज़ उम्मीदवार की शैक्षिक योग्यताओं, अनुभव, कौशल, और अन्य विशेषताओं का संक्षिप्त विवरण प्रदान करता है, जो नियोक्ता को यह निर्णय लेने में मदद करता है कि उम्मीदवार योग्य है या नहीं।	2
5 ब	निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर **किसी एक** प्रश्न के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए-	**1X33**
	पटकथा के प्रमुख अंग कितने और कौन-कौन से होते हैं? **उत्तर-** पटकथा के प्रमुख अंग मुख्यतः चार होते हैं। ये हैं: **पात्र-** पटकथा का आधार पात्र होते हैं। ये वह व्यक्ति होते हैं, जो कहानी में भूमिका निभाते हैं और उनकी भावनाएँ, सोच, और क्रियाएँ कहानी के दिशा और विकास को प्रभावित करती हैं। **संवाद** संवाद पात्रों के बीच बातचीत होते हैं। यह कहानी को आगे बढ़ाने और पात्रों की मानसिकता, चरित्र और उनके आपसी संबंधों को दर्शाने का प्रमुख तरीका है। **कथा** कथा वह मुख्य कहानी होती है, जिस पर पटकथा आधारित होती है। इसमें घटनाओं का क्रम और घटनाओं के आपसी संबंधों का बारीकी से उल्लेख होता है। **वर्णन** इसमें फिल्म की दृश्यात्मक जानकारी दी जाती है, जैसे कि सेटिंग, वातावरण, पात्रों के आचरण, और अन्य भौतिक विवरण। यह निर्देशक को फिल्म के दृश्य को समझने और उत्पन्न करने में मदद करता है। **अथवा** निम्नलिखित शब्दों को शब्दकोश के अनुसार क्रम में लिखिए – **इच्छित, इक्षु, अनंग, अंग, अंत अकर्म** **उत्तर- अकर्म, अंग, अनंग, अंत, इक्षु इच्छित**	
प्र.	**खंड-ग (पाठ्यपुस्तक आरोह तथा वितान पर आधारित प्रश्न) अंक (40)**	
6	निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए-	**5**
क	**'छांडि दयी कुल की कानि' में कानि शब्द का अर्थ है?**	1

	उत्तर- **(द) मर्यादा**	
ख	**"अब त बेलि फैलि गई,आणंद-फल होयी" पंक्ति में किसकी प्राप्ति का संकेत है?** उत्तर- **(ब) आध्यात्मिक प्रेम के फलित होने की स्थिति**	1
ग	**नीचे दिए गए कॉलम A (कथन) को सही कॉलम B (अर्थ) से मिलाइए।** **उत्तर- (अ)- 1-(c) 2-(e) 3-(b) 4-(a) 5-(d)**	1

कॉलम A (कथन)	**कॉलम B (अर्थ)**
1. "जा के सिर मोर-मुकुट, मेरो पति सोई"	a. भक्त को सांसारिक कुल-मर्यादा का भय नहीं रहा
2. "संतन ढिग बैठी-बैठी, लोक-लाज खोयी"	b. भक्त ने प्रेम रूपी बेल को अपने आँसुओं से सींचा
3. "अंसुवन जल सींचि-सींचि, प्रेम बेलि बोयी"	c. भक्त श्रीकृष्ण को ही अपना पति मानती है
4. "छांडि दयी कुल की कानि, कहा करिहै कोई"	d. भक्त केवल श्रीकृष्ण को अपना सर्वस्व मानती है
5. "मेरे तो गिरिधर गोपाल, दूसरो न कोई"	e. भक्त ने समाज की परवाह छोड़ दी।

घ	नीचे दिए गए कथन और उनके संभावित कारणों का सही मिलान करें। **कथन: "अब त बेलि फैलि गई, आनंद-फल होयी"** **कारण:** **उत्तर- (स) भक्ति की परिपक्वता के परिणामस्वरूप आध्यात्मिक सुख प्राप्त हो रहा है।**	1
ड.	उपर्युक्त पद्यांश में "आणंद-फल होयी" इस पंक्ति में किस अलंकार का प्रयोग किया गया है ? **उत्तर- (अ)- रूपक**	1
7	निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर **किन्हीं दो** प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए- **2X3=6**	
क	सबसे खतरनाक कविता में कवि की मूल स्थापना क्या है? **उत्तर- कवि की मूल स्थापना:** कवि का मानना है कि जीवन में सबसे खतरनाक चीज़ मृत्यु, भूख, या यातना नहीं होती, बल्कि इंसान के भीतर जागरूकता और संवेदनशीलता का मर जाना होता है। कवि यह स्थापित करता है कि— न्याय के लिए लड़ने की इच्छाशक्ति का मर जाना सबसे खतरनाक है। अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति उदासीन होना सबसे खतरनाक है। अन्याय और शोषण को देखकर भी चुप रहना सबसे खतरनाक है। आँखों का सब कुछ देखकर भी न देख पाना, जुबान का सच न बोल पाना, और दिल का बिना किसी भावना के धड़कना सबसे खतरनाक है।	3
ख	**अक्क महादेवी के अनुसार लक्ष्य प्राप्ति में इंद्रियां बाधक होती हैं - इसके संदर्भ में अपने तर्क दीजिए।** **उत्तर-** अक्क महादेवी, भक्ति आंदोलन की महान संत कवयित्री थीं, जिन्होंने अपनी वचन रचनाओं में भक्ति, वैराग्य और आत्मज्ञान पर गहन विचार व्यक्त किए हैं। उनके अनुसार, ईश्वर प्राप्ति (परम लक्ष्य) में हमारी इंद्रियाँ सबसे बड़ी बाधा बनती हैं, क्योंकि वे हमें सांसारिक मोह-माया और भौतिक इच्छाओं में उलझाए रखती हैं। **तर्क:** 1. इंद्रियाँ हमें सांसारिक बंधनों में बाँधती हैं 2. वासना और इच्छाएँ आत्मा को भटकाती हैं 3. माया और अहंकार का जन्म इंद्रियों से होता है 4. आत्मज्ञान के लिए इंद्रियों पर नियंत्रण आवश्यक 5. भक्ति और साधना में इंद्रियाँ बाधक बनती हैं **ईश्वर-प्रेम और भक्ति में मन को एकाग्र रखना आवश्यक है, लेकिन हमारी इंद्रियाँ बार-बार भटकाव उत्पन्न करती हैं। आँखें आकर्षक चीजों की ओर जाती हैं, कान मधुर ध्वनियों की ओर, और अन्य इंद्रियाँ भी सांसारिक सुखों की ओर खींचती हैं। जब तक इनका संयम नहीं किया जाता, तब तक परमात्मा की अनुभूति संभव नहीं।**	3

ग	आओ मिलकर बचाएं कविता के मूल भाव को आत्मसात् करते हुए बताइए कि आप अपने गाँव या शहर को किन-किन बुराइयों से बचाना चाहेंगे ? **उत्तर-** 1. प्रदूषण 2. भ्रष्टाचार 3. अशिक्षा 4. असमानता और भेदभाव 5. अपराध और नशाखोरी 6. जल संरक्षण 7. सांप्रदायिकता 8. बेज़ुबान जीवों की रक्षा जानवरों पर अत्याचार को रोकना, उनके लिए उचित भोजन और पानी की व्यवस्था करना, और पर्यावरण को सुरक्षित रखना आदि	3
8	निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर **किन्हीं दो** प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए- **2X2=4**	
क	**"यहाँ दरख्तों के साये में धूप लगती है"** पंक्ति में दुष्यंत कुमार किस व्यंग्यार्थ को प्रतिपादित करना चाहता है? **उत्तर-** यह पंक्ति प्रतीकात्मक रूप से व्यवस्था की विफलता और समाज में व्याप्त अन्याय, शोषण और भ्रष्टाचार की ओर संकेत करती है। आमतौर पर, "दरख़्तों का साया" ठंडक और सुरक्षा का प्रतीक होता है, लेकिन यहाँ कवि कहता है कि "साये में भी धूप लगती है", अर्थात जहाँ शांति और राहत मिलनी चाहिए, वहीं तकलीफ और अन्याय मिलता है।	2
ख	**आपके विचार में चंपा ने ऐसा क्यों कहा होगा कि मैं तो नहीं पढ़ूंगी ?** **उत्तर-** चंपा के "मैं तो नहीं पढ़ूंगी" कहने के पीछे कई सामाजिक, पारिवारिक और मानसिक कारण हो सकते हैं। यह कथन एक गहरे संदर्भ और भावनात्मक पीड़ा को दर्शाता है, जो विशेष रूप से लड़कियों की शिक्षा, सामाजिक भेदभाव, गरीबी, पारिवारिक दबाव, और आत्मसम्मान से जुड़ा हो सकता है। **अन्य संभावित कारण:** 1. सामाजिक व पारिवारिक दबाव 2. आर्थिक कठिनाइयाँ 3. लिंगभेद व सामाजिक असमानता 4. स्कूल या शिक्षकों का व्यवहार 5. आत्मसम्मान और विद्रोह	2
ग	**"जैसे बाढ़ी काष्ठ ही काटै अगिनी न काटे कोई |** **सब घटि अंतरि तूं ही व्यापक धरै सरूपै सोई ||"** इसके आधार पर कबीर की दृष्टि में ईश्वर का स्वरूप स्पष्ट कीजिए | **उत्तर- "जैसे बाढ़ी काष्ठ ही काटै अगिनी न काटे कोई":** यह भाग एक उदाहरण देता है कि लकड़ी को आग द्वारा जलाया जाता है, लेकिन लकड़ी के भीतर ही वह आग छिपी हुई होती है। बाहर से आग लकड़ी को जलाती है, लेकिन असल में आग का रूप लकड़ी के भीतर से निकलकर उसका प्रभाव दिखाता है। इसका संकेत है कि ईश्वर सभी वस्तुओं में समाया हुआ है, लेकिन उसे बाहरी रूप से देखने पर वह किसी अन्य शक्ति द्वारा व्यक्त होता है। **"सब घटि अंतरि तूं ही व्यापक धरै सरूपै सोई":** इस पंक्ति का अर्थ है कि ईश्वर प्रत्येक जीव और वस्तु के भीतर हैं, और वही सब कुछ का रूप हैं। वह हर स्थान पर व्याप्त हैं, लेकिन उनका स्वरूप अदृश्य और व्यापक है। **कबीर की दृष्टि में ईश्वर का स्वरूप:** ईश्वर सर्वव्यापी हैं ईश्वर निराकार और निरंतर रूप में हैं ईश्वर को समझने के लिए अंतरात्मा की पहचान ईश्वर का एकमात्र अस्तित्व	2
9	निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए - **5**	
क	बूढ़े वंशीधर जी के बारे में यह कथन कैसा है, "अब वह नहीं कर पाते"? **उत्तर: अ. यह उनका शारीरिक रूप से दुर्बल होने का संकेत है।**	1
ख	निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए। **कथन:-** बूढ़े वंशीधर जी का शरीर अब उतना कठिन श्रम और व्रत-उपवास सहन नहीं कर पाता। **कारण:-** बुढ़ापे के कारण उनकी शारीरिक क्षमता में कमी आ गई है। **उत्तर: ब. बुढ़ापे के कारण वंशीधर जी की शारीरिक क्षमता घट गई है।**	1

<table>
<tr><td>ग</td><td>गद्यांश में 'हँसुवे' का प्रयोग किस संदर्भ में किया गया है?
उत्तर: स- एक उपकरण के रूप में जो कार्य में आता है</td><td>1</td></tr>
<tr><td>घ</td><td>नीचे दिए गए कथन (कॉलम A) और उनके सही अर्थ या प्रतीकात्मक व्याख्या (कॉलम B) को मिलाएं।
<table>
<tr><th>कॉलम A (कथन)</th><th>(कॉलम B) प्रतीकात्मक व्याख्या</th></tr>
<tr><td>1. हँसुवा</td><td>(a) उत्तम आचार-व्यवहार एवं नैतिक गुण</td></tr>
<tr><td>2. बूढ़ा शरीर</td><td>(b) जीवन की आध्यात्मिक और सामाजिक जिम्मेदारी</td></tr>
<tr><td>3. पुरोहिताई का कार्य</td><td>(c) एक श्रम-साधक उपकरण</td></tr>
<tr><td>4. निष्ठा और संयम</td><td>(d) आत्म-प्रतिबद्धता</td></tr>
<tr><td>5. सम्मान और श्रद्धा</td><td>(e) शारीरिक सीमा</td></tr>
</table>
उत्तर- (ब)- 1-(c) 2-(e) 3-(b) 4-(d) 5-(a)</td><td>1</td></tr>
<tr><td>ड.</td><td>गद्यांश में बूढ़े वंशीधर जी का मुख्य संघर्ष क्या है?
उत्तर- स- अपने बुढ़ापे के साथ शारीरिक श्रम करना</td><td>1</td></tr>
<tr><td>10</td><td colspan="2">निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए- 2X3=6</td></tr>
<tr><td>क</td><td>यह कहना कहां तक युक्तिसंगत है कि 'जामुन का पेड़' कहानी में हास्य के साथ-साथ करुणा की भी अंतर्धारा है। अपने उत्तर के पक्ष में तर्क दें।
उत्तर- 'जामुन का पेड़' कहानी में हास्य और करुणा का मिश्रण यह दर्शाता है कि जीवन में हास्य हमेशा हल्का और मनोरंजन का स्रोत नहीं होता। इसके पीछे गहरे मानविक अनुभव छिपे होते हैं। जब हमें किसी चीज़ का मजाक उड़ाते हैं, तो कभी-कभी वह केवल एक सतही दृष्टिकोण होता है, लेकिन भीतर की कहानी करुणा और दर्द से भरी हो सकती है। इस प्रकार, इस कहानी में हास्य के साथ करुणा की अंतर्धारा की उपस्थिति पूरी तरह से युक्तिसंगत है।
हास्य का पहलू:
1. कहानी में हास्यपूर्ण घटनाएँ: कहानी में पात्रों का व्यवहार और संवाद हास्य से भरपूर होते हैं। मुख्य पात्र का जामुन के पेड़ को लेकर विचार और उसके साथ की घटनाएँ हंसी पैदा करती हैं। वह पेड़ जो शुरू में एक साधारण और उपयोगी पेड़ के रूप में दिखाया जाता है, धीरे-धीरे एक हास्यपूर्ण प्रतीक बन जाता है।
2. समाज के प्रति व्यंग्य: लेखक ने समाज की स्थिति पर व्यंग्य करते हुए हास्य का प्रयोग किया है। लोगों के भव्य दृष्टिकोण और छोटी-छोटी बातों पर ध्यान देने की प्रवृत्ति पर नज़र डालते हुए हास्य की रचनात्मकता दिखाई है।
करुणा का पहलू:
☐ मानव संवेदनाएँ: कहानी के अंत में, हास्यपूर्ण दृश्य जो हंसी के रूप में नजर आते हैं, वह अचानक करुणा में बदल जाते हैं। जब पेड़ की स्थिति गंभीर हो जाती है और लोगों की उपेक्षा सामने आती है, तो यह एक करुणापूर्ण स्थिति उत्पन्न होती है।
☐ सामाजिक उपेक्षा: जामुन का पेड़ जो पहले फल देने वाला और उपयोगी प्रतीत होता था, अब उपेक्षित और बेरंग होता है। यह समाज में उन व्यक्तियों और वस्तुओं के प्रतीक के रूप में उभरता है, जो समय के साथ उपेक्षित हो जाते हैं। यह समाज में अकेलेपन और असहमति की भावना को उत्पन्न करता है, जिससे करुणा उत्पन्न होती है।
☐ जीवन की कठोर वास्तविकताएँ: कहानी में हास्य और करुणा का मेल यह दिखाता है कि जीवन में कितनी बार हास्य के पीछे एक गहरी पीड़ा या करुणा छिपी होती है। जामुन का पेड़ अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रहा होता है, और जब उसे कोई नहीं देखता या समझता, तो वह करुणा की ओर मुड़ जाता है।</td><td>3</td></tr>
<tr><td>ख</td><td>‘विदाई संभाषण में लेखक ने किसके प्रति अपना व्यंग्य व्यक्त किया है? यहाँ दो गायो की कथा के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है?
उत्तर- ‘विदाई संभाषण’ में लेखक ने समाज की नपुंसकता, असंवेदनशीलता, और स्वार्थी प्रवृत्तियों के प्रति व्यंग्य व्यक्त किया है। इस लेख में विदाई के अवसर पर जो औपचारिकता और निंदा की जाती है, उसमें लेखक ने सामाजिक आस्थाओं और तथाकथित सभ्यताओं पर तीखा व्यंग्य किया है।
दो गायों की कथा के माध्यम से लेखक जो संदेश देना चाहते हैं, वह यह है कि समाज में कई बार वास्तविकता और दिखावा अलग होते हैं। गायों की कथा में एक गाय अपने समय के अनुसार काम करती है और सच्चे उद्देश्य के लिए काम करती है, जबकि दूसरी गाय सिर्फ दिखावे और बाहरी लक्ष्यों के लिए काम करती है। यह कथा इस बात को सामने लाती है कि एक</td><td>3</td></tr>
</table>

	प्राणी जो अपने नैतिक कर्तव्यों को सही तरीके से निभा रहा है, उसे नजरअंदाज किया जाता है, जबकि वह जो झूठे आडंबरों में लिपटा होता है, उसे समाज का सम्मान मिलता है। **कथानक के माध्यम से व्यंग्य**: 1. **समाज का दिखावा**: लेखक ने यह दिखाया है कि कैसे समाज में दिखावे के लिए कुछ काम किए जाते हैं, जबकि सच्चे कार्यों को नजरअंदाज किया जाता है। 2. **आधुनिकता और खोखलापन**: गायों की कथा यह भी दिखाती है कि आजकल के समाज में कितनी बार खोखला दिखावा किया जाता है, और वास्तविक मूल्य और आस्थाएँ पीछे रह जाती हैं। 3. **कर्म का महत्व**: लेखक ने इस कथा के माध्यम से यह बताने की कोशिश की कि किसी भी कार्य का मूल्य उसके उद्देश्य और ईमानदारी पर आधारित होना चाहिए, न कि केवल दिखावे और उपेक्षा पर।	
ग	'नमक का दारोग़ा' कहानी के आधार पर सामाजिक यथार्थ के बारे में अपने विचार तर्कयुक्त शब्दों में व्यक्त कीजिए। उत्तर- **नमक का दारोग़ा'** कहानी के माध्यम से **सामाजिक यथार्थ** की जो सटीक और तीखी झलक दिखाई गई है, वह समाज के भिन्न-भिन्न वर्गों, उनके कर्तव्यों, और उनके आंतरिक संघर्षों को उजागर करती है। कहानी के मुख्य पात्र, **नमक के दारोग़ा**, का चरित्र और उसकी स्थिति समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, दोहरे मानक, और निष्ठा की वास्तविकता को चित्रित करता है। **सामाजिक यथार्थ की परतें:** 1. **भ्रष्टाचार और दोहरे मानक:** कहानी में **नमक का दारोग़ा** अपनी निष्ठा और ईमानदारी के साथ काम करता है, लेकिन उसे समाज और प्रशासन में व्याप्त भ्रष्टाचार का सामना करना पड़ता है। उसे अपने कार्यों के लिए चुनौती मिलती है, क्योंकि उसे अपनी जिम्मेदारी निभाने के बावजूद न सिर्फ खुद ही परेशानी झेलनी पड़ती है, बल्कि उसकी मेहनत का कोई मूल्य नहीं होता। यह स्थिति समाज में व्याप्त **दोहरे मानक** और **भ्रष्ट शासन** की ओर इशारा करती है, जहां सच्चे कर्मों और ईमानदारी को हमेशा कमजोर और नकारा जाता है। 2. **सामाजिक कर्तव्य और व्यक्तिगत संघर्ष:** दारोग़ा का संघर्ष सिर्फ अपने कर्तव्यों को निभाने का नहीं, बल्कि अपनी व्यक्तिगत जिंदगी और समाज से मिल रही उपेक्षा के बीच संतुलन बनाने का भी है। समाज के लोग **सत्ताधारी वर्ग** के अनुशासन और **कठिनाई** को नजरअंदाज करते हुए अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए भ्रष्टाचार और गलत तरीके अपनाते हैं। यह दिखाता है कि समाज में न्याय और मर्यादा केवल **सशक्त वर्ग** के लिए ही हैं, जबकि आम व्यक्ति की मेहनत और निष्ठा को न तो मान्यता मिलती है, और न ही उसे उचित सम्मान। 3. **गरीबी और असमानता:** कहानी में दारोग़ा की स्थिति यह भी बताती है कि समाज में आर्थिक असमानताएं और **गरीबी** कितनी गहरे तक व्यक्ति को प्रभावित करती हैं। वह जिन परिस्थितियों में काम करता है, वह न तो उसकी आत्म-सम्मान के अनुकूल है और न ही समाज के कर्तव्यों को सही तरीके से निभा पाने की स्थिति प्रदान करता है। यहां यह सवाल उठता है कि क्या **सामाजिक व्यवस्था** गरीब और आम आदमी के लिए समान अवसर प्रदान करती है? 4. **समाज में आदर्श और वास्तविकता का अंतर:** इस कहानी में **आदर्श और वास्तविकता के बीच का अंतर** दिखाई देता है। दारोग़ा आदर्शों का पालन करता है, लेकिन उसे अपनी मेहनत का फल नहीं मिलता। इस तरह समाज में आदर्श और उसकी सच्चाई के बीच बड़ी खाई दिखाई देती है। यह स्थिति समाज के उन भ्रामक सिद्धांतों की ओर इशारा करती है, जो केवल दिखावे के रूप में होते हैं, जबकि समाज में वास्तविकता बहुत अलग होती है।	3
11	निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर **किन्हीं दो** प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए- **2X2=4**	
क	स्त्री के चरित्र की बनी बनाई धारणा से रजनी का चेहरा किन मायनों में अलग है? अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए **उत्तर-** रजनी का चेहरा स्त्री के चरित्र के बारे में बनी-बनाई धारणा से अलग इसलिए है क्योंकि वह पारंपरिक और सीमित विचारधाराओं से बाहर जाकर अपने जीवन का मार्ग खुद चुनती है। समाज में स्त्री के बारे में जो पूर्वधारणा होती है, वह अक्सर उसे एक निश्चित ढांचे में बांध देती है, जिसमें स्त्री को केवल नम्र, संवेदनशील, त्याग करने वाली, और परिवार के प्रति समर्पित माना जाता है। लेकिन रजनी इन धारणाओं से अलग एक स्वतंत्र, सशक्त और आत्मनिर्भर स्त्री के रूप में सामने आती है।	2

	रजनी के चरित्र का भिन्न पहलू: स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता: साहस और प्रगति की ओर अग्रसर: आत्म-मूल्य और आत्मसम्मान: सामाजिक परंपराओं से विद्रोह:	
ख	फिल्म के दौरान बारिश के दृश्य को फिल्माने में लेखक को किस प्रकार की कठिनाई का सामना करना पड़ा? अप्पू के साथ ढाई साल पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए| **उत्तर- कठिनाइयाँ और उनका समाधान:** **प्राकृतिक बारिश पर निर्भरता:** बारिश के दृश्य फिल्माने में सबसे बड़ी कठिनाई यह थी कि लेखक को वास्तविक बारिश पर पूरी तरह से निर्भर रहना पड़ा था। प्राकृतिक बारिश अनियंत्रित होती है और इसके दौरान दृश्य को नियंत्रित करना चुनौतीपूर्ण था। बारिश के दृश्य को फिल्माते समय उसे समय पर फिल्मांकन के लिए सही मौसम का इंतजार करना पड़ा और वह जरूरी था कि दृश्य की वास्तविकता बनी रहे। **फिल्मांकन के दौरान समय की समस्या:** बारिश का दृश्य फिल्माने के लिए सही समय और रोशनी की जरूरत होती है। इस दौरान यह ध्यान रखना जरूरी था कि दृश्य के दौरान प्रकाश की स्थिति कैसी हो, ताकि फिल्म की गुणवत्ता और अभिनय की भावनाएँ सही तरीके से दर्शक तक पहुँचें। **कलात्मक नियंत्रण:** वास्तविक बारिश में सही मूड और भावनाओं को कैप्चर करना मुश्किल होता है, क्योंकि बारिश के दृश्य में कभी-कभी वातावरण बहुत गहरा और उदासीन हो सकता है, जो फिल्म के सकारात्मक या हल्के पल से मेल नहीं खाता। इसलिए लेखक को दृश्य के मूड को नियंत्रित करने में कठिनाई होती थी। **तकनीकी जटिलताएँ:** बारिश को फिल्माने के लिए विशेष तकनीकी तैयारी की जरूरत होती है। बारिश के प्रभाव को प्रभावी रूप से फिल्म में दिखाने के लिए सही कैमरा एंगल्स, वॉटरप्रूफ उपकरण, और अन्य तकनीकी उपकरणों का उपयोग किया गया था, जो एक चुनौतीपूर्ण कार्य था। इन सभी प्रयासों को एक साथ जोड़ने के लिए अत्यधिक मेहनत और तकनीकी कौशल की आवश्यकता थी।	2
ग	किसान सामान्यत: भारत माता का क्या अर्थ लेते थे और नेहरु जी की भारत माता के प्रति क्या धारणा थी ? **उत्तर-** किसान के लिए भारत माता एक जीवित, सजीव शक्ति थी, जो उनकी कृषि और श्रम से जुड़ी थी, जबकि नेहरू जी के लिए भारत माता एक राष्ट्रीय और सांस्कृतिक प्रतीक थी, जो भारत की आज़ादी, एकता और सामाजिक सुधार की प्रेरणा देती थी। दोनों दृष्टिकोणों में भारत माता का सम्मान था, लेकिन उनके लिए इसका अर्थ अलग-अलग पहलुओं से जुड़ा था- एक तरफ आध्यात्मिक और श्रमिक, और दूसरी तरफ राष्ट्रीय और आधुनिक।	2
12	निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर **किन्हीं दो** प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में दीजिए- **2x5=10**	
क	लता ने करुण रस के गानों के साथ न्याय नहीं किया है ,जबकि शृंगार परक गाने वे बड़ी उत्कटता से गाती हैं –इस कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं ? उदाहरण देकर समझाइए| **उत्तर- लता मंगेशकर और करुण रस:** लता मंगेशकर का स्वर और गायन शैली वास्तव में विविधतापूर्ण है, और उन्होंने विभिन्न प्रकार के गीतों को बड़ी कुशलता से गाया है। करुण रस (दुःख, विषाद और गहरे दर्द के गीतों) में भी उनका योगदान उल्लेखनीय है। लता ने कई ऐसे गीत गाए हैं, जो दुख, अकेलापन, या विषाद को व्यक्त करते हैं, जैसे कि "बावरे नैना", "तेरा मुझे फिर भी प्यार है", "नैनों में बदरा", "माँ के आंचल में" आदि। इन गीतों में लता की आवाज़ ने करुण रस को व्यक्त करने की पूरी कोशिश की है और श्रोताओं के दिलों को छुआ है। हालांकि, कुछ आलोचकों का यह मानना है कि लता ने करुण रस के कुछ गीतों को उतनी गहरी भावनात्मकता और गंभीरता से नहीं गाया जितना उन्हें गाना चाहिए था। कभी-कभी उनकी आवाज़ में वह गहरी, विषादपूर्ण ममता या दुःख नहीं दिखता, जो इस रस की सबसे बड़ी पहचान होती है। इसके पीछे का कारण यह हो सकता है कि लता का गायन स्वाभाविक रूप से स्वीट और मधुर होता है, जो करुण रस के कुछ गहरे पहलुओं को व्यक्त करने में थोड़ी बाधा डाल सकता है। लेकिन यह भी सच है कि लता के गायन में करुणा की अपनी विशेष शैली है, जो बहुतों को प्रभावित करती है। **लता और शृंगार रस:** जहां तक शृंगार रस (प्रेम और सौंदर्य पर आधारित गीतों) का सवाल है, लता ने इसे बहुत ही उत्तेजना और उत्कटता से गाया है। उनके द्वारा गाए गए प्रेम गीतों में उनकी आवाज़ में गहराई और आकर्षण होता है। उदाहरण के तौर पर, "प्यारे प्यारे प्यारे", "ये शाम मस्तानी", "मेरे सपनों की रानी" और "आएगा आने वाला" जैसी बहुत सी शृंगार रस से जुड़े गाने हैं, जो लता ने	5

	अत्यधिक भावपूर्ण और उत्कटता से गाए हैं। इन गीतों में लता ने प्रेम, आकर्षण और दिलों की भावनाओं को बेहद खूबसूरती से पेश किया है। **सहमत या असहमत?** अगर हम इस कथन पर विचार करें कि लता ने करुण रस के गानों के साथ न्याय नहीं किया है, तो यह विचार आंशिक रूप से सही हो सकता है, लेकिन इसे पूरी तरह से सही नहीं कहा जा सकता। लता मंगेशकर ने अपनी आवाज़ और गायन शैली से करुण रस में भी अद्भुत प्रभाव छोड़ा है, हालांकि कभी-कभी उनकी आवाज़ में वह गहरा दर्द और विषाद उतनी मजबूती से नहीं आ पाता, जितना इस रस में आवश्यक होता है। लेकिन, उनकी गायन शैली की अपनी एक अनूठी विशेषता है, जो सुनने वाले को अपनी ओर आकर्षित करती है। शृंगार रस के गीतों में लता पूरी तरह से उत्कटता और भावनात्मक गहराई से गाती हैं, जो उनकी आवाज़ की सबसे बड़ी खूबसूरती है।	
ख	राजस्थान में कुईं किसे कहते हैं ? इनकी गहराई और व्यास तथा सामान्य कुओं की गहराई और व्यास में क्या अंतर है? विस्तार से स्पष्ट कीजिए। **उत्तर-** कुईं राजस्थान और कुछ अन्य भारतीय क्षेत्रों में एक विशेष प्रकार का जलाशय या कुएं होता है, जिसे नदी, नहर या जलस्रोत से पानी प्राप्त करने के लिए खोदा जाता है। राजस्थान में यह विशेष रूप से रेगिस्तानी इलाकों में बहुत आम है, जहाँ पानी की अत्यधिक कमी होती है और लोग भूमिगत जल तक पहुँचने के लिए इस प्रकार के कुओं का उपयोग करते हैं। कुईं को आमतौर पर एक गहरी और चौड़ी खाई की तरह समझा जा सकता है, जिसे स्थानीय जलवायु और जलस्रोत की स्थिति के आधार पर खुदा जाता है। इन कुओं का निर्माण खासतौर पर पानी की गहराई और स्रोत को ध्यान में रखते हुए किया जाता है ताकि पानी को लंबे समय तक संगृहीत किया जा सके। **कुईं और सामान्य कुओं में अंतर:** **गहराई** **कुईं-** कुईं की गहराई सामान्यत: बहुत अधिक होती है, क्योंकि राजस्थान जैसे रेगिस्तानी इलाकों में पानी की अधिकतम उपलब्धता भूमि के गहरे हिस्सों में होती है। इन कुओं को भूमि की गहराई तक पहुंचने के लिए खोदा जाता है। सामान्यत: इनकी गहराई 40 से 100 फीट तक हो सकती है, लेकिन कुछ स्थानों पर इससे भी गहरी हो सकती है। **सामान्य कुएं-** सामान्य कुएं की गहराई उतनी अधिक नहीं होती, यह आमतौर पर 20 से 40 फीट के बीच होती है, क्योंकि इन्हें भूमिगत जल के करीब पहुँचने के लिए खोदा जाता है। **व्यास** **कुईं** - कुईं का व्यास सामान्यत: काफी बड़ा होता है, ताकि ज्यादा से ज्यादा पानी को एकत्र किया जा सके। यह आमतौर पर 5 से 15 फीट तक चौड़ा होता है, और कभी-कभी इससे भी अधिक हो सकता है। इसका उद्देश्य पानी को अधिक समय तक संचित रखना और उपयोग के लिए उपलब्ध कराना होता है। **सामान्य कुएं**- सामान्य कुएं का व्यास थोड़ा कम होता है, जो आमतौर पर 3 से 5 फीट के बीच होता है। इनका आकार सीमित होता है, क्योंकि इनका उद्देश्य सिर्फ भूमिगत जल के स्रोत को बाहर लाना और उसे इकट्ठा करना होता है। **निर्माण प्रक्रिया और उद्देश्य:** **कुईं-** कुईं एक प्रकार की बड़ी जलाशय या जल संचयन व्यवस्था है, जिसे भंडारण के लिए ज्यादा पानी जमा करने के उद्देश्य से बनाया जाता है। इनका उपयोग वर्षा के समय में पानी को इकट्ठा करने और उसे लंबे समय तक संचित रखने के लिए किया जाता है। यह विशेष रूप से उन क्षेत्रों में प्रचलित है जहां पानी की किल्लत होती है और जलस्रोतों की आपूर्ति सीमित होती है। **सामान्य कुएं -**सामान्य कुएं को जल निकासी के लिए ज्यादा खुदा जाता है, और इनका उद्देश्य अधिकतर पीने के पानी और कृषि कार्यों के लिए जल प्राप्त करना होता है। इनका आकार छोटे होते हैं और अधिकतर स्थानीय जरूरतों को पूरा करने के लिए बनाए जाते हैं। **जल संचयन और कार्यक्षमता:** **कुईं-** कुईं की कार्यक्षमता बहुत अधिक होती है, क्योंकि यह पानी का भंडारण करने की अधिक क्षमता रखता है। इनका उपयोग वर्षभर पानी की आपूर्ति करने के लिए किया जाता है, और इन्हें नदियों, नहरों, या जलस्रोतों से जोड़ा जाता है ताकि पानी का स्तर स्थिर रहे।	5

	सामान्य कुएं - सामान्य कुएं में पानी का भंडारण सीमित होता है और इनका उपयोग मुख्य रूप से स्थानीय जल आपूर्ति के लिए किया जाता है, जिनमें पानी का स्तर बहुत जल्दी घट सकता है, विशेष रूप से शुष्क मौसम में।	
ग	"आलो आँधारि' बेबी हालदार के इस पाठ में समाज की किन-किन समस्याओं को उठाया गया है? तर्कसंगत व्याख्या कीजिए | उत्तर- **समाज की समस्याएँ और उनके संकेत:** **अंधकारमय और भ्रामक समाज:** शीर्षक ही **"आलो आँधारि" (अँधेरे का उजाला)** समाज की दोहरी स्थिति को दर्शाता है। यहाँ अंधेरा अज्ञानता, भ्रष्टाचार, और नकारात्मकता का प्रतीक है, जबकि आलो (रोशनी) ज्ञान, सत्य, और सकारात्मकता का प्रतीक है। बेबी हालदार की आत्मकथा 'आलो आँधारि' में समाज की कई समस्याओं को उठाया गया है. इनमें से कुछ **प्रमुख समस्याएँ** समाज में महिलाओं की स्थिति नौकरों की आर्थिक तंगी रिश्तों में स्वार्थ मुसीबत के समय किसी का साथ न मिलना विवाहित महिलाओं के साथ होने वाला व्यवहार गरीबी और कठिनाई हिंसा **'आलो आँधारि' में बेबी की व्यक्तिगत समस्याओं के बारे में भी बताया गया है. इनमें से कुछ प्रमुख समस्याएं ये हैं** बेबी के बच्चों का भविष्य, खाने-पीने और रहने की समस्या, एकाकीपन का अहसास, बेबी हालदार एक घरेलू कामगार थीं। उन्होंने गरीबी, कठिनाई, और हिंसा से संघर्ष किया और लेखिका के रूप में अपनी पहचान बनाई।	5